कोशल—बाल्मीकि रामायण के अनुसार सरयू या घाघरा के दोनों तट पर का भूभाग। यह दो हिस्सों में बटा हुआ था उत्तर और दक्षिण कोशल। अयोध्या के उत्तर गोंड़ा बहरायच आदि ज़िले इसी में थे। अज और उनके पूर्व पुरुष यहीं राज करते थे पीछे अयोध्या राजधानी हुई। उत्तर कोशल के बारे में कालिदास ने रघुवंश में यों लिखा है। पितुरनन्तरमुत्तरकोशलान्समधिगम्य समाधिजितेन्द्रियः। दशरथः प्रशशास महारथो यमवतामवतां च धुरिस्थितः॥ महाभारत में पूर्व और पश्चिम कोशल भी लिखा है। वायु पुराण और पद्मपुराण के पाताल खण्ड में लिखा है कि रामचन्द्र के पुत्र कुशस्थली या कुशावती में जो विन्ध्य पर्वत की चोटी पर थी राज करते थे। कुश का अयोध्या में फिर लौट आना रघुवंश से भी प्रकट होता है। रामचन्द्र तक सूर्यवंशी सगर आदि राजाओं की राजधानी अयोध्या रही। उसके उजड़ जाने पर कुश ने अपने नाम की नगरी बसाया। लव ने गङ्गा तट पर श्रावस्ती को अपनी राजधानी उत्तर कोशल में बसाया। तब से कोशल दो हिस्सों में बट गया। पुराणों में सात जगह ऐसी हैं जिनका कोशल नाम दिया है। छत्तीस गढ़ में रतनपुर के पास गड़ा हुआ एक ताम्र पत्र मिला है जिसमें लिखा है कि पृथ्वी देव मल्ल कोशलेश्वर ने सम्वत् ९१५ में मन्दिर बनवाये तालाब खुदवाये। इससे जाना जाता है गङ्गा के पार दक्षिण तक कोशलदेश था। टालमी ने भी अपनी पुस्तक में एक जगह कोशल का नाम लिखा है वह भी इन्हीं सात कोशल में कोई एक रहा होगा।

कौशाम्बी—प्रयाग से ३० मील पश्चिम पपोसा के नाम से प्रसिद्ध है जो अब एक छोटा सा ग्राम है और जैनियों का एक तीर्थ है। प्राचीन समय वत्सराज की यह राजधानी थी कथासरित्सागर और रत्नावली नाटिका में इस का बहुत बड़ा वर्णन है। वत्सराज परीक्षित के वंश के राजा थे।

कौशिकी—अब इसे कुसी कहते हैं जो दरभंगा के पूर्व भागलपूर के उत्तरी हिस्से और पूर्निया ज़िला के पश्चिमी हिस्सों में बहती हुई गङ्गा में जा मिली है। ऋष्यशृङ्ग का आश्रम इसी नदी के तट पर था।

गण्डकी—कई शाखों में बंट हाजीपूर के पास गङ्गा में जा मिलती है। इस में हिन्दू धर्म के अनुसार तैरना मने है हिरण्यगर्भ शालग्रम इसी में मिलते हैं।

गोमती—लखनऊ और जवनपूर आदि कई शहरों के पास होती हुई सई आदि कई एक नदियों को अपने में मिलाती बनारस और गाज़ीपूर के बीच गङ्गा में जा मिली है। इसी नाम की कोई नदी द्वारिका के पास भी है। गोमती चक्र इसी में से निकलते हैं।

गोमन्त—कोंकण देश का एक भाग। यह देश वहीं पर मालूम होता है जहां पर अब गोआ है।

गोवर्द्धन—ब्रजभूमि का प्रसिद्ध पर्वत।

गौड़ या पुन्ड्र—बंगाल का उत्तरी हिस्सा—भागल पूर के पास गौड़ नाम का एक नगर किसी समय बसता था। उजड़े छिये वहां अब तक पाये जाते हैं। गौड़ जाति के ब्राह्मण कदाचित् इसी से सम्बन्ध रखते हों।

गान्धार—कन्दहार के चारों ओर का देश किसी समय काबुल भी इसी में शामिल था। गान्धारी यहीं की थी। शेष

॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

देखिये दो बालिकायें इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा. यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगो में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये। मंगाने का पता—

क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा

REGD. No. A. 308.

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जिल्द ३० | अगस्त १९०७ | संख्या ८

विषय सूची।

पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक

के आज्ञानुसार पं० केदारनाथ मिश्र ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

श्रीः ॥

हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ सं० ८ | प्रयाग | अगस्त सन् १९०७ ई०

गोरे कर्मचारी और हमारे अगुआ।

इस समय जो कुछ हलचल मचा है और यहां के Political atmsophere राजनैतिक वायु मण्डल में जो अदल बदल होने के लिये हमारे अगुआ Leader सिर उठाये हुये हैं उस सब का कारण दोनों में परस्पर की स्पर्द्धा है। इस समय हमारे हाकिमों को अपना Prestige रोब क़ायम रखने की बड़ी फ़िकिर है। वे इसके लिये अपने भर सक सब२ कोशिसें कर रहे हैं। हाल में मारली साहब ने अपनी एक स्पीच में कहा भी है कि हमारे हाकिमों का अब वैसा रोब न रहा जैसा रहना चाहिये। इस से उनके हाथ में अब अधिक सत्ता Power देनी चाहिये जिस से उनका रोब बना रहे और उनके शासन के दोषों को कोई Criticise दूषित न कर सके। यहां पर यह प्रश्न उठता है कि वे लोग जिह तरह पर शासन कर रहे हैं उस से उनका रोब रह सक्ता है? लोक मत Public opinion क्या है इस बात को सरकार से निवेदन करने वालों को जलावतन या उन्हें क़ैद कर देने से क्या उनका रोब जम सकता है? मिस्टर मारली को यह कौन समझावे कि हाकिमों को यह मालूम है कि ऐसा करने से उनका रोब दिन पर दिन घटता जारहा है; इससे तो जो कुछ रोब है वह भी चला जायगा।

हमारे हाकिमों की पालिसी पहले कुछ और ही थी । तब वे इस तरह पर नहीं खुल खेले थे; कभी को किसी बात में अपने मन की भी कर डालते थे तो लोक मत Public opinion का इस तरह निरादर नहीं करते थे जैसा अब कर रहे हैं । इसी से उनका रोब भी तब सब लोग मानते थे । बीसवीं सदी के लगतेही उनकी पालिसी बिल्कुल बदल गई । उसी बदली हुई पालिसी के जोश में आय उन्हों ने बंगाल के दो टुकड़े कर डाले । सर्व साधारण मे इस का बड़ा हलचल मचा पर इसकी परवाह हमारे हाकिमों ने कुछ न की । हमारे अगुआओं को यह बात बहुत बुरी लगी जिसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तान की राजनैतिक बातों के दो दल हो गये । एक दल गोरे हाकिमों का, दूसरा दल प्रजा के अगुआओं का । हाकिमों को सर्कार की ओर से सब तरह की ताक़त हासिल है बल्कि उनके बहुत से इख़्तियार बढ़ा दिये गये हैं जिस के द्वारा इन अगुआओं पर मनमाना सख़्ती गोरे हाकिम कर सक्ते हैं । लोक मत Public opinion की अवज्ञा से सब लोग चिढ़ गये हैं और उनके शासन की कड़ाई से इतना ऊबे हुये हैं कि अहर्निश इसी चिंता में लगे हुये हैं कि कैसे उनकी हुकूमत का क्रम बदलें और कैसे हमको शासन में अधिकार मिले । पर सब भांत इतने हीन दीन हैं कि उनका कुछ बश नहीं चलता । यद्यपि अगुआओं के अनुयायी होने और उनके कहे अनुसार चलने से सब तरह का भय है, गवर्नमेंट की कड़ी निगाह का होना सब से बड़ी बुराई उनके लिये है तौ भी सर्व साधारण गोरे कर्मचारियों के प्रभुत्व को जी से नहीं पसन्द करते; न गवर्नमेंट की प्रसन्नता का लाभ उठाना बहुतेरों को मंजूर है । पग २ में भय और शंका पैदा करने वाली इन अगुआओं की पैरवी और उनके कहे अनुसार चलना वे मंजूर करते हैं । जब तक हाकिम और कौम के अगुओं की राय से सब काम होता था और लोक मत की परवाह हमारे गोरे कर्मचारी करते थे तब तक प्रजा में असन्तोष न था, अगुआ लोग भी कर्मचारी से मिले रहते थे दोनों में स्पर्द्धा भी न थी । अब इस समय कर्मचारी और अगुआओं में होड़ लग रही है । कर्मचारी तो यह चाहते हैं कि पढ़े लिखे

सभ्यों में भी पालिटिक्स की चर्चा न रहे और अगुआ लोग इस फ़िकिर में हैं कि छोटे२ किसान बाज़ार के अपढ़ दूकानदार और मज़दूरी करने वाले कुली तक राजनीति के मर्म को समझने लगें और उसमें अपनी राय भिड़ाया करें। यह प्रयत्न हमारे अगुओं का निःसन्देह बड़ा उत्तम और सराहने योग्य है। देश की वर्तमान् दुर्गति और हम लोगों की गुलामी की दशा में आजाने का मुख्य कारण राजनीति में हमारी अनभिज्ञता ही है। जिस समय मुसल्मानों ने हमला किया था उस समय भारतीय प्रजा में किसी तरह की त्रुटि न थी। संस्कृत के प्रत्येक विषय के उत्तम से उत्तम ग्रन्थ उसी समय बने, प्रसिद्ध२ कवि और दार्शनिक भी तभी हुये; वाणिज्य और शिल्प भी तब अच्छी हालत में था; केवल अपने में पालिटिक्स में पटुता न रखने के कारण मुसल्मानों ने देश को अपने आधीन कर लिया। अब के समान तब जो मुल्की जोश हमारे में होता तो कभी सम्भव था कि हिन्दुस्तानियों ही की पलटन के सिपाही हैदर और पेशवा के मुक़ाविले लड़ देश को अङ्गरेज़ी गवर्नमेंट के हाथ में करा देते? अब इस समय हमारा धर्म कर्म सामाजिक रीति नीति सब राजनीति ही होना चाहिये। जिस से क़ौम में कमज़ोरी आती हो वह धर्म नहीं अधर्म है, रीति नीति नहीं कुरीति और कुनीति है। हाकिम और अगुआओं में यही ख़ास बात Main point वेबनाव की है कि हाकिम लोग हमे पालिटिक्स के मर्म समझने से अलग रक्खा चाहते हैं और अगुआ लोग उसका घरेलू बातों के समान प्रचार चाहते हैं। कर्मचारी इसके प्रचार को बल पूर्वक रोकते हैं यही अगुआओं को खटकता है। इस खींचा खींची का परिणाम यही होगा कि जिनमें बनावटी देशानुराग है वे हाकिमों की नाराज़गी और ख़फ़गी से डर अलग हो जांयगे जिनमें सच्ची देश-भक्ति है वे निःशङ्क हो देशका काम करेंगे। तब देश के कल्याण का मार्ग हमें स्वराज के केन्द्र तक पहुंचने में सहायक हो निश्चय हमें सफलोद्यम करेगा। इसमें कर्मचारियों के बाधक होने से चाहे यह हमारा मनोरथ जल्दी सफल न हो पर यह प्रयत्न खाली न जायगा जितनाही देर से होगा उतनाही दृढ़ता के साथ होगा। मसल है "देर आये दुरुस्त आये"।

राजनैतिक हमारा मुख्य उद्देश्य है।

राजनैतिक प्रवीणता हमारी जितनी बात सब का केन्द्र है। समाज संशोधन अथवा धर्म में उन्नति सब का छिपा हुआ भीतरी भाव यही रहता है कि समाज जब निर्दोष होगी; झूठ फ़रेब दग़ाबाज़ी लालच स्वार्थ साधन चेष्टा आदि अनेक बुराइयों से बची रहैगी; समाज के लोग अपने विश्वास के पक्के और धर्म में दृढ़ रहैंगे; धर्म के आचरण से मस्तिष्क उनका परिस्कृत और बुद्धि विमल रहैगी; तब राजनैतिक सिद्धान्तों पर दृढ़ता और उसकी अनेक सूक्ष्म बातों पर ख़याल दौड़ना बहुत आसान होगा। हमारे वैदिक ऋषियों का क्रम या जब तक उन की बनाई चार वर्ण की प्रथा तथा उन की शिक्षा के अनुकूल सब लोग चलते रहे तब तक देश में समाज दुर्बल और क्षीण नहीं हुई थी; लोगों में राजनैतिक जोश और एका भी तब ऐसा था कि ज़रा भी किसी विदेशी के मुकाबिले अपनी किसी बात में हेठी मरण तुल्य मानते थे, अपने देश को स्वच्छन्द रखना अपने जीवन का प्रधान कार्य समझते थे; देवासुर संग्राम आदि क़िस्से इस के उदाहरण हैं। जैसा इस समय हमारे नस २ में ग़ुलामी और स्वार्थ व्याप गया है वैसा ही तब स्वातन्त्र्य उदार भाव और सब के साथ सब की साधारण सहानुभूति लोगों में व्याप रही थी।

"सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्"।
"अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्"॥

आदि माकूले उसी समय के हैं। इस तरह की दीन बातिली कि भूत प्रेत और पीर पैगम्बर तक को हम लोग पूजने लगे हैं और ऐसी फूट कि भाई भाई और बाप बेटे के मुकाबिले लोग अलग २ अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी पका रहे हैं। यह सब मुसल्मानी सलतनत और विद्या के न होने का फल है। अब विद्या की झलक आ जाने से मानों परदा सा हट गया है। ऐसा दैवी संपत्ति का सुरमा आंख में लगा दिया गया है कि मूर्खता के मोहन मंत्र का जादू छिन्न भिन्न हो न जानिये कहां जा विलाना; परोक्ष से परोक्ष बातें प्रत्यक्ष हो गईं। अन्धकार से एकबारगी

उंजाले में आने से चकाचौंध सी होने लगी सर्वथा किंकर्तव्यता मूढ़ हो अब कुछ भी करते धरते नहीं बनता—यही सूझता है कि सर्वसाधारण को जो अपने स्वरूप का ज्ञान न रहा गुलामी में पड़े २ अपने को ये भूल गये हैं तो राजनैतिक अभिज्ञता, राजनैतिक विषयों का ज्ञानहीं एक मात्र इनके परित्राण और उद्धार का मार्ग है। तो अब हम सबों का कर्त्तव्य यही होना चाहिये कि आवाल वृद्ध वनिताओं में गेहे गेहे जने जने अहर्निश इसी की चरचा रहनी चाहिये, महलों से झोपड़ियों तक यही उन की Domestic talk घरैलू बात चीत रहे। स्वदेशी और बायकाट राजनैतिक की पहली सीढ़ी है। यही हमारे सुधार और हमारे आगे बढ़ने का मुख्य द्वार है। अब इस समय जिससे हमारे में राजनैतिक जोश आवे और बढ़ता जाय वही हमारा धर्म है, वही हमारा कर्म है, वही हमारी पूजा है वही हमारा पाठ है वही जप तप है। जिसमें राजनैतिक विषय की वासना न हो वह पुण्य का काम नहीं वरन महा घोर पाप है। समाज में एक छोटे से छोटे आदमियों में राजनीति की बारीकियों को समझने की ताकत पैदा कर देना बड़ी भारी देश की सेवा है। यद्यपि इस काम का आरम्भ हमारे यहां ५० वर्ष पहिले से हो गया है और कहीं २ तो बड़ी धूम और कामयाबी के साथ चल रहा है। पर इस तरह के विचार का उद्गार इधर दोही वर्ष से फैला है। २२ वर्ष तक हर साल कांग्रेस में राजनैतिक विषयों की उद्धरणी का फल अब फला है। इधर हम जागने लगे तो हमारे शासन कर्ताओं में खलबली पड़ी। अरे यह क्या अनर्थ हुआ लार्ड कर्ज़न ने कैसी उलटी कल उमेठी कि जो समझे थे उसका उलटा हुआ। अब वे अपनी प्रभुता के बल से हमे दबाते हुये राजनैतिक अभिज्ञता प्राप्त करने से तथा राजकीय मामिलों में हस्तक्षेप करने से हमें रोकते हैं और चाहते हैं कि इन्हें सलतनत के मामिलों में ऐसा ही मूर्ख बनाये रहैं जैसा ये अब तक रहे। इन में समझदारी आ जायगी तो ये हमारी वक्र गति को पहचानने लगैंगे और हमारी चाल जो अभी थोड़े से पढ़े लिखे पहचानते हैं अदना से अदना आदमी भी जानने लगैंगे तो नीति की झलक मात्र रखनेवाली हमारी कुनीति का

परदा फाश हो जायगा लोगों में असन्तोष फैलेगा और हमारे शासन की बदनामी जो अभी थोड़े से बीहड़ सम्पादक और कतिपय पढ़े लिखे लोगों में है प्रजामात्र में विस्तार पा जायगी। अब इस के रोकने की बढ़िया तरकीब सब के पहले छात्र मण्डली को दबाना और विद्यार्थियों को उभड़ने न देना है। क्योंकि भारत के भावी भद्र और भलाई का भार इन्हीं पर निर्भर है; ये कोमल मन वाले मनस्वी न होने पावें इसकी फिकिर पहले ही से कर रखनी चाहिये; इन्हें जो शिक्षा दी जाय वह भरसक राजनैतिक न हो। पर बहुधा देखा जाता है, सावन भादों में जब नदी की बाढ आने लगती है तब कितनाही बांध बांधो नहीं रुकती। जो काम राज़ी और प्रसन्न रखने से होता है वह बल पूर्बक नहीं होता। गवमेंट के कर्मचारी ऐसी बात क्यों न करें कि ये नवयुवक जैसा अब तक होते आये, लायलटी के रूप और ब्रिटिश शासन के परम प्रेमी भक्त बन जायं। पर सो कैसे हो सकता है कर्मचारी गण अभी ज़रा सा वक्र और अतीचार वाली गति छोड़ सीधी और सरल चाल पर आ जायं तो विलाइत के स्वार्थ में बाधा आ पड़े और ऐसा करने वाला उनके दल में अंगुश्तनुमा और बदनाम हो उठे। सारांश यह है कि शासक और शासित में परस्पर स्पर्द्धा और होड़ का एक अद्भुत समय आ उपस्थित हुआ है देखैं इस उतरा चढ़ी में कामयाबी का पलरा किधर को झुक पड़ता है।

समुद्र यात्रा क्यों निषिद्ध है।

बहुत दिनों से हम हिन्दुओं के दिलों में समुद्र यात्रा का निषेध इतना बद्ध मूल हो रहा है कि जहाज़ पर पांव रक्खा कि धर्म रूठ कर भागा। कुछ दिन हुये थोड़े से पण्डितों ने व्यवस्था दे दी है और समुद्र यात्रा शास्त्र संमत सिद्ध कर दिया है। किन्तु सर्व साधारण में उसका कुछ भी असर न हुआ। बड़ी हिम्मत कर कोई चला भी जाता है तो वह सदा के लिये समाज से निष्कासित होता है। खान पान आदि व्यौहार में समाज से उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता। इन दिनों हमारे नव युवक भांत भांत की युक्तियों से विदेशों में गमन की आवश्यकता दिखाते

इसके लिये यत्न और परिश्रम कर रहे हैं। विशेष कर जापान जाने के तो बड़े ही उत्सुक हैं। किन्तु आम तौर पर वहां जाने की प्रथा हिन्दुओं की किसी जाति में अभी तक नहीं निकली। कितने सुशिक्षित नवयुवक मुल्क के फायदे के लिये इङ्गलैंड आदि देशों में जाने का विचार कर रहे हैं किन्तु इस बात को सोच विचार कि वहां से लौटने पर जाति बिरादरी वाले अपनी सहानुभूति हमारे साथ न रख हमे अलग कर देंगे तो हम कहीं के न रहेंगे कचा जाते हैं और जाने का इरादा तोड़ देते हैं। विशेष कर हमारे इस संयुक्त प्रान्त के लिये तो यह एक बिलकुल नई बात होगी। हम नहीं जानते अन्त में इसका क्या परिणाम होने वाला है जहां तक देखा जाता है ये नवयुवक बे तरह समुद्र यात्रा के उत्सुक हो रहे हैं। जाति पांति की सब कैद तोड़ अपने बड़ों का जी दुखाते ये नौजवान लोग अन्त को अपने समूह से खारिज हो होटल अथवा ब्रह्म समाज या आर्य समाज ऐसी समाजों का आश्रय लेंगे। कई एक जगह जैसा वर्ताव उनके साथ किया गया उससे तो हम उन्हे किसी तरह दोष न देंगे। इस बात को सोंच दुःख होता है कि कोई तरह का निषिद्ध काम नहीं बचता जो लोग नहीं करते और कोई दंड समाज से उन्हे नहीं दिया जाता। यह मनुष्य जो विदेशों में जाय लियाकत का पुंज बन कर आया है समाज में उसकी कदर होना एक ओर रहा ऐसा पतित समझा जाय कि उसका छुआ पानी पी लेने से धर्म चला जाय तो ऐसे धर्म को तो दूर ही से नमस्कार करने का मन होता है। समाज से खारिज हुये ये लोग भी समाज को दूषित ठहराते अपना दल बढ़ाने की कोशिशें करने लगते हैं परिणाम में आपस का विरोध बढ़ता है बची खुची जो सहानुभूति उसे भी हम खोये देते हैं। इससे बेहतर यही होगा कि उससे प्रायश्चित्त करा उसे अपने में शरीक कर लें। बल्कि उसके जाने के पहिले जाति बिरादरी वालों के सामने उसे खड़ा कर सूचित कर दें कि यह देश की भलाई के लिये विदेश में जाता है हम लोग हृदय से इसके साथ सहानुभूति रक्खें। भक्ष्याभक्ष्य का विचार यदि उसने पूरी तरह से निवाहा तो प्रायश्चित्त भी उससे साधारण कराया

जाय। इस गिरी दशा से भारत के उद्धार के लिये अब जापान आदि देशों में जाना बहुत आवश्यक है। जो लोग जापान से लौट आवें उनके द्वारा यहां सब तरह के कारखाने जारी होने से देश की आर्थिक दशा बहुत कुछ सुधर सकती है। इससे सिवाय लाभ के हानि नहीं है अतः पाठकों से हमारी बिनती है कि उनके समूह से जो इसके लिये सन्नद्ध हो उसके उत्साह को बढ़ाते रहैं। जापान का एक यात्री।

चिन्ता।

चिन्ता चुड़ी तेरी महिमा कहं लगि गाय सुनाऊं ॥
एकानन से का गुन बरनहुं सहसानन कहं पाऊं ॥
अति लघु काय जीव से लेकर अति बिशाल बपुधारी ॥
तेरे वश्य होय नहिं नाचे को अस है तनुधारी ॥
जल थल अरु नभ चारी जेते जीव जन्तु जग माहीं ॥
तव चंगुल से जुदा भये हों देखा कोउ अस नाहीं ॥
अपने प्रानन की रक्षा हित अरु परिवारहि लागी ॥
चिन्ता व्यापि नहीं जेहि ऐसो को दृढ़ बुद्धि बिरागी ॥
पेट भरन की प्रबल चिन्तना काहि न नाच नचावै ॥
प्रगट देखिये बानर नाचै नटहू स्वांग बनावै ॥
याही के बश रङ्क बार बहु बिनती करत सुनाई ॥
याही के बश राव रहैं नित राखैं सैन सजाई ॥
काहुहि कहू भांति यह व्यापै काहुहि काहु भांती ॥
का गणना मनुजन की करिये देवनहू जो सताती ॥
कामहि प्रिया मिलन की चिन्ता लोभिहि धनकी जानों ॥
क्रोधी क्रोध बेग बश कोपै अधिक मोहते मानो ॥
ज्ञानिहि ब्रह्म ज्ञान की चिन्ता ध्यानिहि इष्ट मिलन की ॥
अज्ञानी को अति ही घेरै कथा कहौं फिर किनकी ॥
चतुरानन को सृष्टि रचन की विष्णुहि पालन हेता ॥
प्रलय करन की रुद्रहि व्यापै सुनिये सुजन सचेता ॥

बड़े बड़न की जब गति ऐसी छोटेन की का कहिये ॥
चिन्ता को शुभ संकल्पन महं सदा लगाये रहिये ॥
बिन चिन्ता कछु काज न होइहै चतुर कहैं यहि भांती ॥
विद्या की जेहि चिन्ता नाहीं तेहि विद्या नहिं आती ॥
है अपार गुन चिन्ता ही में औ औगुन बहुतेरे ॥
जानत हैं सुविचारी जन सब कहे होत का मेरे ॥
शक्ति समान कीजिये चिन्ता बश न हूजिये ताके ॥
राधाकृष्ण सुखी रह वाही चिन्ता अधिक न जाके ॥

राधाकृष्ण–ग्वालियर

महाराजा बीकानेर की लायलटी।

रूटर ने ऐंगलो इंडियन पत्र टाइम्स को एक तार भेजा है कि महाराज बीकानेर बंगाल और पञ्जाब के आन्दोलन को दूषित ठहराते हुये विलायत के लोगों को यकीन दिलाते हैं कि हिन्दुस्तान के लोग वृटिश राज के भक्त हैं और बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं जो इस आन्दोलन में हिस्सा ले रहे हैं। उक्त महाराज को इस खुशामद का फल कोई बड़े से बड़ा खिताब अब जल्द मिल जायगा जैसा कदाचित् काश्मीर के महाराज को भी नहीं मयस्सर हुआ। यद्यपि महाराज कश्मीर ने भी लार्ड मिंटो सरीखे गवर्नमेंठ के उच्च पदाधिकारी बाला हाकिमों को प्रसन्न रखने में अपनी ओर से कुछ छोड़ नहीं रक्खा और खैरखाहों में अपना औवल दरजा कायम कर रहे हैं पर बीकानेर के महाराज सबकत ले गये। अथवा हम इन राजाओं को क्या दोष दें ये बेचारे भी तो रेज़ीडेण्टों के बश में रहते हैं। अभी ज़रा सा किसी बात में अपना स्वातन्त्र्य दिखलाना चाहें तो उनकी लेव देव कर दी जाय। महाराज बीकानेर अपने को सुशिक्षित मानते हैं पर हमें उनकी शिक्षा पर अफ़सोस होता है। शिक्षा का बड़ा फायदा अपने मुल्क को इस गिरी दशा से उभाड़ना और चरित्र का पवित्र और पक्का होना है। अपने देश के साथ सहानुभूति उन्हें जैसी है सो तो इनके इस पत्र से प्रगट है रहा चरित्र सो महाराजा

राजा तथा बड़े तअल्लुकेदार जिन पर कर्मचारियों का ज़ोर है प्रजा के पक्षवाले कभी हो ही नहीं सकते न उनमें इतनी हिम्मत और सरगरमी आ सकती है। हमको अपने बनने की आशा मध्यम श्रेणी वालों से अलबत्ता है। राजाओं में तो कुछ दिनों में ऐसा हो जायगा कि स्वदेशी की चर्चा भी महापाप में दाखिल कर ली जायगी और स्वदेशी बर्ताव करते जिसे देखेंगे उसे रियासत के रेज़ीडेएट कदाचित् जला वतन करा दें। मध्यम श्रेणी वालों को भी नये नये रिज़ोल्यूशन रोकेंगे तो स्वदेशी लोहे के चने चाबने को खूब मज़बूत दांत होने चाहिये। अस्तु महाराज बीकानेर को लायलटी और राजाओं में सबसे बड़े गिने जानेकी मृगतृष्णा ने इतना धर दाबा कि वे अपने घराने के पुराने गौरव को भी भूल गये और बिला ज़रूरत खुशामद की बातें करने लगे। हम यह नहीं कहते कि महाराज लायल न हों किन्तु उन्हें अपने देशके साथ लायलटी प्रगट करना पहिला काम था। मसल है घर में दिया जलाय तब मसजिद में जलाना उचित है। विलायत गये थे वहांके लोगोंको देश की सच्ची दशा दिखलाना था न कि ऐंगलो इंडियन कर्मचारियों के साथी बन गये। लाचारी है॥ महाराजा साहब राठौर क्षत्री हैं—जैचन्द्र जिन्होंने मुसलमानों को यहां बुलाया राठौर ही थे। तब क्या आशा की जाय कि वे हमारे उद्धार के लिये कुछ करेंगे।

सिक्खों के धर्म का साधारण इतिहास।

(गतांक के आगे से)

पांचवें गुरू अर्जुन जी के पुत्र और उनके एक साथी गुरू हरगोविन्द जी थोड़ा घना लड़ाई झगड़ों में रहे पर वे सब इतने छोटे और स्थानीय झगड़े थे कि दिल्ली तक उसकी खबर न हुई। सातवें गुरू हरिदास जी ने चुपचाप अपनी ज़िन्दगी काटी। आठवें गुरू हर कृष्ण जी २५ ही वर्ष की उमर में सुरधाम सिधार गये। सम्वत् १८२१ में नवें गुरू तेग बहादुर जी गद्दी पर बैठे और इन्होंने सिक्ख धर्म की बहुत उन्नति की। आदि गुरू के उपरान्त जो गद्दी पर बैठे उन्होंने धर्म प्रचार के लिये फिरने को बहुत कमकर दिया था परन्तु ये सारे पञ्जाब में भ्रमण कर हि-

न्दुस्तान के और २ प्रान्तों में भी गये। यहां तक कि आसाम में पहुंच वहां के राजा को अपना शिष्य बनाया। धीरे २ उनकी प्रतिष्ठा की शोहरत दिल्ली के शाही महलों तक पहुंची। उस समय कठोर हृदय औरङ्गज़ेब देहली के तख़ पर था, इसने उन्हें बुला कर मुसलमान करना चाहा। इनकार करने पर क़ैद किये गये और वहीं कतल भी किये गये।

गुरू तेग बहादुर की कतल ने सिक्खों में एक नई तरह की रूह पैदा कर दी। स्वामी शङ्कराचार्य की शिक्षा यह है कि संसार सब मिथ्या है, शरीर मरता है, आत्मा नित्य और जन्म मरण रहित है, शरीर कपड़े के समान है कि उतार डाला दूसरा पहन लिया इत्यादि। परन्तु यह सब कहने ही मात्र के लिये है इसका आचरण इस समय जहां तक देखा जाता है किसी में भी नहीं पाया गया कि किसी महात्माने धर्म के लिये जान दे दी हो और जो इस समय हमे अपने देश की भलाई के लिये जोश दिलाता और उमंग पैदा करता। इसमें सन्देह नहीं इसके पहिले न जानिये कितने वीराग्रगण्यों ने लड़ाई में सन्मुख युद्ध कर जानें दे दीं परन्तु इस जान देने का असर सिवाय लड़ाई भिड़ाई के और किसी बात पर न पड़ा। गुरू तेग बहादुर के कतल का असर समस्त हिन्दुओं पर पड़ा चाहो वह सिक्ख हों या किसी दूसरे मत मतान्तर के मानने वाले हों। हिन्दू मात्र में खलबली पड़ गई। एक तो यह साधू उसमें भी वैसे जिनकी ज़िन्दगी मानों पवित्रता मौक्तिकहार की एक अटूट लड़ी थी, जिन्होंने बादशाह तो क्या एक गरीब किसान को भी कभी कष्ट नहीं पहुंचाया था, जिनकी मानता और इज्ज़त सिन्ध से आसाम तक थी, जिनके घराने की प्रतिष्ठा सब ठौर व्यापी थी, और यह सब किसी साधारण पुरुष में नहीं होतीं वरन उसी में जिसका अपूर्व पुण्योदय रहता है। पूर्व जन्म के किसी योगभ्रष्ट में यह सब होता है। जैसा गीता में कहा है "शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते" इसलिये उनके कतल का हाल सुन सब लोग कांप उठे और दुष्ट कातिल औरङ्ग़ज़ेब को बुरा कहने लगे।

सिक्खों में तो इस्का दोहरा असर पड़ा एक ओर तो उनको बदला लेने का जोश पैदा हुआ दूसरे ओर यह कि अपने मरने तक का डर उन्हें न रहा—इस भांत एक गिरी हुई कौम में नई जान आ गई— हज़ारों सिक्ख जो पीछे से सिंह बन गये गुरू तेगवहादुर का नाम लेते पाप और मौत के डंके से बेख़बर रहे। यह असर नवें गुरू तेग बहादुर के बेटे गोबिन्द सिंह और उनके साथियों पर सब से अधिक पड़ा— जिन्हों ने इस एक के कतल के बदले को कुल कौम के कतल में बदल दिया और एक के बलिदान को कुल कौम भर के बलिदान में बढ़ा कर सिक्खों में एक नई शकल पैदा कर दी। आप तुर्कों के हाथ में नहीं आये और न बादशाही गज़ब की तेग पर बलिदान हुये तौ भी उनकी पूरी ज़िन्दगी निठुर मुगल बादशाहों के क्रोध में जो बलिदान हुये उस्की एक लड़ी सी है जिस्का वर्णन यहां अप्रासंगिक है—किन्तु इतना सूचित करना यहां आवश्यक है कि औरंगज़ेब के जीते जी सिक्खों का दल बहुत बढ़ गया था और उस्के मरने के उपरान्त तो उनका एक भयानक समूह हो गया।

औरंगज़ेब के साथियों ने सिक्खों के नष्ट करने में बड़ा उद्योग किया। फर्रुखसेर के समय सरहिन्द और लाहोर के सूबेदारों को हुक्म मिला कि हर एक गांव के मालिकों से मुचलके ले लिये जांय कि कोई सिक्ख उनके गांव में न रहै और जो रहता हो तो कैद कर सूबेदार के पास भेज दिया जाय—जासूस भी नियत किये गये जिनका काम यह था कि कहां कितने सिक्ख हैं और गांव के मुखियाओं ने इस्की ख़बर सूबेदार को दी है कि नहीं—और इनाम मुकर्रर किये गये। सूचना देने वाले को २०) पकड़वा देने वाले को ४०) और किसी सिक्ख का सिर काट ले आने वाले को ८०) रु० इनाम रक्खा गया—मुग़ल बादशाहों का यह अत्याचार मुहम्मदशाह के समय तक जारी रहा—जब कि मुग़लों की सलतनत कमज़ोर हो गई और इस तरह का ज़ुल्म करने लायक़ न रही।

इस समय कितने दुर्बल चित्त वाले कम हिम्मत सिक्खों ने केस कटवा डाले परन्तु उनके एक भारी समूह ने निज धर्म छोड़ना स्वीकार न किया चाहो कितनी आफत भोगनी पड़े— उनके समूह मे से हज़ारों

पकड़े गये और क़तल किये गये हज़ारों अपना घर बार छोड़ शहर और गांवों से दूर जंगलों में जा छिपे-वृक्षों के तले और पहाड़ों की गुफा में जा रहे और जंगली फल फूल खा कर अपना जीवन बिताया-जहां यह भी न मिल सका वहां लूट मार कर पेट पालते थे। इन्ही लोगों में जो प्रसिद्ध सिक्ख थे वे पन्थ कहलाये और गुरू के कायम मुकाम या प्रतिनिधि समझे जाते थे-उस समय सिक्खों की दशा ऐसी थी कि वे ज़िन्दगी का कुछ भरोसा न करने लगे। न जानिये किस जून काल के कलेवा बन जांय-खानाबदोश, रहने को जगह नहीं, हर वक्त दरिन्दे जानवर शेर भालू के पंजे में पड़ जाने का डर, इधर तुर्कों के खंजर का खौफ उन्हें जीवन से निरास किये था- सिक्खों के जी में यह उमंग थी कि अपनी ज़िन्दगी को जहां तक हो सके गिरां करें। उन्में ऐसे वीर बहुत हुये जिन्हों ने अकेले पांच पांच सौ का मुकाबिला किया और सैकड़ों की जानें ले अपनी जान दी-पर इस समय हमारा प्रयोजन उन महात्माओं से है जिन्हों ने अपना बचाव लोहे और चमड़े के सिपुर्द न कर उसे सौंपा जिसने लोहे में सख़्ती और चमड़े में नरमी दी- जिन्हों ने मौत की गोद को भयानक न पाय उस्में अपने परलोक का सुख और अपने धर्म की उन्नति देखी-जिन्हों ने सिक्ख धर्म की महल बनाने में अपने रूधिर को गारे की जगह दे दिया-ऐसे महात्मा बहुत हुये हैं परन्तु जिनका चरित्र हमें हाथ लगा ऐसे महाशय बहुत थोड़े हैं। (शेष)

सच्चा साधु।

तन मन से जो पर कारज में अपना जन्म बिताता है।
पुनि स्वदेश बंधुन प्रसन्न लखि जिस्का दिल हरषाता है॥
प्यारी जन्मभूमि की दुर्गति जिससे सही न जाती है।
अपने पुरुषों के यश की सुध जिस को सदा सुहाती है॥
जो 'स्वदेश' की मूरखता पर छण भर चैन न पाता है।
लोगों के आलसी हृदय में जो उत्साह बढ़ाता है॥

निज भाई सम जान सबों को सत उपदेश सुनाता है।
अरु कुपंथ से तिन्हें बचाकर धर्म राह ले जाता है॥
जो 'स्वदेश' हित दुष्ट जनों की गाली भी सह लेता है।
उनकी निन्दित बातों की भी ओर ध्यान नहि देता है॥
जिस्के हृदय लोभ, स्वारथ, का रंचक भी लवलेश नहीं।
आत्मीयता देश बन्धुन संग कितनी, जिस्का शेष नहीं॥
सोते जगते खाते पीते यही सोच जिस्को भारी।
किस विधि 'भारत' में 'स्वतन्त्रता' होवे मुद मङ्गलकारी॥
जिस्के लिये नरक भी सुखकर, अनुचित कारागार नहीं।
अरु 'स्वदेश' हित प्राण त्यागने में भी कुछ इनकार नहीं॥
जिसने यह दृढ़ ठान लिया है, "कुछ हो कष्ट उठावेंगे।
पै दुर्दशा ग्रस्त भारत को उच्चासन बैठावेंगे"॥
गर्व रहित हो इस प्रकार से निज कर्त्तव्य दिखाता है।
वही धन्य अरु पृथ्वी तल पर, "सच्चा साधु" कहाता है।

माधव प्रसाद शुक्ल

इण्डियन पालिटिक्स का झुकाव।

हिन्दुस्तान की राजनीति में आज दिन यह दोष लगाया जाता है कि यह धर्म और नीति के विरुद्ध जा रही है। थोड़े से आन्दोलनकारी Morality नीति तत्व से इसे अलग कर इस में Sedition राजविद्रोह भर रहे हैं। ये लोग अपने भाइयों को उनकी ठीक राजनैतिक और आर्थिक दशा बतलाकर बलवा करवाना चाहते हैं। उन के इस बुरे झुकाव को रोकने के लिए सर्कार ने बहुत से नये २ एक्ट और सरक्युलर जारी कर दिये। लाजपत ऐसे बागियों को जलावतन कर दिया क्योंकि उनके रहने से बलवा होने का डर था। रेज़ली साहब की दया से स्कूल और कालिजों के विद्यार्थी और प्रोफ़ेसर राजनैतिक विषय में हस्तक्षेप करने से अलग किये गये क्योंकि ऐसा करने से उन के चरित्र के बिगड़ने की संभावना है। डिटे-

कृिव भी इसी लिए नियुक्त किये गये कि वे छिप २ लोगों के गुप्त चाल चलन वा सीक्रेट सोसाइटी के कायम होने की खबर सर्कार को दें। जिस में चाल चलन जो पुरुष में एक रत्न है बिगड़ने न पावे। पोलिटिकल लेख लिखने वाले वा स्पीच देने वाले पर सर्कार की कड़ी निगाह रहती है और कई एक एडिटर और राजनैतिक स्पीच देने वाले इस निगाह में बलि-दान भी हो चुके हैं। समाचार पत्र जो अनेक राजकीय संकटों से उद्धार के द्वार और प्रजा में एक बड़ा बल समझे जाते हैं दबाए जा रहे हैं जिन एडीटरों को सज़ा होती है उन का प्रेस इत्यादि ज़ब्त कर लिया जाता है क्योंकि वे अपने लेख से अपने पढ़ने वालों की चाल चलन बिगाड़ना चाहते हैं। इन सब काररवाइयों को देख यही निष्कर्ष निकलता है कि हमारी दयालु गवर्नमेंट इण्डियन पालिटिक्स को इम्मोरालिटी से बचाया चाहती है।

हिन्दू सदा से धर्म और नीति तत्व को सर्वोपरि मानते आये हैं। क्या कारण कि वे आज इस कुराह पर चल रहे हैं? क्या सच २ जैसा गवर्नमेंट सोचे हुए है वही है? क्या इस कलंक को हम में से दूर कर देना सर्कार का काम है? क्या इससे सच २ प्रजा की हानि है? किस से हानि है और किससे लाभ है इस बात के जानने के पहिले इस का जानना ज़रूरी हो गया कि Morality नीति तत्व का Politics राजनैतिक से कहां तक लगाव है। जब हम उन देशों की राजनैतिक दशा पर अपनी राय कायम करते हैं जिनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, जिनके बिगड़ने या बनने से हमें कोई हानि या लाभ नहीं तब हमारे राजनैतिक विचार धर्मयुक्त और पक्षपात रहित होंगे। किन्तु जब उन देशों की दशा पर हमारी राय कायम की जाती है जिनसे हमारा किसी तरह का सम्बन्ध है तो हमारे विचारों का धर्मयुक्त और पक्षपात शून्य रहना बहुत कठिन है। हम यह नहीं कहते कि ऐसे मौक़े पर हर एक राजनीतिज्ञ राजनीति को धर्म-नीति Morality से अलग कर देगा वरन ऐसे राजनीतिज्ञ बहुत कम हैं जो पक्षपात रहित अपनी राय को साहस और हिम्मत के साथ प्रगट कर सकें। हर एक देश में राजनीतिज्ञों मे अधिकांश ऐसे ही लोग हैं

जिनमें अपने मुल्क की तरक्की और वतन दोस्ती का बड़ा जोश है। वे अपने देश की हीनता या हेठापन को कभी ख़ाब में भी नहीं ख़याल कर सकते। देश के शासन की प्रणाली ऐसे ही लोगों के हाथ में रक्खी जाती है जो अपने देश की भलाई करें हीं गे वह भलाई चाहो शुद्ध नीति से चले या अनीति से। इङ्गलैंड के लिबरल दल वाले हों या कनसरवेटिव सब आज दिन रशिया के आन्दोलनकारियों के साथ सहानुभूति रखते हैं और उनको उत्साह भी दिलाते हैं किन्तु जब वे हिन्दुस्तान के आन्दोलन की समालोचना करते हैं तो वे उसको बग़ावत बतलाते हैं और उसे जड़ से उखाड़ डालने की कोशिश करते हैं। याद रहे ग्लेडस्टन ही ने जो पालिटिक्स में इङ्गलैंड में ही नहीं बरन यूरोप भर में माननीय थे आइरिश होम रूल बिल पास होने से रोका था। हम यह नहीं कहते कि ये लोग अधर्मी हैं बरन यह दिखाया चाहते हैं कि उनकी पालिटिक्स देशानुराग Patriotism से न कि Philanthropy मनुष्य मात्र से प्रेम के सिद्धान्त पर चलाई जाती है, और यह भी दिखाया चाहते हैं कि वे लोग जो हम पर धब्बा लगाते हैं वह कहां तक Morality नीति तत्व को राजनीति Politics में निबाहते हैं। दूसरा हिस्सा ऐसे राजनीतिज्ञों का होता है जो अपने राजनैतिक सिद्धान्तों को पक्षपात रहित हो लिखते हैं और स्पीचों में कहते भी हैं। लेकिन जब उनको उन सिद्धान्तो को अमल में लाने का मौका दिया जाता है तब उनकी मोरालिटी और पक्षपात रहित पालिटिक्स आपस में मेल नहीं खाती, साहस और अपने सिद्धान्त की दृढ़ता न जानिये कहां जा छिपती है। उनमें अपने देश भाइयों की राय का भय व्याप जाता है। मारली साहब जब तक मन्त्री के पद पर नहीं थे तब तक उनकी राय पक्षपात रहित थी लेकिन जब से उन्हों ने इस पद को ग्रहण किया तब से केवल Theory ख्याल में लिबरल उदार दल वाले रह गये और उन्हीं पहले के राजनीतिज्ञों में गिन लिये गये। तीसरा हिस्सा राजनीतिज्ञों का वह है जो अपनी राजनीति को समाज-नीति Mo ility के साथ चलाया चाहते हैं, पर ऐसों की गिनती बहुत ही थोड़ी है, दूसरे उनकी आवाज़ नक्कारखाने में तूती के समान कौन

सुनता है । जब इंगलैंड की आर्थिक दशा स्पेन और फ्रांस से युद्ध के कारण बहुत बुरी होगई थी तब इंगलैंडके लोगोंने स्वार्थान्ध हो अमेरिका के यूनाइटेड स्टेट पर जो उस समय उनके आधीन था टैक्स लगाना शुरू किया । बर्क और पिट ऐसे ऋषियों ने इस अनुचित टैक्स को रोकना चाहा पर उनके कहने को किसी ने ध्यान न दिया, और अन्त को हुआ वही जैसा बर्क और पिट ने पहले से कह दिया था कि अमेरिका हाथ से निकल जायगी । सर हेनरी काटन ऐसे लोग जिन में बहुधा पक्षपात नहीं रहता, हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में भी चेताते रहते हैं पर सुनाई नहीं होती ।

पोलिटिकल साएन्स अभी उस उच्च भाव तक नहीं पहुंचा कि लोग अपने देश की राजनीति को वसुधैव कुटुम्बकम् वाले भाव से चलावें । देशानुराग सब देशों की राजनीति को चला रहा है, जहां पूरा देशानुराग है वह देश उन्नति की सीमा को पहुंचा हुआ है हम इसे अधर्म न कह केवल यह दिखलाना चाहते हैं कि जो दोष इण्डियन् पालिटिक्स पर लगाया जाता है कि यह धर्म विरुद्ध है सो कहां तक ठीक है । हिन्दुओं का सब से बड़ा धर्म मुक्ति या छुटकारा माना गया है सो इस धर्म का जिस से लोप हो उसे अलबत्ता हम Morality नीति तत्व के विरुद्ध कह सक्ते हैं । हिन्दुओं की पुरानी उन्नीसवीं शताब्दी की राजनीति में दासत्व की बू थी, आत्म गौरव का बिलकुल जोश न था, इस समय की राजनीति में ये दोनों नहीं हैं उसी को फिर प्राप्त करने का प्रयास Immorality नीति तत्व का विरोध कहा जाता है और इसी को हमारे शासन कर्ता हिन्दुस्तान की राजनीति Polities में दोष मानते हैं । तो यह दोष हमारे लिये कोई शोक की बात नहीं है । राजनीति "पालिटिक्स" में प्रवीणता क्षत्रियों का धर्म है, रजोगुण और वीरता का होना इसके लिये आवश्यक है । इस में दासत्व के भाव का होना ही अधर्म है । अक्बर के समय सच्चे राजनीतिज्ञ महाराणा प्रताप ही थे । सत्य बोलना, साफ बोलना, साहस के साथ बोलना, आत्म गौरव का खयाल रख कर बोलना, दूसरे के सहारे को लात मारना इत्यादि सब मोरालिटी

के चिन्ह हैं। इन सब गुणों को अब ही तो हमने सीखा है और यही हमारे पूर्वजों के गुण थे तथा उनका दृढ़ सिद्धान्त था। जो सिद्धान्त हमें स्वतंत्र कर देने के बड़े सहायक हैं उनके अनुसार चलना तो हमने अब ही शुरू किया है। उनके इन सिद्धान्तों की गवाही आज दिन दुनियां के इतिहास दे रहे हैं। जब तक हम इन सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे और उन पर दृढ़ रहने से हमारे में मुल्की जोश था तब तक हमने सब तरह की उन्नति की। उन सिद्धान्तों को छोड़ देना ही हमारे गिर जाने का कारण हुआ। साथ ही साथ हमारा साहित्य, व्यापार, इज्जत, प्रतिष्ठा सब सिधार गई। हमने अब ही तो अपनी उन्नति के सच्चे रास्ते को पहिचाना है। स्वतन्त्रता Liberty के खयाल मात्र से हमारे में मोरालिटी आ रही है और कौमीयत का जोश भी व्याप रहा है। new generation नौजवानों के लिये तो स्वतंत्रता का यह "अइडियल" उन्नति का परम उत्कृष्ट मार्ग है। करज़न मारली मिंटो रेज़ली आदि जो हमारे में इन सिद्धान्तों को दृढ़ कर रहे हैं उनको अन्तःकरण से धन्यवाद देकर कहते हैं कि ये लोग सच्चे Indian Nationality भारत मे जातीयता के भाव की बुनियाद डालने वाले हैं। अन्धे की आंख खोलने वाले को राह दिखलाने वाले से अधिक धन्यवाद देना चाहिये। इन लोगों को हम अपनी उन्नति के विरोधी मानते हैं किन्तु याद रहे विरोधी ही के होने से उन्नति के नये२ रास्ते सूझते हैं। इंगलैंड के लोगों ने कहां तक हमारे साथ पोलिटिक्स में मोरालिटी को बरता है हमारी वर्तमान् दशा उसकी गवाही देरही है। अंगरेज़ जाति इस समय स्वतंत्रप्रिय जातियों में अगुआ समझी जाती है। तब किसी कौम की स्वतंत्रता उस कौम के सुधार के बहाने छीन लेना मारल है? किसी कौम या देश के व्यापार को अपने देश के व्यापार की तरक्की के लिये नष्ट कर देना और नष्ट कर देने की कोशिश करना मारल है? इंगलैंड के राजनीतिज्ञ इस बात को ख़ूब जानते हैं कि Free trade स्वतंत्र वाणिज्य हिन्दुस्तान के लिये निपट हानिकारक हैं फिर भी अपना स्वार्थ उन्हें अजान कर रहा है। अंगरेज़ बड़े घमंड के साथ कहते हैं कि हम लाखों की जान देश में शान्ति रख खून खराबा

से बचाये हुये हैं यह कितने पुण्य का काम है। लेकिन आज जो लाखों की जान प्लेग के मुख में गिर रही है लोग अकाल के गाल में पड़ पिसे जाते हैं इस बड़े पुण्य का भार किस पर छोड़ा जाय। हमारे साथ इस समय जैसा व्यौहार किया जारहा है वह सुनीति Morality कही जायगी? तब यह क्योंकर कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तान की पालिटिक्स धर्म और नीति के विरुद्ध है।

देश भक्ति क्या है।

देश-भक्ति क्या है? वह कैसे आती है? देश को क्षति ग्रस्त देख तन, मन और धन से उसको उन्नति शाली बनाना; अहर्निश देशोन्नति की चिन्ता में ग्रस्त रहना! यही देश-भक्ति है! उसके ग्रहण करने का उपाय यही जान पड़ता है कि देश की बनी हुई वस्तुओं को काम में लाना; उन्हीं से प्रेम करना; उनके ग्रहण करने में स्वयं कटि बद्ध होना और अन्य देश वासियों को उनके ग्रहण करने के लिए उत्साहित करना; देश वासियों के साथ सुजनता का व्यवहार करना, आदि बातों से देश-भक्ति प्राप्त होती है। प्रत्येक भारत वासी को चाहिये कि स्वदेशी वस्तु ग्रहण के लिये अचल रूप से दृढ़ प्रतिज्ञ होकर "देश-भक्ति" तथा सच्चे आर्य्य सन्तान होने का परिचय दे। जिस भारत वर्ष के लिये पुराणों तथा आख्यायिकाओं में इस प्रकार पढ़ते, तथा सुनते हैं कि—"इस भारत भूमि में अमृतरस सदृश दाख फल और केशर आदि दुष्प्राप्य वस्तुयें उपजती थीं; यह वह भारत वर्ष है जहां किसी समय में दूध की नदियां बहती थीं; प्राकृतिक बहु मूल्य पदार्थों से इसका कोश खचा खच भरा था; अन्य देशों को सम्पत्ति शाली बनाने के लिये पारस पत्थर की भांति यही भारतवर्ष है; इसी भारतवर्ष की भूमि के लिये सुबर्णमयी, रत्न, गर्भा, बीर प्रसूता आदि विशेषण उपयोग में लाये जाते थे, इन सब को "देश-भक्तिकर" प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सक्ते हैं और जो बातें कहानी के रूप में परिणत हो गयी हैं उन्हें प्रगट रूप से देख लें और संसार को देखा दें। अन्त में निवेदन है कि यदि आप लोगों को देशीय और जातीय सत्ता सुरक्षित

रखनी है, यदि देशोन्नति के दुर्गम मार्ग में अन्य देश वालों के साथ साथ चलना है तो देश भक्ति ग्रहण कीजिये । यह बात किसी से छिपी नहीं है कि एक छोटे से टापू जापान ने प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करके दिखा दिया है कि देश भक्ति और देशानुराग में यह चमत्कार है कि जिस के प्रताप से थोड़े ही समय में बालू के किणका को सूर्य्य मण्डल की उपाधि मिल सकती है। सो भाइयो अब शीघ्रही स्वदेश भक्ति को राजर्षि दधीच की तरह (जिन्हों ने देश-भक्ति के लिये अपनी हड्डी तक समर्पण कर दी थी) तथा लाला लाजपति राय की भांति (जिन्दों ने देश-भक्ति के लिये अपना सुखमय जीवन ही सङ्कल्प कर दिया) ग्रहण करो । शम्

बाबादीन शुक्ल एकडला ।

पुस्तक प्राप्ति ।

हर के हाथ निवाह ।

इसमें दया आदि कई एक धर्म पर उपदेश पूरित छोटे २ लेख हैं । रायबहादुर बाबू लालबिहारी बी० ए० कृत संग्रहीत—अभ्युदय प्रेस प्रयाग में मुद्रित । मूल्य मै पोस्टेज -)

लाजपत महिमा ।

भारतहितैषी लाला लाजपतराय की अद्भुत भविष्य वाणी का स्वाद चखना हो तो इस पुस्तक को मंगा कर पढ़ो अब केवल ३०० कापी बच रही है । पुस्तक के साथ उनका एक चित्र भी उसमें है और उसका अनुवाद है जो अपने जलावतन के एक महीना पहिले भविष्य वाणी या पेशगोई की भांत उक्त लाला जी ने माडरन् रिव्यू नाम मासिक पत्र में दिया था उसी का पूरा अनुवाद उसमें है । मै पोस्टेज =) का टिकट भेजने से मिलैगा । महादेव भट्ट, अहियापुर—प्रयाग ।

केसरी ।

श्रीयुत तिलक महोदय की निर्भीक लेखनी का उद्गार यह साप्ताहिक पत्र है—जो माधव राव सप्रे महाशय के प्रबन्ध से हिन्दी में नागपूर से

निकलता है। तिलक महोदय की लेखनी ने पढ़ने वालों पर कुछ ऐसा जादू सा फेर दिया है कि जब तक नियत दिवस को यह नही आवता तब तक स्वाती के विन्दु को चातक सदृश लोग परखते रहते हैं और ज़रूरी से ज़रूरी काम छोड़ जब तक इसे पढ़ नहीं लेते तब तक चैन उन्हें नहीं मिलती। मूल्य इस्का मै डाकव्यय २) है–ऐसे नाजुक समय में राजनैतिक विषयों पर निडर अपनी राय ज़ाहिर करना तिलक महोदय ही का काम है। ईश्वर इसे सब तरह की आन्धी बौखा से बचाये रहे–

सुन्दर सरोजनी।

पं० देवी प्रसाद शर्मा रचित–सच्चा प्रेम और सच्ची मैत्री निवाहने में कितना कष्ट उठाना पड़ता है इसी को सुन्दर और सरोजनी के कथानक से इसमे ग्रन्थ कर्ता ने दिखाया है–नावेल पढ़ने मे रोचक अवश्य है भाषा भी उत्तम है कहीं २ दो एक ठौर पूर्वी बोली की झलक इसमे आगई है–भारत जीवन प्रेस बनारस की छपी है–मूल्य ।=)

पता–सिद्ध प्रसाद उपाध्याय बनारस।

प्राचीन नाम माला।

गतांक से आगे से

चन्द्रभागा–चिनाब पंजाब की पांच नदियों में एक।

चर्मण्वती–चम्बल जो इटावा के पास यमुना में मिली है।

चेदि–चन्देली शिशुपाल यहीं का राजा था। यह बुन्देलखंड का एक नगर है। पगड़ी डुपट्टा साड़ी यहां की प्रसिद्ध है। कोई २ चेदि को दशार्ण के अन्तर्गत मानते हैं। कोई इसे छत्तीस गढ़ में मानते हैं। किसी का मत है कि यह नागपूर के पास था। जो हो चन्देले राजपूतों की बुनियाद यही चेदि है। कोई २ कहते हैं हैहय वंशी क्षत्री भी यहीं हुये जो माहिष्मती में राज करते थे। भेड़ा जो जबलपूर के पास है जहां से नर्मदा के शिवलिंग निकलते हैं वहीं विन्ध्य तथा ऋक्ष पर्वत के बीच माहिष्मती थी। कोई २ कहते हैं नर्मदा के तट का देश चेदि था त्रिपुर इसकी राजधानी थी।

चोल या कर्णाट–मैशोर का दक्षिण भाग कारोमंडल का दक्खिनी हिस्सा जो कावेरी के किनारे है। कोई २ तंजोर को चोल देश मानते हैं। किसी का मत है कि लङ्का और द्रविड़ के बीच का देश चोल है।

जनस्थान–दंडकारण्य का एक भाग जो प्रश्रवण गिरि के पास है। पञ्चवटी जो नासिक से दो मील है यहीं है भवभूति ने उत्तर चरित्र में इसका बहुत अच्छा चित्र अपने वर्णन में उतारा है। और यह सब का सब किसी समय लङ्का के राजा रावण के अधिकार में था। इसी जनस्थान में ऋष्यमूक पर्वत भी है। "जनस्थानेशून्ये पिकलकरणैरार्यचरितै-रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्"।

जलन्धर–सतलज या शत्रद्रू विशाला या व्यासा दो नदियों का दोआबा। इसी नाम का एक नगर भी यहीं है।

तमसा–टौंस रीवा के पास से निकल प्रयाग से २० मील पूर्व यमुना में मिलती है। वाल्मीकि का आश्रम इसी पर था।

तापी या ताप्ती–विन्ध्य पर्वत से निकल छोटी २ नदियों को अपने में मिलाते सूरत के पास समुद्र में मिलती है।

तुङ्गभद्रा या तुङ्गवेणा–नीज़ाम हैदराबाद के राज्य की उत्तरी सीमा इसी नदी तक है। कृष्णा नदी के साथ मिल कर बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है।

ताम्रपर्णी–मलय पर्वत या वेस्टरन घाट के पूर्व की तराई टिनेवली के ज़िले में जो मदरास हाते में है बहती हुई मेनार की खाड़ी में गिरती है। यह खाड़ी लंका और हिन्दुस्तान के बीच में है। रघुवंश के चौथे सर्ग के ४९ और ५० के श्लोकों में तथा राजशेखर कृत बाल रामायण नाटक में इसका नाम आता है।

त्रिगर्त–सतलज और सरस्वती के बीच का देश। अधिकांश इसका रेगिस्तान है। लुधियाना और पटियाला इसी में है। महाभारत में कई ठौर इसका नाम आया है।

त्रिदिवा–दक्षिण की एक नदी वायुपुराण के मत से महेन्द्र पर्वत से जो दक्षिण में है निकल समुद्र में मिलती है।

त्रिपुर–जबलपूर से ६ मील चेदि देश के राजाओं की राजधानी थी।

दरद–वह देश जहां से सिन्धु नदी निकली है।

दर्दुर और मलय–हिन्दुस्तान के सात कुलाचल पर्वतों में एक। घाट पर्वत का वह दक्षिणी हिस्सा जो मैसूर के दक्षिण या ट्रावनकोर राज्य की पूरब की सीमा है। कावेरी नदी इसी पर्वत से निकल चारो ओर इसे घेरे हुये है। इलायची मिर्च चन्दन सुपारी और नारियर यहां तहुतायत से होते हैं। रघुवंश में इसकी तारीफ लिखा है "एलालतालिंगित चन्दनासु" कालिदास भवभूति जयदेव आदि कवियों ने इसके वर्णन में बहुत कुछ कविता की है। दर्दुर घाट पर्वत का वह हिस्सा है जो मैसूर की दक्षिण पूरब की सीमा है। कालिदास ने रघुवंश में इन दोनों पर्वतों की प्रशंसा में लिखा है। "स निवेश्य यथाकामं तटेष्वालीनचन्दने-स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ"।

दशार्ण–दशार्ण नाम की एक नदी भी जो दशार्ण देश में होकर वही है। यह मालवा का पूरब का हिस्सा है। इसकी राजधानी विदिशा थी जो अब भिलसा के नाम से प्रसिद्ध वेत्रवती नदी के तट पर है। कालिदास ने मेघदूत में और बाण ने कादम्बरी में विदिशा का अच्छा वर्णन किया है। कोई २ छत्तीस गढ़ को दशार्ण कहते हैं "दशार्णोदेशः नदी च दशार्णा" ऐसा भट्टोजिदीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में लिखा है।

दृशद्वती–मनु ने सरस्वती और दृशद्वती दो नदियों के बीच का देश आर्यावर्त कहा है यह कुरुक्षेत्र की दक्षिण सीमा था। सरस्वती दृशद्वती दोनों एक में मिल मरूभूमि में लय हो गई हैं।

देविका–वर्तमान घाघरा।

द्राविड़–मन्दराज से आरम्भ कर दक्षिण की ओर कारोमण्डल का किनारा जो गोदावरी के दक्षिण है। खास कर वह हिस्सा जो कृष्णा और पोलर नदी के बीच है। इसकी प्राचीन राजधानी वेगवती नदी पर कांची या कंजिवरम् है जो मन्दराज से नैऋत्य कोण की ओर है।

धुरन्धर–महाभारत के करण पर्व में युगन्धर नामक एक नगर का वर्णन है यदि वही यह है तो यह पञ्जाब में था।

निषध–कमाऊं का एक हिस्सा जिसकी राजधानी अलका अलकनन्दा पर थी । किसी २ का मत है कि यह बिरार में था । नलोपाख्यान में नल ने दमयन्ती को निषध देश का जो मार्ग बतलाया है सो बिन्ध्य और पयस्विनी नदी के निकट है । सात वर्ष पर्वतोंमें एक निषध भी है ।

नैमिषारण्य–अवध प्रान्त का एक तीर्थ स्थान जो ज़िला सीतापूर में ८४ कोस के घेरे में एक बड़ा बन था अब वह सब आबाद है और वहां अच्छे २ गांव और कस्बे बसे हैं । " यतस्तुनिमिषेणेदंनिहतं दानवं वलम् । अरण्येस्मिंत्स्ततस्तेन नैमिषारण्य संज्ञितम्" मुख्य तीर्थ सीतापूर से १६ मील है ।

पयस्विनी–विष्णु पुराण के मत से ऋक्ष पर्वत से निकली है । परंतु वायु पुराण और कूर्म पुराण के अनुसार विन्ध्य या सत्पुरा पहाड़ से इसकी उत्पत्ति है । महाभारत में लिखा है जहां से कृष्णानदी का निकास है वहीं से इसका भी है । दूसरे स्थल में लिखा है यह दण्डकारण्य की सीमामें है । युधिष्ठिर पयस्विनी में स्नानके उपरान्त वैदूर्य पर्वत और नर्मदा को गये थे । इसी नाम की एक क्षुद्र नदी चित्रकूट में है जो मन्दाकिनी में मिली है । यात्री इन दोनों के संगममें पिण्डदान करते हैं ।

पंचाल–मनु के मत से पंचाल और कन्नौज एकही देश है–पर महा भारत के अनुसार यह दक्षिण दोआब अर्थात् गंगा यमुना के बीच का प्रदेश है–आदि पर्व से जाना जाता है कि द्रुपद राजा के समय यह दो हिस्सों में बंट गया था । दक्षिण पंजाब की राजधानी माकन्दी थी और उत्तर पंचाल की अहिछत्र या अहिच्छत्र था । यूनान देश के टालमी नामक इतिहास वेत्ता जिसने हिन्दुस्तान का प्राचीन इतिहास लिखा है इसी अहिच्छत्र को Adisattras के नाम से लिखा है–द्रोणाचार्य ने समस्त पांचाल को जीत पीछे गंगा के उत्तर का भाग अपने अधिकार में रख जिसकी राजधानी फर्रुखाबाद के पास माकन्दी थी गङ्गा के दक्षिण का सब देश चर्मण्वती नदी तक द्रुपद को लौटा दिया । फर्रुखाबाद से १ मील पश्चिम एक मैदान में थोड़ी सी टूटी फूटी मूर्तें पाई जाती हैं जिसे वहां के लोग कहते हैं यही अखाड़ा है जहां द्रोणाचार्य ने पाण्डवों को बाणविद्या सिखाया था पंचाल और मत्स्यदेश जो जैपूर के पास था दोनों की डाड़ा मेड़ी थी । ये दोनों देश पुराणों में प्रसिद्ध हैं। पीछे से पंचाल और मत्स्य दोनों हस्तिनापुर में मिला लिये गये तब से यह कुरु पंचाल कहलाने लगा अर्थात् पंचाल का वह हिस्सा जो कौरवों के अधीन था । (शेष)

REGD. No. A. 308.

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जिल्द २९ { सेप्टेम्बर १९०७ } संख्या ९

विषय सूची।

पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

॥ श्रीः ॥

हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ संं० ९ } प्रयाग { सेप्टेम्बर सन् १९०७ ई०

हमारे में मुल्की जोश क्यों कर आवे ?

हम लोग समाज संशोधन की अनेक चेष्टायें करते हैं, लम्बे २ लेख लिखते हैं, घंटों तक लेक्चर झाड़ा करते हैं, दूध मुहे बालकों को व्याहने की कुरीति और खान पान की कैद को उठाने की बहुत सी फिकिर किया करते हैं, क्लब कमेटी और सभायें स्थापित करते हैं, धरम धरम पुकारते हुये सनातन के क्रम पर चलने को और वेद के समय के ऋषियों के क्रम का अनुसरण करने को लोगों से प्रार्थना करते हैं, सो सब इसी लिये कि हमारे में मुल्की जोश आवे और आंख खोल देखैं कि हम क्या के क्या हो गये ! "कोउ नृप होहि हमें का हानी । चेरी छोड़ न होउब रानी ॥" इस दोहे को गढ़ने वाले ने न जानिये किस कुसाइत में गढ़ा कि इसका असर हम पर भर पूर व्यापा । सैकड़ों वर्ष तक हमें मुसल्मान रौंदते रहे अब सात समुद्र के पार से आय अंगरेज़ हमें अपने चंगुल में किये काठ की पुतली सा जैसा चाहते हैं वैसा नाच नचाते हैं, सोने का घर मिट्टी में मिल गया, दाने२ को तरसने लगे पर गुलामी की आदतों का विसर्जन न हुआ—"चेरी छोड़ रानी न बने पर न बने ।" नाहक हम खान पान के क्रम के तोड़ने तथा अनेक कुरीतियों के हटाने की कोशिशें कर रहे हैं उनसे जो हम चाहते हैं कि हम में जोश पैदा हो सो कभी

न होगा। जोश आजाने पर ये सब बातें जो हमारी तरक्की की बाधक हैं आप से आप दूर हो जांयगी। दरिया की बाढ़ जब आती है तो रास्ते में जो कुछ आ जाता है सब बहा ले जाती है। विचार इस समय यह किया जाता है कि वह बाढ़ क्यों कर आवे। रग रग शिथिल और ढीली पड़ गईं उनमें गुलामी का ज़हर पैठ गया है, शरीर की असंख्य नाड़ियों में एक में भी गरमी बाकी न रही, कुछ भी आगे बढ़ने का मन करो तो कहीं धर्म आड़े आता है, कहीं कहीं समाज की भांत २ की कैद हमें रोक देती है, कदाचित् धर्म और समाज की कैद दोनों को दर गुज़र कर कुछ करते तो चतुर लोगों ने अपने शासन की चतुराई से हमें ऐसा निःसत्व और निःसार कर डाला कि पेट को लला रहे हैं तब किसी व्यवसाय में लग किसी दूसरे देशी भाई के लिये उदाहरण हो रास्ता भी नहीं खोल सक्के। अस्तु धन का देश में अभी भी टूटा नहीं है तो सर्व साधारण में अभी तालीम की इतनी कमी है कि किसी के मन में धसता ही नहीं कि हम क्या बक रहे हैं। उन्हें इस दास्य भाव के कीचड़ में पड़े २ लोटना ही भावता है "ये गांहक करबीन के तुम लीन्हीं कर बीन।" पालिटिक्स और प्रसिद्ध २ ऐतिहासिक घटनाओं के सिद्धान्त का निचोड़ जिसे आप मुल्की जोश के नाम से पुकारते हैं वह आप इनमें पैदा कर दिया चाहते हैं सो कैसे सम्भव है। अधिकतर जन समूह आप के देश का कैसा है इसे भी कभी आपने खयाल किया है। तब ये रामागाती वाले तुम्हारी गूढ़ बातों को क्या समझेंगे और नहीं समझते तो इसमें इनका क्या अपराध इनको शिक्षित करने की चेष्टा आपने कब किया है। तो जान पड़ा कि तालीम ही एक मात्र इनको जोश दिलाने का मुख्य द्वार है। पर तालीम इनकी पुरानी बात और पुराने खयालों को हटाने को ज़हर के समान होगी सो इसका हमें कुछ पछतावा नहीं है। इन का Regeneration नया जन्म तभी होगा जब इनको सुशिक्षा का सुधापान कराया जायगा। Practically twice born वास्तविक द्विजाति या द्विजन्मा ये तभी होंगे जब इनमें तालीम की बरकत पहुंचेगी। पुराने क्रम में रह ये ब्राह्मण और क्षत्री होने का

अभिमान चाहो भले ही करें पर असलीयत में ये सब के सब शूद्र हैं—सहानुभूति, भ्रातृ स्नेह का उदार भाव, देश के लिये Sacrifice of self interest अपने बड़े से बड़े लाभ का त्याग Straight forwardness in all his dealings अपने सब कामों में सब तरह के लेन देन में स्वच्छन्दता और चोखा पन, और सब के ऊपर आपस का एका, देश भर के लोगों को अपना भाई मानना, देश की सेवा अर्थात् जिसके करने से अपने देश और अपनी जाति का कल्याण और उद्धार हो उसे बड़ा धर्म मानना; इत्यादि सुशिक्षा के फल हैं। सुशिक्षित प्राचीन क्रम के ढकोसलों और आभास मात्र की हिन्दुआनी को चाहे घिनांय पर ऊपर कहे श्रेष्ठ गुण उन में बहुधा पाये जाते हैं। हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि जितने तालीम याफ़्ता अंगरेज़ी पढ़े होते हैं सभी इस तरह के हैं कितने उन में के महा पतित और अत्यन्त अनार्यशील हैं। तौभी अधिकांश उनमें ऐसे हैं जिनमें उत्तम उत्तम गुणों के Germs अंकुर पाये जाते हैं। प्राचीन क्रम मे पुरानी लीक आंख मूद पीटते जाना ही धर्म है। हम इस लीक पीटने को कैसे धर्म मानै इस लिये कि जो धर्म के मार्ग पर चलने वाले हैं उनकी हानि यां कोई बुराई नहीं होती; तब जो उसके करने से हमारा नित्य २ ह्रास और क्षीणता होती गई तो उस आभास मात्र के धर्म को हम अधर्म ही कहेंगे। पुराने क्रम में डूब कर देखो तो आचार्यों ने धर्म उसी को ठहराया है जिसमे हमारे मे एका हो जिस काम से समस्त देश को लाभ पहुंचता हो; पर हमारा निज का लाभ उससे नहीं बरन नुक़सान है उसी को उन्होंने धर्म माना है। इस समय के प्रचलित पुराने क्रम मे एका की जड़ कट रही है अपना निज का किसी तरह का फाइदा होता हो समाज या देश को बड़ा भारी धक्का पहुंचता हो तो उसकी कभी भी परवाह न करेंगे। विदेशी शासन कर्ता अपने लोगों की इस स्वार्थ बुद्धि की कद्र्यता का पूरा फाइदा उठा रहे हैं। चुग्घी देने के हौल पर गवर्नमेंट के कर्मचारी गवर्नमेंट के संबन्ध की बातों में ऐसा चारा सा छितराते हैं कि हम सब के सब उस पर टूट आपस में कट मरते हैं और देश को रसातल में झोंके देते हैं।

पुराने क्रम में धर्म का सर्वस्व केवल खाने पीने में आटिका है इस खान पान की क़ैद में जकड़े हुये हम देश के बाहर पांव नहीं निकाल सकते और २ देश वाले हमारी इस बेअकली का फाइदा भरपूर उठा रहे हैं। जितने काम जितने बड़े २ अधिकार सबों में अपना पांव जमाते गये हम सब तरह हेठे होते गये और होते जाते हैं। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा सबेरे का भूला सांझ की भांत हम इस कैद को ढीला कर बाहर पांव निकालें और मुलकी जोश को मन में स्थान दें तो बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

पहले के ऋषियों ने जात का क्रम गुण कर्म के अनुसार चलाया था जिसमें लोग अपना २ काम करते हुये देश की सेवा में तत्पर रहैं। पीछे वेही गुण कर्म नसलों में बंट गये तब यह हुआ कि ब्राह्मण का बालक ब्राह्मण क्षत्रिय का क्षत्रिय वैश्य का वैश्य और शूद्र का शूद्र हो । इनमें कर्म से नीचे वाले ऊपर को भी चढ़ जाते थे और ऊपर वाले ब्राह्मण क्षत्री अपना काम न करने से घटते २ शूद्र हो जाते थे पर खान पान सबों का एक साथ होता था। इस तरह विभेद न था कि एक २ जाति के सैकड़ों टुकड़े हो गये और एक दूसरे के घर पानी तक पीने में सकुचाता है। इस टुकड़े २ हो जाने का फल यह हुआ कि आपस की सहानुभूति जाती रही। भ्रातृ भाव न रहा, सब लोग अपना Personal interest निज का लाभ देखने लगे, कौमीयत का जोश कहीं नाम मात्र को भी न बच रहा। तब कौन इसे धर्म कहेगा। जिसे कुछ भी समझ है और अपने देश के उद्धार की चोट है वह इस तरह के क्रम को समाज को जर्जरित करने वाला महा अधर्म कहेगा। अस्तु इसमें भी यह धींग धींगा कि पतित से पतित काम कर डालो खान पान की चौकसी रक्खो तो आप के हाड़ में फ़र्क़ न आवेगा। अब इस तालीम के ज़माने में ऐसी २ बेअक़ली की बातों की पाबन्दी सुशिक्षित मण्डली न कर खान पान मे किसी तरह धर्म की हानि नहीं मानती। सत्य पर दृढ़ता साहस, स्थिरता, अध्यवसाय, अपने देश के लिये जान तक चाहे चली जाय तब घुने दिमाग़ वाले पुराने लोगों के क्षुद्र स्वार्थ किस गिनती मे हैं। जब हमारे चारो ओर जितनी कौम हैं उनमें खान पान की क़ैद न होने से सब ओर अपना अधिकार

जमा रही हैं और हमें अहमक बनाते हुये हमें दबाये लेती है तब हम खान पान में धर्म की हानि समझ संकुचित होते जांय यह कहां की अकिलमन्दी है। इस तरह के धर्मधुरीण होने से तो देश के लोगों के साथ खान पान जारी कर अधर्मी और पापी होना अच्छा है। यह निश्चित है कि जब तक हम पुराने लोगों के इस तरह के जाल में पड़ पिसते रहैंगे तब तक कभी भी तरक्की न करैंगे न हमारे में भ्रातृभाव तथा मुल्की जोश पैदा होगा। दुनियां के हर एक मुल्कों की तवारीख़ गवाही दे रही है कि किसी क़ौम ने तरक्की तभी की है जब उसमें क़ौमी जोश आया है और जब तक क़ौमी जोश रहता है तब तक उस क़ौम के आदमी ज़िन्दा दिल रहते हैं। उस समय उनकी जितनी बातें जितने खयालात सबों में ज़िन्दा दिली की झलक रहती है उसी के अनुसार चलने से लोग मुर्दा दिल नहीं होने पाते। हमारा वेद ऐसे ही खयाल की पुस्तक है उसमें कहीं ऐसी बातों को धर्म नहीं माना जो क़ौमीं जोश पर कुठाराघात कर रही हैं।

भ्रातृभाव।

यह वह पवित्र भाव है जिसके पैदा हो जाने से बड़े से बड़ा काम सहज में हो जाता है। इसी के न रहने से आज यह भारत परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ा हुआ अनेक दुःख झेल रहा है। भ्रातृभाव के अभाव का दूसरा नाम फूट है जो महाभारत के समय से आज तक चली आ रही है। न जानिये किस कुसाइत से फूट का बीज अंकुरित हुआ है कि बराबर इसका पेड़ पुष्ट होता गया और इसकी जड़ दृढ़ होती गई। जैचन्द ने पृथ्वी राज के साथ इसी फूट का फल चख यवनों को यहां बुलाया। अगर एक छोटे बालक से भी पूछा जाय कि भाई का रिश्ता कैसे पैदा होता है तो वह भी कह देगा कि एक मा बाप के होने से और एकही मा का दूध पीने से परन्तु भारत के प्रधान धर्माध्यक्ष बड़े२ बुद्धिमान् लोग इस बात पर कम ध्यान देते हैं। नहीं तो कोई कारण नहीं है कि हिन्दुस्तान ऐसी शोचनीय दशा मे रहता। यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों के मन मे यह भाव

उत्पन्न हो जाय कि उनका साधारण पिता एक वही सृष्टि करता परमेश्वर है; चाहो उसे राम कहो या रहीम; अल्लाह कहो या ईश्वर और भारत भूमि उनकी माता है; उसी के पेट से दोनो पैदा हुये हैं; उसी के स्तन का दूध सदृश अन्नादि अनेक बस्तु हमें मिलती हैं जिनसे हमारा शरीर पलता पोखता है और जो भाई का रिश्ता हिन्दू और मुसलमानों में हज़ार वर्ष से चला आ रहा है तब कोई कारण नहीं मालूम होता कि वह रिश्ता आज बिल्कुल भुला दिया जाय। यह प्रकृति का एक नियम सा हो गया है कि भाई लोग बड़े होने पर जब अपना बन्दोबस्त अपने आप करने लायक हो जाते हैं तो एक साथ नहीं रहते और अलग २ दूसरे २ ढंग में लग जाते हैं। संभव है ऐसी दशा मे दोनों में विरोध हो जाय किन्तु याद रहे ऐसे झगड़ों के दूर करने का समय भी आता है। विलायत मे रोमन् केथोलिक और प्रोटेसटेंट दो भाई कितना अलग २ थे सोलहवीं शताब्दी तक दोनो का इतना बैर बढ़ गया था कि एक दूसरे को जीता जला देते थे पर यह द्वेष तभी तक था जब तक भाई २ मेंआपस का मामिला रहा। जब १५८८ में स्पेन का Armada बेड़ा इंगलैंड पर आया तो रोमन केथोलिक और प्रोटेसटेंट दोनो ने यह खयाल किया कि अब यह आपस का झगड़ा अलग कर देना चाहिये। अगर स्पेन जीत गया तो हमारा देश परतंत्र हो जायगा। यह समय हमारी मातृ भूमि पर विपत्ति का है यह विचार कर अपने देश की रक्षा के लिए दोनों मिल गये और स्पेन के आरमेडा को परास्त कर संसार को दिखा दिया कि आपस में कितना भी झगड़ा हो पर मातृ भूमि के उद्धार का जब प्रश्न आ उपस्थित हो तो दोनों भाई का धर्म है कि कटिबद्ध हो दोनों आपस के छोटे २ झगड़ों को भूल जांय। हम यह नहीं कहते कि हिन्दू और मुसल्मान दोनों अपना २ धर्म छोड़ बैठें ऐसा होना कभी संभव नहीं है और कोई इसे अच्छा भी न कहेगा पर हम यह चाहते हैं कि और समय चाहे दोंनों लड़ा करें किन्तु जब उन की माता भारत भूमि की यह दशा आ लगी है कि प्लेग और अकाल आदि अनेक विपत्तियों का घर हो रहा है; जहां एक सप्ताह में ८०००० आदमी तक मरने लगे हैं; जिससे मालूम होता है कि कुछ दिनों में हिन्दुस्तान

से राम कृष्ण और मुहम्मद के सन्तानों का नाम तक न रह जायगा; जहां पर हिन्दुस्तानियों के हस्ती या नेस्ती का सवाल है वहां इस आपस के झगड़े को दूर बहावें। रामकृष्ण और मुहम्मद इत्यादि के सन्तान; उन २ अपने बड़ों के नाम पर इस भारत भूमि के उद्धार में तत्पर हो जांय। इसे सब लोग स्वीकार करते हैं कि प्लेग दरिद्रता की बीमारी है जब तक देश से दरिद्रता न दूर होगी तब तक प्लेग शान्त नहीं होगा। पर याद रहे दरिद्रता तभी दूर होगी जब हम लोगों में आपस की फूट दूर होगी। जब हमें यह खयाल होगा कि जो काम हम करते हैं वह करोड़ों आदमियों के लिये करते हैं; जब हम इस शब्द में ह से हिन्दू और म से मुसलमान सब लोग समझने लगेंगे। हमारे प्रतिपक्षी यही चाहते हैं कि हम लोग सदा अलग २ रहें जिसमें जब चाहें तब इस दाल को हम पीस बेसन तैयार कर लिया करें। पर याद रहे यह चना दो दाल में तब तक कभी नहीं बट सकता जब तक कि इत्तिफाक का छिलका मौजूद है उस छिलके में घुन लगने ही से यह चना बढ़ नहीं सकता और जल्द चक्की में पिस जा सकता है। इस लिये उचित है कि आपस के इत्तिफाक छिलके को मज़बूत रक्खें। जो काम इत्तिफाक के साथ किया जाता है वह काम लोहे के चने की तरह मज़बूत हो जाता है। ऐक्य में परमेश्वर रहता है एका के साथ जो काम किया जाता है उस में ईश्वर सहायक होता है। अंगरेज़ी में कहावत है। God helps those who help themselves आरमेडा की लड़ाई में आंधी से अङ्गरेज़ों को मदद मिली थी। हिन्दुस्तान को इसी इत्तिफाक की इस समय ज़रूरत है। सच पूछो तो हम अन्य देशों की सभ्यातिसभ्यजातियों से किसी बात में कम नहीं हैं कम हैं तो एक इसी बात में कि आपस में ऐक्य नहीं है। जिस्के न होने से हमारे सब उत्तमोत्तम गुण फीके हैं। "सबै अलोना लोन बिन" और भ्रातृ स्नेह उस एका के पुष्ट करने को मानो स्वाती का बिन्दु है पहले आपस में भाई का सा प्रेम आवेगा तब एका आप से आप हो जायगा।

रहस्य विहारी लाल शुक्ल

काम की बातें।

स्वाधीनता—How happy is he born and taught.
That serveth not another's will,
Whose armour is his honest thought;
And simple truth his utmost skill. Wolton.

उस मनुष्य का जन्म और शिक्षा धन्य है जो किसी दूसरे की इच्छा का दास नहीं रहता; जिसका साथी अपने शुद्ध विचार हैं और जिसकी चतुराई अपनी निष्कपट सत्यता में ही है।

सन्देह—If you suspect a man, do not employ him;
If you employ him, do not suspect him. Confucius.

यदि तुम्हें किसी मनुष्य पर सन्देह है तो उसे नौकर न रक्खो, और यदि उसे नौकर रखते हो तो उस पर सन्देह मत करो।

शिक्षा—Education is the fairest thing that the best of
men can ever have. Plato.

सब से श्रेष्ठ वस्तु शिक्षा है, जिसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मनुष्य सब समय प्राप्त कर सकता है।

अविद्या—Ignorance is the Curse of God;
Knowldge is the wing where with we fly to heaven. Shakespeare.

अविद्या ईश्वर का श्राप है और विद्या स्वर्ग में उड़ कर जाने को पंख है।

प्रेम—To love is nothing unless to live is to
Know Him by whom we live. Ruskin.

प्रेम कुछ नहीं है, यदि हमारे जीवन का अभिप्राय उस के लिये न हो जिसने हमें जीवन दिया है।

जीवन का अर्थ—To live for others, to suffer for others is the inevitable condition. of our being. To accept the candition gladly is to find it crowned with its own joys, west cott.

हमारे जीवन का प्रयोजन यही है कि हम दूसरों के लिये जियें, दूसरों के लिये दुःख उठायें। इस शर्त को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करना ही इस उद्देश्य को पूरा करना है।

दृढ़ संकल्प—Resolve to perform what you ought and perform without fail what you resolve. Franklin.

जो कुछ तुम्हारा कर्तव्य है उसे पूरा करने के लिये दृढ़ संकल्प हो और जिसके लिये दृढ़ संकल्प किया हो उसे अवश्यमेव पूरा करो ।

सत्यता—Truth is the highest thing a man can Keep. Chancer.

Be Virtnous-Bereligious,—be a good man Sir W. Scott.

मनुष्य के रखने योग्य सत्यता सब से बड़ी वस्तु है ।

धर्मपरायण होनेही से तुम भले मनुष्य होगे ।

सुख में बाधा—What deprives us of happiness ? Pride and Avarice, selfishness and Ambition.

Sir A. Lubbock.

कौन सी वस्तु ऐसी है जो हमें सुख से विमुख रखती है ? घमंड, लालच, स्वार्थपरता और ऐश्वर्य कांक्षा । खन्ना ॥

भैरवी ।

लजपत सम अस को नर होइहै ॥

को स्वदेश हित संतति सम्पति प्यारे मित्र गवैंहै ।

निज जननी सम जन्मभूमि को छोड़ "मांडले" जैहै ॥ लज० ।

आतम गौरव वृटिश जाति को अस को पुरुष दिखैहै ।

सिंह सदृश को निज बाणी ते सोवत बन्धु जगैहै ॥ लज० ।

को निर्भय ह्वै व्यथा देश की भारत राज सुनैहै ।

वृटिश राज के शुद्र न्याय से ताको फल यह पैहै ॥ लज० ।

जो कोई नर वीर लाजपत के मारग पर जैहै ।

सोइ गारत आरत भारत को सांचो भक्त कहैहै ॥ लज० ।

अरु स्वतन्त्रता नष्ट, देशमें जो नर फिरउपजैहै ।

"माधव" कहत धन्य या जग में अंत स्वर्ग पद पै है ॥

लजपत सम अस को नर होइ है ॥

मानुषी इच्छा ।

सम्पूर्ण देश पटु शिक्षित सौम्य धीर ।
निर्द्वेष धार्मिक सुशील शुचि प्रवीर ॥
आबाल वृद्ध बनिता निज कर्म चारी ।
आलस्य स्वारथ विहीन रहे सुखारी ॥ १ ॥
विविध रत्नमयी क्षिति भारती-
दुख दरिद्र रुजा जड़ता हरै ।
सकल संतति होंहिं कुशाग्रधी-
स्वगत हस्त निबन्धनता लहै ॥

धर्म कर्म देश प्रेम जड़ से निःशेष भयो बीरता विहीन भूमि क्षीन हुई जाती है । आलस अविद्या द्वेष राग बहुमान मत्सर जेती बुराई सबै जन जनमे दिखाती है । अन्न धन गोरस घट्यो ताषै डांट टिक्कस की मर २ अभागी प्रजा दिवस बिताती है । लाखों लाख दीन जन प्लेग के अहार होहिं भारत की दशा देख छाती फटी जाती है ॥

मा० प्र० शुक्ल—प्रयाग

हम इसी लिये जन्मे हैं ।

हम इसी लिए जन्मे हैं कि गुलामी का बस्ता सिर पर लादे हुये देवाधिदेव श्वेताङ्ग महाप्रभुओं की घुड़की झिड़की और पदाघात सहते रहैं । आपस के विरोध में अपना सर्वस्व समर्पण कर दाने २ को तरसते हुये भिखारी बन बैठैं । बार २ धुतकारे जाने पर भी मांगना न छोड़ैं । बहुत २ गिड़गिड़ाने पर जो कभी को आधा टुकड़ा पा जायं तो अपने को बड़भागी होने की सीमा मान लें और उस महा प्रसाद के घमंड में फूले न समायं । और भी दूधमुहों को व्याह अपनी फूटी आंख का सुख देख जन्म सफल कर मानैं; हतवीर्य, हतोत्साह, पुरुषार्थ विहीन, परभाग्योपजीवी; गीदड़ सी सन्तान पैदा कर भाग्यशालियों की प्रथम श्रेणी में अपने को गिनने लगैं । तात्कालिक थोड़े से फाइदे के लिये परिणाम में

होनहार बड़े लाभ पर दृष्टि न रख स्वार्थ से विमुख न हों। तीसरा कोई चपतमार चाहो सर्वस्व अपहरण कर ले पर हमारा भाई हम से कुछ न पावे। हम इसी लिये जन्मे ही हैं कि अदालत के कानूनों में हिन्दी की चिन्दी और उसकी बारीकियां हमारी आपस की फूट का खातिरख्वाह फाइदा उठावें। धर्म धुरीण हो घर के बाहर पांव न निकालें। आंख में पट्टी बांध तहखाने के भीतर बन्द पड़े रहैं। काम हमारे चाहो जैसी अनार्यता के हों पर हम आर्यबंशी हैं इस घमंड में फूले न समायं। हम न जन्मे होते तो झूठे दगाबाज़ फरेबी इत्यादि निकृष्ट से निकृष्ट करज़ोनियन उपाधि को कर्ज़न साहब फिर कहां चरितार्थ करते। गुलामी की कदर दुनिया से गायब हो जाती इस रोशनी के ज़माने में तारीकी को ठहरने के लिये कौन जगह देता। "तुद्रेपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव"। इत्यादि अपने जन्म की सफलता पाठकों को कह सुनाया यह उदाहरण मात्र है ढूढने से और भी मिल जायंगे।

सिक्ख धर्म का संक्षिप्त इतिहास।

पहले के आगे से

गुरू तेग़बहादुर जी की साखी।

गुरू तेग बहादुर सम्वत १६६९ ईस्वी में पैदा हुये। ये छठवें गुरू हरगोविन्द जी के बेटे थे और अमृतसर में रहा करते थे। गुरू हरगोविन्द जी के पीछे गद्दी उनके बेटे हर राय जी और हर राय जी के पश्चात् हर किशन जी को मिली। गुरू हरिकृष्ण जी ८ वर्ष की अवस्था में सुरधाम सिधार गये और उन के उपरान्त गुरू तेगबहादुर जी सम्वत् १७८१ में ५२ वर्ष की उमर में गुरू बने। उस समय गुरुआई के दावेदार कई लोग थे जिनमें रामराय सातवें गुरू के बेटे शाही हिमायत में हो दिल्ली में रहते थे। रामराय को देहली के बादशाह ने एक बहुत अच्छी जागीर देहरादून के इलाके में दी थी। जिसका एक हिस्सा अब तक उनकी औलाद के पास है।

गुरू तेगबहादुर के साथी सब मक्कार और ज़मानेसाज़ लोग थे । उन खूबियों या उत्तम गुणों में से उनमें एक भी न थे जो संसारिक लोगों के चित्त पर असर पैदा कर सक्ते थे । वे सब गुरुआई की गद्दी तो चाहते थे पर गुरू बनने की ज़िम्मेदारी से न तो वाकिफ़ थे न वाकिफ़ होने की कोशिश ही करते थे । उस समय शाहजहां अपने बेटे औरङ्गज़ेब से तख़्त से उतारा गया और क़ैद कर लिया गया था । औरंगज़ेब दीन इसलाम का कट्टर पैरोकार तअस्सुब से भरा हुआ हिन्दुओं को दुःख दे मुसलमानों की दिलजोई कर रहा था । इस अत्याचारी ने न जानिये कितने पुराने हिन्दू देवस्थान और मन्दिरों को ढहा उनके जगह मसजिदें बनवा दीं । तीर्थों में यात्रा करने वालों पर टिकस कायम किया । प्रत्येक हिन्दुओं पर जज़िया का कर लगाया । हिन्दू बादशाही नौकरी से बरतरफ़ किये गये और इस सब का यही मतलब था कि हिन्दू अपना धर्म छोड़ मुसलमान हो जायं । यह आज तक प्रसिद्ध है कि औरङ्गज़ेब सवामन जनेऊ उतरवाय कर खाना खाता था । यद्यपि इस में बहुत अधिक अत्युक्ति है तौ भी यह कहां तक मुबालिगा हो सकता है । इस में सन्देह नहीं सैकड़ों और हज़ारों हिन्दुओं को वह प्रतिदिन मुसलमान करता था । जिस ने अपने बाप को क़ैद कर लिया और भाइयों को कतल करवा डाला उससे हिन्दुओं को कितना दुःख पहुंचा होगा सिर्फ़ ख़याल करने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

गद्दी पर बैठने के थोड़े दिन पीछे गुरू तेगबहादुर तीर्थ यात्रा को निकले और पश्चिम के समस्त तीर्थों में घूमते फिरे जहां गये वहीं हिन्दुओं पर मुसल्मानों को घोर अत्याचार करते पाया । तीर्थ यात्रा के लिये जाना बिलकुल मना था जब तक रुपये की एक भारी रकम यात्री से न लेली जाय । शहरों में हिन्दुओं के तेहवार बन्द थे और सब से ज़ियादह बुराई यह थी कि पक्षपाती मुसल्मानी अफ़सर बादशाह के हुक्म को अपने फाइदे के लिए दसगुना कर दिखाते थे, अत्याचार की हद्द न थी । खुलासा यह कि गुरू तेगबहादुर को इस यात्रा में अत्याचार की ऐसी २ दुर्घटनायें मिलीं कि इन का जी हिल गया और उन्हें खुद ऐसी २ मुशकिलें पेश आईं कि उन का जी व्याकुल हो गया ।

यात्रा से लौट उन्हों ने एक स्थान पसन्द कर सतलज के किनारे बसाया और उसका आनन्दपुर नाम रक्खा। अमृतसर को बदल इसी को उन्हों ने अपना निवास स्थान निश्चित किया। इसी जगह एक दिन जब कि सारी संगत एकत्र थी पांच सात मनुष्यों ने उठ कर और हाथ बांध कर उन से निवेदन किया कि महाराज हिन्दुओं पर बड़ा अत्याचार हो रहा है। ऐसे २ अन्याय हो रहे हैं जो देखने में तो क्या सुनने भी नहीं आये। राजा जिसका धर्म सारी प्रजा को एक दृष्टि से देखना है सो पक्षपाती हो रहा है। नीच से नीच और पापी मुसल्मान भले से भले हिन्दू की अपेक्षा अच्छा है। मुसल्मान चाहो जैसी ज़ियादती करें उनके मुखालिफ़ या विरोधी की सुनाई नहीं है। साधु और ब्राह्मण दुखी हो रहे हैं, जगह २ असंख्य गौयें काटी जाती हैं तो अब आप ऐसी कृपा करें कि इस से निस्तार पावैं। आप से बढ़ कर महात्मा और उपकारी हमें कोई दूसरा नहीं देखने में आता इस लिये इस काम में आप की सहायता आवश्यक है।

यह सुन गुरू तेगबहादुर चुप रहे और चित्त में यह ठान लिया कि अब वह समय आरहा है जब कि इन यवनों के अत्याचार में बिना अपने को बलि चढ़ाये काम न सरैगा; अपना बलि प्रदान इस समय बड़े फ़ाइदे का है। इन अत्याचारों के रोकने की दूसरी कोई तदबीर हई नहीं। यह सब सोच विचार बोले, "करतार के भक्तों को दुःख और शोक तथा भांत २ की विपदायें झेलनाही पड़ती हैं किन्तु जब वे विपदायें मर्यादा के बाहर हो जाती हैं तो वाह गुरू आप ही उसका उपाय पैदा कर देते हैं। हां परंपरा से इस आर्य भूमि में सज्जनों की यही रीति रही है कि जब कभी पाप और उपद्रव अधिक फैल जाते हैं तो कोई प्यारी वस्तु बलिदान देते हैं बिना बलिदान दिये पीड़ा न घटैगी।"

गोविन्दसिंह जी उस समय पिता के पास बैठे थे और हर एक शब्द जो उनके मुख से निकलते थे ध्यान से सुन रहे थे। उनकी अवस्था इस समय १८ वर्ष की थी परन्तु इसी उमर में उन में दूरदर्शिता और उत्साह भरपूर आ गया था जो पीछे से उनके बड़प्पन के हेतु हुये। हाथ

जोड़ बोले—"महाराज सिक्खों के लिये आप से बढ़ कर प्यारी वस्तु और क्या होगी।"

सत्संग के बूढ़े लोग नई उमर के बालक की उमंग से भरी ये बातें सुन दंग हो चुप कर रहे और तेगबहादुर जी भी थोड़ी देर तक कुछ न बोले वरन अपने नौ जवान बेटे के इन सत्य वाक्यों का अपने सोचे समझे विचारों से मुकाबिला किया तो तनिक भी उस में अंतर न पाया। थोड़ा ठहर बोले कि कर्तार के भक्तो तुम लोग बादशाह और अहलकारों के कान तक यह समाचार पहुंचा दो कि इस समय यह गद्दी सब से अधिक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध है; गणना भी इस गद्दी के शिष्यों की बहुत अधिक है और हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त में इस गद्दी की शाखा है। सो यदि उस गद्दी के गद्दीदार मुसल्मान हो जावें तो उनके साथ एक बहुत बड़ा दल हिन्दुओं का मुसल्मान हो जाय। कहते हैं यह खबर बादशाह तक पहुंचाई गई। और यदि ऐसा न भी हुआ होता तो औरङ्गज़ेब ऐसा चालबाज़ मुल्क की मज़हबी हालत और उनके गुरुओं से बेख़बर नहीं रह सकता। इसके पहले उसने सातवें गुरू को भी दिल्ली में बुलाया था परन्तु उन्हों ने उससे मिलने के पहिले ही समाधि ले ली थी और आठवें गुरू को उसने विशेष क्लेश नहीं दिया सो इस लिए कि वह नाबालिग़ थे तभी सुरधाम सिधार गये। अस्तु यह समाचार पाय उसने नवें गुरू तेग बहादुर को संवत् १६३२ में राजधानी देहली में बुलाया। दरबार में पहुंचतेही पहले तो उसने गुरू साहब की बड़ी प्रतिष्ठा की और साथ नरमी के उनसे प्रार्थना की कि वह दीन इसलाम कुबूल करलें पर जब उन्होंने इनकार किया तो लालच से उन्हें फुसलाना चाहा कि आप को पीर बनने का रुतबा मिल जायगा, सारी बादशाहत भर में तुम्हारी इज्ज़त होगी, और हर तरह पर तुम प्रसन्न रहोगे। परन्तु गुरू तेगबहादुर संसारी प्रतिष्ठा के लिए अपने धर्म को कब बेचने वाले थे, अन्त को औरङ्गज़ेब ने उनसे साफ़ २ कहदिया कि यातो तुम मुसलमान हो नहीं तो कोई करामात दिखलाओ और ऐसा न करोगे तो कतल कर दिये जाओगे। सोच समझ इसका उत्तर देने के लिये उन्हें समय दिया गया

तब तक उनको जेल में रखने का हुक्म हुआ । कुछ दिन वह जेल में रहे वहां उन्हों ने मौत से ज़रा भी डर न प्रगट किया न बलिदान होने के अपने इरादे में झझक प्रगट की । दिन रात ईश्वर के भजन में रहा करते और ग्रन्थ साहब को पढ़ा करते थे । आप भी नये २ शब्द रचा करते थे जो बहुत साफ़ और प्रेम से भरे रहते थे । जो शब्द उन्हों ने बन्दीखाने में लिखे वे बहुत ही पुरजोश थे उनमें के दो एक नीचे देते हैं ।

चिन्ता ताकी कीजिये–जो अनहोनी होय–यह मारग संसार को नानक थिर नहिं कोयं–जो उपजो सो ध्वंस है–भयो आज के काल–नानक हर गुन गाइये छांड़ सकल जंजाल ।

जेल में जब उनसे कहा गया कि मुसलमान हो या करामात दिखलाओ तब उन्होंने निधड़क हो जवाब दिया हम ऐसा न करेंगे पर सिर देने को तैय्यार हैं । अन्त को जब बादशाह को विश्वास हो गया कि अब ये मुसलमान न होंगे न कोई करामात दिखलावेंगे तब उसने उनके कतल का हुक्म भेज दिया । इस हुक्म के आने पर उन्होंने ५ पैसे एक नारियल अपने बेटे गोविन्द सिंह के पास भेजवा दिये जिसका तात्पर्य यह था कि गुरुआई की गद्दी के मालिक अब यही होंगे ।

जिसमें वे क़ैद थे उसमें एक बरगद का वृक्ष था उसके नीचे बैठ यह ईश्वर का स्मरण और भजन किया करते थे । एक दिन प्रातः काल उसी स्थान में जहां यह भजन में आसक्त थे जल्लाद पहुंचा और सहसा सिर को इनके तन से जुदा कर दिया । हिन्दुओं में यह पहिले शहीद थे जिन्हों ने अपना शरीर धर्म के अर्पण कर अपनी रास्तबाज़ी सत्य पर निष्ठा और धर्म पर अटल विश्वास के साक्षी हुये । इनके साथ एक सिक्ख मोतीराम भी कतल किया गया । इनकी मौत ने हिन्दुओं के दिलों पर एक कड़ी चोट दी । देश भर में हलचल मच गई । कहते हैं कुदरत (प्रकृति) भी इस शोक में शरीक होने से न रुकी उनके कतल के उपरान्त ही ऐसी आंधी आई कि बादशाह समेत सारी देहली में खाक छा गई । यह प्राकृतिक घटना उनके महत्व की सूचक हुई ।

इनके कतलके उपरान्त इनका शरीर उसी जेलखाने की कोठरी मे रख दिया गया और बादशाह को सूचना दी गई कि आप के हुक्म की तामील होगई और कतल किये हुये की देह को दबाने या जलाने का हुक्म मांगा गया। परन्तु औरङ्गज़ेब साधारण मनुष्य न था जो अपने किये पर पछताता। उस्के हृदय में पक्षपात की अग्नि इतनी भड़क चुकी थी कि उस्के बुझाने को सबसे बड़े और महात्मा पुरुष का रुधिर काफी न था सोच विचार उत्तर लिख भेजा कि जो कतल हुआ है वह बादशाह और ईश्वर दोनों का बागी था। फिर जलाना उस्के रसमो की पाबन्दी है और गाड़ना उसे इसलाम के फाइदों को पहुंचना है। इस लिये मुनासिब है जहां उसको लाश पड़ी है वहां ही पड़ी रहे और पड़ी पड़ी सड़ा करे।

जिस दिन औरङ्गज़ेब ने गुरू तेग बहादुर की लाश के बारे में यह हुक्म दिया उसी दिन और उसी समय देहली से १७ कोस पर जङ्गल में एक और फैसला हो रहा था। उनके बेटे गुरु गोविन्द सिंह जी जो उनके गुरू बन गये थे पिता को कैद में पड़ा सुन अपने साथियों के साथ देहली आ रहे थे। बीच में अपने पिता के कतल का समाचार सुन यह आवश्यक हुआ कि उनका शरीर मुसलमानों के हाथ से किसी तरह निकाल लिया जाय। गुरू गोविन्द सिंह की अवस्था इस समय १८ वर्ष की थी। इस छोटी अवस्था में उन्हें गुरुआई की गद्दी के साथ ही साथ बादशाह के जुल्म को सहना और उस जुल्म का बदला चुकाने की उमंग भी दी गई। उसी समय से इनके दिल में कौमी जोश के उफ़ान ने जगह कर लिया और इस चिन्ता में हुये कि कैसे अपने पिता के मृतक देह को मुसल्मानो के हाथ से निकाल लावें। इनके साथके जितने आदमी थे सब गवांर और गरीब थे उन्मे एक भी ऐसा न था जिस्की बादशाह या बादशाह के किसी उमरा तक पहुंच हो। किसी को आशा न थी कि उन्मे से कोई गुरू तेगबहादुर के मृतक देह को अत्याचारी बादशाह के कब्ज़े से छुटा लासकेगा। पर ईश्वर की महिमा अपरंपार है इस काम का पूरा करने वाला एक ऐसी ओर से निकला जहांसे उसके निकालने का संभव न था।

सिक्ख मत के प्रारंभही से गुरुओंने धर्म की शिक्षा में जाति पांति की आवश्यकता नहीं रक्खा गुरूनानक और उनके साथियों से ऊंच वा नीच सब धर्म शिक्षा लेते रहे। नववें गुरू के प्रेम और नम्रता ने नीच जाति के लोगों को और भी अपनी ओर खींच लिया जिन्से रङ्गरहटों का एक अच्छा समूह शिष्यों में था। गुरू गोविन्द सिंह जी बापकी गिरफ़ारी की खबर सुन जब देहली की ओर चलने लगे थे तो दो रङ्ग-रहट सिक्ख भी उनके साथ हो लिये थे और सफ़र में लगातार साथ रहे। ये दोनो रिश्ते में बाप बेटे थे इन दोनों ने हाथ जोड़ निवेदन किया महाराज हम नीच जाति के होने से इस योग्य तो नहीं तौभी आशा रखते हैं कि इस सेवा की इज्ज़त हमे सौपी जाय। गुरू गोविन्द सिंह जी ने उनकी यह प्रार्थना को स्वीकार किया और ये दोनों अपने भाग्य को सराहते चल दिये। इन दोनों को अभी कुछ खबर न थी कि हम किस प्रकार गुरू के शरीर को लावेंगे किन्तु गुरु के चरण पर विश्वा-स रख चल खड़े हुये और पांचही कोस गये थे कि उन्हें एक रथ वाला मिला। बात चीत करने पर मालूम हुआ कि वह पंजाबी है और रथ हांकने पर देहली में किसी रईस के यहां नौकर है और गुरुओं का बड़ा भक्त है। इन दोनो ने उस्से अपने काम में सहायता मांगी यह मनुष्य बहुत दिनों तक देहली में रहने से वहां की हर एक गली कूचों से जान-कार हो गया था। उसने इन दोनों को उस मकान का पता दिया जहां गुरूका मृतक देह रक्खा था उसने यह भी कहा कि यदि आवश्यकता हो तो रथ जिस्पर मैं नौकर हूं गुरू जी की सेवा में उपस्थित है। इस्से इन दोनों को बड़ा सन्तोष हुआ क्योंकि यदि किसी भांत गुरू के देह को मकान से बाहर निकाल भी लावें तो उस्को देहली के बाहर निकाल ले जाना सहज काम न होगा। अब इन तीनोंने यह सलाह गांठी कि दोनो रङ्गसाज़ शरीर को मकान से निकाल लावें और रथवान अपना रथ ले थोड़ी दूर ठहरा रहे। जिस्से देह रथमें डाल दी जाय और तीनो इस बहाने कि रईस के नौकर हैं बाहर जाते हैं लोगों की नज़र बरकाय शहर से निकल चलैं और जब रथ बाहर निकल जाय तो उसे ऐसे रास्ते में जहां आदमियों का आना जाना कम हो ले जाना सहज है।

ये तीनों सूर्यास्त से पहले देहली पहुंच गये। देहली इस समय बड़े रौनक पर थी; उसके बराबरी का शहर दुनियां में न था; वहां का बाज़ार संसार के अद्भुत पदार्थों से भरा था, हर एक मुहल्लों में बड़े२ महल खड़े थे अक्बर के समय से उसकी रौनक बढ़ती ही गई। शाहजहां ने इसकी उन्नति में अधिकतर ध्यान दिया था। निठुर चित्त औरङ्गज़ेब जो शोभा और सन्दौर्य का प्रतिपक्षी था तौ भी शाहजहां के आरम्भ किये अनेक काम बन्द न किये गये। अस्तु देहली का इस समय बाहरी चमक दमक में मध्यान्ह था। यद्यपि इन रंगसाज़ों ने देहली कभी न देखी थी परन्तु इस समय उनकी दृष्टि नतो उन अद्भुत वस्तुओं पर पड़ी न बड़े२ महलों के बनावट इत्यादि पर। सूर्य डूबते २ उस मकान के सामने पहुंचे और देर तक खड़े २ उसे बाहर भीतर से ख़ूब देखा भाला और तब उस गली के एक कोने में बैठ गये। रथवान् उनसे अलग हो गया और अलग होने के पहले वह जगह बतला गया था जहां आधी रात के पीछे रथ लिये अपने दोनों साथियों की बाट जोहता रहेगा।

रात दो पहर बीत गई चन्द्रमा भी छिप गये थे अन्धेरा और सन्नहटा भी ख़ूब छाया हुआ था चौकीदार दरवाज़ा बन्द कर भीतर के एक कमरे में जा सो रहा। ये दोनों मकान के पिछवारे से दीवार पर चढ़ छत पर कूद गये और ज़ीने की राह से नीचे उतर आये। वहां से दबे पांओं चलकर दरवाज़ा खोल दिया और उसी कोठरी में गये जहां गुरू की लाश पड़ी थी जिस्का सिर तन से जुदा था। रथवाले ने रोशनी का सामान उन्हें दे दिया था उसे काम में लाय दिया जलाया और गुरू की मृतक देह सिरसे अलग पड़ी देख दोनों का जी भर आया। पहले लाश के पांवों पर सिर धर प्रार्थना की कि महा राज यद्यपि आपका शरीर कटा पड़ा है परन्तु इसमे सन्देह नही कि आप इस दुष्ट बादशाह को नष्ट कर देने मे समर्थ थे। आप चाहते तो देहली की इस अपवित्र भूमि को छिन्न भिन्न कर यहां दरिया बहा देते आप ऐसे करतार के भक्त क्या नहीं कर सक्ते। आप तो परमानन्द को प्राप्त हो गये यह हमारा मन्द भाग्य है कि हम आपके शान्ति दायक जीवित शरीर को नहीं देखते न

आपका मनोहर उपदेश सुनते हैं। अब कृपा कर हमे इस काम मे सहायता दीजिये। जब बाह गुरू का नाम लै अरदास समाप्त कर चुका तब उस नौ जवान रङ्गसाज़ को खयाल आया कि कल जगने पर चौकीदार लाश को गुम देख बादशाह को खबर देंगे तहकीकात होगी तो सब भेद खुल जायगा। हाय हमारा मकसद पूरा न हो सकेगा। यह खयाल उसके जीमे आई रहे थे कि उस्को इस्की तदबीर भी सूझ आई। बाप से अपने मन की सब बात कह बोला कि मेरी देह इसी प्रकार और इसी जगह डाल दी जाय सो मैं लेट जाता हूं यह मेरी कटार लेकर मेरा सिर तन से अलग कर दिया जाय ताकि चौकीदार जागै तब लाश पड़ी पा कर फ़र्याद न करे। बूढ़े बाप को उसकी यह बात पसन्द आई परन्तु इस्पर वह राज़ी न हुआ कि अपने नौजवान पुत्र से अपनी जिन्दगी अधिक प्यारी समझै कहा। मेरा ही सिर काट लाश यहां डाल दी जाय पर बेटा इसे स्वीकार न करता था। दोनों में देर तक इस पर बहस रही। बूढ़ा बोला मेरा बूढ़ा शरीर गुरू के शरीर से बहुत मिलता है चौकीदार भी मेरा देह पड़ा देख शुबहा न करेगा सिवा इसके तुम जवान हो गुरू जी महाराज की देह को ले जा सकोगे। यह कह बूढ़े ने बेटे को असीस दिया गुरू गोविन्द सिंह जी को मेरा प्रणाम कहना। उपरान्त उसने ग्रन्थ साहब का थोड़ा पाठ किया और कटार से अपना सिर अलग कर दिया। बेटे ने गुरू का देह एक ओर कर अपने बाप का देह उसकी जगह रख दिया शोक के साथ अपने बूढ़े बाप का पांव चूम गुरू का देह कन्धे पर रख चुपचाप दरवाज़े की रास्ता बाहर निकल गया रथ के पास चल पड़ा और गोविन्द सिंह जी के पास जा पहुंचा। वहां से जंगल की रास्ते गुरू का शव आनन्दपुर में पहुंचाया गया और जलाया गया। शेष

कानग्रेस का प्रेसिडेंट कौन हो।

पारसाल की तरह इस साल भी कानग्रेस के सभापति के चुनाव मे गोलमाल मचा है। यह राष्ट्रीय सभा आज २२ वर्ष से हो रही है किन्तु इन दो वर्षों के सिवाय इस विषय पर पहले कभी कुछ गड़बड़ी नहीं हुई

थी, कानग्रेस संबन्धी सब काम सुख पूर्वक हो जाते थे तो अब यहां पर यह प्रश्न उठता है कि यह गड़बड़ी क्यों ? परन्तु इस गड़बड़ी का कारण जानने के पूर्व उचित है कि कानग्रेस का ठीक स्वरूप और इसके सभापति की ठीक हैसीयत का भी विचार कर लिया जाय। कानग्रेस की उत्पत्ति का कारण पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी साहित्य है। जब हम लोगों का लगाव पश्चिमी लोगों से हुआ और उनके स्वतन्त्र राज काज सम्बन्धी ख्यालों की बू हम मे आ लगी तो हम मे भी स्वतन्त्रता के मीठे फल चखने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। सौभाग्य से यह राजकीय स्वतंत्रता हमे उस जाति से मिली जो इस समय यूरोप की सब स्वतंत्र जातियों में अगुआ मानी जाती है और यह भी सौभाग्य ही कहा जायगा कि हमारा ऐसी स्वतंत्र जाति से राजाप्रजा का घनिष्ट संबन्ध हो गया। इनकी राजकीय संस्थाओं की नक़ल ह्यूम साहब ने जो कानग्रेस की बुनियाद डालने वाले माने जाते हैं हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय सभा नेशनल कानग्रेस के नाम से शुरू किया। जिसका उद्देश्य यही है कि हर एक राजकीय विषयों की समालोचना की जाय और राजकीय प्रबन्ध और उसमें सुधार प्रजा के मत के अनुसार हो। अर्थात् राजकीय सत्ता प्रजा के हाथ मे हो और रागकर्मचारियों के कुप्रबन्ध से जो दुःख मिलता है वह प्रजा के मत के अनुसार हटाया जाय। इस राष्ट्रीय सभा का सभापति भी वही मनुष्य चुना जाय जिसमें राजकीय बातों के समझने की पूर्णयोग्यता हो जिसको अपने देश की राजकीय दशा तथा उसके सुधारने का उपाय पूरे तौर पर मालूम हो और उस समय के राजकीय संबन्धी विषयों में बहुमत के समझने का केन्द्रभाग के समान हो। इसकी हैसीयत स्वतंत्र देशों मे राजा प्रेसिडेंट या मंत्री की है। स्वतंत्र देशों मे ऐसे ही की राय के मुताबिक राजकीय प्रबन्ध के सब काम चलाये जाते हैं। तब यह बात निर्विवाद हुई कि कानग्रेस की राय प्रजा की राय है। पछतावा इस बात का है कि जिनके लिये यह सभा लड़ती है वे लोग अपने हक्क को नहीं समझते और सच तो यह है कि कानग्रेस ने उनको समझाने की आजतक कोशिश भी नहीं किया। इसी से ऐंग्लो इण्डियन पत्र

और सर्कार के खुशामदी यह कह रहे हैं कि कानग्रेस प्रजा की प्रतिनिधि नही है। आजतक कानग्रेस ने यह न दिखाया कि हमारे मन्तव्यों के पीछे Public opinion सर्व साधारण के ऐक मत्य का भी ज़ोर है। हम समझते हैं इसी से इसके मन्तव्यों का ख़्याल नहीं किया जाता बरन उलटा यह दोष लगाया जाता है कि सुशिक्षित समाज केवल अपने ही लिये यह आन्दोलन कर रही है। कुछ है भी ऐसा ही क्योंकि यह दोष तो तब न लगाया जाता जब कानग्रेस ने सर्वसाधारण का ऐक मत्य पैदा करने का यत्न किया होता। प्रजा को अपना हक्क पाने के लिये इसके मुखिया लोग उभाड़ते; उन्हे बताते कि हक्क तुम्हारा क्या है और कैसे लेना चाहिये; अमली तौर पर इसमे उनकी मदद करते; उनके दुःखों पर जो कर्मचारियों की स्वार्थान्ध पालिसी से मिल रहा है सहानुभूति प्रगट करते। २२ वर्ष राष्ट्रीय सभा को होते बीत गया सिवा थोड़े से पढ़े लिखों के शेष लोग यह भी नहीं जानते कि अपना हक्क पाना किस चिड़िये का नाम है।

उचित था कि कानग्रेस सर्व साधारण को अपने साथ रखता बहुत लोग बहक कर जो सर्कार की ओर चले गये हैं उन्हें उधर न जाने देता। सर्व साधारण को अपने संपर्क मे न रख उनकी समालोचना करने में उन्हे यह अबतक Dumb inert mass गूंगा बेमुह के समूह कहता रहा। जब तक उनमें इतनी योग्यता नहीं है कि यह जान सकें कि हमारा हक्क क्या है तब तक स्वराज पाने लायक वे कहां हो सक्ते हैं। याद रहे इन वेमुह के समूह मे ऐसा ज़ोर है जिससे सरकार भी डरती है और इसे सुशिक्षित समाज खूब समझती है। इसी वेमुह के लोगों मे असन्तोष जनित मुल्की जोश न पैदा हो इसकी फिकिर गवर्नमेंट को जितना अधिक है उतना इन सुशिक्षितों को अपने हक्कों के लिये चिल्लाने और लिखने पढ़ने की नहीं है। इस Dumb inert mass वेमुह वालों के दल को पढ़े लिखे लोग जबतक अपने पीछे चलने वाले न बनावें गे तबतक स्वराज का हक्क नहीं पासक्के। इसी से तिलक आदि नये दल के अगुआ कहते हैं कि मांगना बुरा नही है जब उसके पीछे लै लेने की भी ताकत हो

और इतिहास सिद्ध करता है कि यह ताकत प्रजा मे रहती है न कि सुशिक्षितों के समूह मे। कानग्रेस में भी आज यही झगड़ा पेश है कि पहले खुद मज़बूत हो जाओ और सरकार को यह दिखला दो कि अगर सीधे २ हक्क न मिलेगा तो दूसरे तरीके से ले लिया जायगा। इसी से नये दल वाले यह प्रयत्न कर रहे हैं कि कोई ऐसा सभापति राष्ट्रीय सभा का हो जो ऊंचे दरजे के लोगों से पुकार के कह दे कि प्रजा को हक्क पाने के लिये हम तैयार कर रहे हैं और अब सब कोशिश कानग्रेस की इसी ओर होगी। नये दल वालों ने "पबलिक ओपीनियन" बनाने का काम शुरू कर दिया है और इसकी कोशिश भी कर रहे हैं कि कानग्रेस उनको इस बात के करने में मदद दे। इसी से वे चाहते हैं कि तिलक सभापति किये जांय जो कानग्रेस की पालिसी को बदल दें और जो उद्देश्य इसका है उसमे सफलता हो। तिलक महोदय इसके सभापति न हुये तो इससे यह न समझ लेना चाहिये कि उनके सिद्धान्तों के अनुसार चलने वाले लोग नहीं हैं। उनके सिद्धन्तों को प्रजा मे फैलाने की आवश्यकता है और यह काम नये दल वालों को करना होगा और कर भी रहें हैं जिसको गवर्नमेंट विरोध करना मानती है। नये दल वाले चाहते हैं कि कानग्रेस विश्वास रूपी जादू से छुटकारा पावे और नई पालिसी को स्वीकार करे पर नरम दल वाले इस विरोध पैदा करने वाली रास्ता पर नही चला चाहते सरकार की ओर से उनका विश्वास अभी भी नही टूटा। वे यह कैसे मानलें कि इतने दिनों तक हम भूल करते आये। उन्हे चाहिये हठ छोड़ तवारीखों के दिखाये मार्गपर चलैं। प्रजा सत्तात्मक राज्य तभी कहा जा सकेगा जब कानग्रेस नये दल के सिद्धान्तों पर चलेगी। जब सरकार बार२ अपना भयानक रूप प्रकट कर रही है तब भी उसके न्याय पर विश्वास किये रहना निरी कायरता है हां यंह अलबत्ता क्रम की बात है कि अनुचित काररवाइयों से अपने को बचाये रहें।

कानग्रेस का उद्देश्य प्रजा प्रतिनिधि शासन स्थापित करने का होकर भी यदि इसके नरम दल वाले अगुआ अपनी पालिसी न बदलें तो यह उनकी भूल है। जब गवर्नमेंट का यह मतलब है कि हिन्दुस्तान सदा

इंगलैंड के आधीन रहे और उसके हाकिमों की सत्ता रत्ती भर भी न घटै बरन दिन दूनी बढ़ती जाय तो कैसे विश्वास हो कि कानग्रेस जिसका उद्देश्य राजकीय सत्ता प्रजा के हाथ मे लाना है बिना सर्कार के प्रतिकूल किसी अंश मे हुये एक सीढ़ी आगे हम चढ़ सकेंगे । हिन्दुस्तानियों का कौमी जोश सर्कार की स्वार्थान्ध पालिसी से बिना टक्कर खाये कब तक रह सक्ता है । तो उचित यही जान पड़ता है कि यह राष्ट्रीय सभा खुल कर अपने विचार प्रगट कर दे। इसके नरम अगुआ इस ख्याल को कानग्रेस मे आने से रोक भी नहीं सक्ते क्यों कि जब यह राष्ट्रीय सभा है तो सदा उन्ही के मार्ग पर यह नहीं चल सक्ती। कौम का राजकीय विषयों में झुकावट का क्रम सदा बदला करता है और इसका ऐसा होना कौम की तरक्की की पहिचान है। इतिहासों मे कोई उदाहरण नहीं मिलता कि किसी कौम ने सदा एकं ही रास्ते पर चल कर उन्नति की हो। पराधीन राज्य की पालिसी तो सदा इसके विदेशी शासन कर्ताओं के शासन के साथ बदला करती है। गवर्नमेंट ने साफ २ कह दिया कि यदि अपना भला चाहते हो तो हमारा मुह न जोहा करो हम तुमको अपना वशंवद रक्खेंगे और ऐसा करना उचित भी है क्यों कि उसके पास आज दिन सत्ता है अपनी गाढ़ी मेहनत और खून बहाकर हिन्दुस्तान लिया है इतने पर भी हमे भिक्षुकी वृत्ति कायम रखना भूल है । पर यह भूल बहुत दिन न चलैगी । क्योंकि इस भूल को दूर करने वाले लोग चारो ओर काम कर रहे हैं । बहुतों के दिलों से यह भूल मिट गई है और मिटती जा रही है । अब इस समय राष्ट्रीय सभा का सभापति ऐसा ही होना चाहिये जो अपने देशी भाइयों को वर्तमान् शासकों के न्याय और विश्वास के जादू से छुटकारा करा दे और उनको भूल की राह से अलग कर नये दल वालों के रास्ते पर लावे जिसमें वे अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करें । और यह तभी सम्भव है जब तिलक सभापति हों ।

मदनमोहन शुक्ल

श्री जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य का चित्र ।

यह चित्र राजा रविवर्मा निर्मित भगवान् शंकराचार्य की मूर्ति का बहुत उत्तम रूप मे प्रकाशित किया गया है। संग्रह के योग्य है। शंकर मतानुयायी के लिये तो हमारी समझ मे यह एक बहु मूल्य वस्तु है। मूल्य १)

मिलने का पता कृष्णाराव देशाई प्लीडर। मंत्री श्रीशंकराचार्य उत्सव—हुबली।

थोड़ा किहिन तुलसीदास बहुत किहिन कविता ।

रिज़िली सरकूलर के रहते भी विद्यार्थी लोग पालिटिक्स मे प्रवीणता प्राप्त करने को गुप्त रीति पर राजकीय विषयों मे जांनकारी हासिल कर सकते थे किन्तु म्योर सेंट्रल कालिज के प्रिंसिपल मिस्टर जेनिङ्ग ने अपनी एक नई उपज या यों कहें अपना एक नया सरकुलर उसमे लगा दिया है। मि० जैनिङ्ग ने अपने कालिज के विद्यार्थियों को आज्ञा दी है कि वे किसी प्रकार की मीटिङ्ग में चाहो वह जैसी मीटिङ्ग हो शामिल न हों। और शामिल हों तो उनकी आज्ञा लेकर। हम श्रीमान् छोटे लाट हिवेट साहब को धन्यवाद देते हैं कि वे अपने अधिकृत देशों का ऐसा उत्तम शासन कर रहे हैं कि जब और २ प्रान्तों में बहुत कुछ हलचल मच गया है यू० पी० सब तरह के हलचलों से वचा है और पूरी शान्ति राजकीय विषयों मे यहां पाई जाती है। किन्तु जेनिङ्ग महाशय ऐसे लोग जब बैठ बैठाये इस तरह की खोद विनोद किया करेंगे तो हमे शक है कि विद्यार्थियों मे अचरज क्या कुछ न कुछ खलवली मच जाय जिससे शान्ति मे वाधा पड़े। जैनिङ्ग साहब को चाहिये इस विषय मे बहुत समझ बूझ काम करें।

श्लाघनीय उद्योग ।

नागरीप्रचारक पत्र के संपादक बाबू गोपाललाल खत्री एक संग्रह हिन्दी के प्रत्येक विषय के उत्तमोत्तम लेखों का किया चाहते हैं। मातृभाषा के समस्त शुभचिन्तकों से निवेदन है कि हरिश्चन्द्र के समय से अब तक जितने हिन्दी के प्रसिद्ध सुलेखक हो गये हैं उन का संग्रह जिनके पास जो हो भेज उनके इस प्रशंसनीय काम मे सहायक हों—

पता—गोपाललाल खत्री संपादक नागरीप्रचारक—लालबाग़ लखनऊ।

REGD. No. A. 308.

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जिल्द २९ | अक्टूबर १९०७ | संख्या १०

विषय सूची।

पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

—:॥ श्रीः ॥:—

जिल्द २९	प्रयाग	अक्तूबर
सं० १०		सन् १९०७ ई०

महामंत्र

"बन्दे मातरम्"।

इस मंत्र के वंकिम् बाबू मंत्र द्रष्टा ऋषि हैं—भारत माता इसकी देवता हैं। महा विराट इसका छन्द है। स्वदेशी इसका साधन है। विदेशी वस्तुओं का बायकाट "बहिष्कार" इस महामंत्र का पुरश्चरण है। स्वराज इसका अन्तिम लक्ष्य है। color and creed गोरे काले का भेद न रख तथा मत मतान्तर का झगड़ा छोड़ समस्त भारत-वासी जिन्हें भारत जननी के पुत्र होने का सौभाग्य प्राप्त है वेही इस मंत्र साधन के अधिकारी हैं। "देहं वा पातयेयम् कार्यं वा साधयेम्" इसके साधन की विधि है। इस महा मंत्र की शक्ति आबाल वृद्ध वनिताओं तक में, हिमालय से कुमारी अन्तरीय और अटक से कटक तक व्याप्त है। Politics राज-नैतिक पटुता इसका विषय है। पूर्ण अधिकारी या इस मंत्र के साधक वे ही हैं जो चिर निद्रा से एक बारगी चौंक उठे हैं और जिनके नस २ में मुल्की जोश भरा हुआ है जो प्रतिक्षण इसी प्रयत्न में प्रवृत्त हैं कि हमारी मातृ भूमि का कैसे उद्धार हो। कुछ ऐसी अद्भुत करामात या जादू इस में पाया जाता है कि इस मंत्र के जापक को मातृ भूमि के साथ वह छोह पैदा हो जाता है

जिह्वा के द्वारा जिसका वर्णन हो हो नहीं सकता । इस मंत्र के साधक को आगे कहे हुये इन नियमों का ग्रहण अत्यावश्यक है—पहिले तो यह कि वह पूरा गरम दल का हो। याचक वृत्ति को महा अधम काम समझता हो। अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे हो। Self-sacrifice आत्मत्याग में कुशल हो, कर्मचारियों की हां में हां या उनकी खुशामद से घिनाता हो। राज-सन्मान तथा बड़ी २ उपाधियों की ओर से सर्वथा निर्लोभ ही नहीं बरन उसके त्याग में पूर्ण परिव्राजक हो । हमारे पाठकों में यदि कोई इस मंत्र का साधक हुआ चाहे तो इन नियमों के पालन में विशेष दत्त चित्त हो । जापक को इसके जप में समय का कोई नियम नहीं है न इसके जप में जीभ हिलाने का क्लेश उठाने की आवश्यकता है वरन अजपा जप के समान रात दिन उठते बैठते सोते जागते निज जननी के उद्धार में लौ लगाये मन से इस महा मंत्र का स्मरण करता रहे। एक ही जन्म में नहीं वरन साधक को सिद्धि के लिये अनेक जन्म झेलना होगा । "अनेक जन्म संसिद्ध स्ततो याति परां गतिम्" "बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते" धीरज धरे लौ लगी रहे। धीरज धरै सो उतरै पारा।

इस आन्दोलन का परिणाम क्या होगा।

आजकल भारत अपनी स्थिर, और अचल दशा छोड़ कर चलाय मान है, शान्त गम्भीर महोदधि में लहरें उठने लगी हैं। जैसे सोता हुआ मनुष्य प्रातः काल आंख मींजता हुआ ईश्वर का नाम उच्चारण कर उठना चाहता है इसी प्रकार बहुत दिनों तक दुर्दैवरूपी रात्रि में सोता हुआ, बङ्गभङ्ग, स्वेच्छाचार, टैक्स, इत्यादि मच्छड़ों के काटने से देशी पत्र पत्तियों का कलरव शब्द सुन अङ्गरेजी शिक्षा का प्रचार देख पूर्व रूप में सूर्योदय का अनुभव कर यह "हिन्दू" बालक माता का नाम "बन्दे मातरम्" चिल्लाता हुआ उठने की चेष्टा करता है। जिसकी चर्चा यूरप में है, फिरङ्गी हाकिमों के क्लबों में है। एङ्गलो इंडियन पत्रों में है और हिन्दुस्तान में तो गेहे २ जने २ हैं। मूढ़ हिन्दुस्तानी सोचते है यह सब क्या है इन सब बातों से क्या होगा ? बुद्धिमान् लोग विचार करते हैं इस "स्वदेशी आन्दोलन" का परिणाम क्या होगा ? उधर गवर्मेंट भी ऐसी

व्यस्त, और व्याकुल है, कड़ाई का वर्ताव कर रही है गोया कोई बड़ा विद्रोह दवाया जाता हो। यह कड़ाई गरम दल, शिक्षित समाज और विद्यार्थियों पर विशेष है जिसमें राज-नीति बढ़ने न पावे विद्यार्थी लोग राज-नीति से अलग रहें। क्योंकि राज-नीति विशारद अंगरेज़ जानते हैं कि कहीं बढ़ते २ आन्दोलन का यह पौधा जातीयता का महावृक्ष न बन जाय। जिसके फल खाकर वृटिश जाति आप सर्वश्रेष्ठ और दूसरी जातियों को गुलाम बनाने में समर्थ हुई है। यही कारण है कि केवल साधारण आन्दोलन के कारण भारत में बड़े यत्न से राज-नीति बन्द की जाती है। किन्तु यह कब सम्भव है कि वीर स्वदेश-भक्त लोग कड़ाई और कष्टों से डर कर देश की दुर्दशा भूल जांय। यह बात तो वैसी ही है जैसे कोई जागता मनुष्य घर में आग लगी देख सोना चाहे या कोई आंख रहते अन्धा बन जाय॥

यह जातीयता का ही प्रभाव है जिसकी बदौलत हाल में हारे हुये बोअर लोग स्वराज्य पा गये। उनके प्रतिनिधि बोथा की इङ्गलैंड में बराबर की इज्ज़त की गई। यही नहीं किन्तु वह अन्यायी कानून भी पास कर दिया गया और हिन्दुस्तानियों का कुछ ख़याल न किया गया। ऐसा हुआ क्यों? क्योंकि जैसे हम लोग प्रजा हैं वैसे ही बोअर इस पर भी हिन्दुस्तान से अङ्गरेज़ों को जो फ़ायदा है उनका दिल जानता है। यदि योग्यता का ख्याल किया जाय तो जितनी बोअर लोगों की संख्या है उतने तो यहां ग्रेजुएट हैं। अच्छा यह सब न सही रङ्ग का ही भेद समझा जाय तो जितने इंगलैंड और ट्रान्सवाल में सफ़ेद चमड़े वाले हैं उनसे अधिक लोग यहां गोरे और खूबसूरत निकल आवैंगे। किन्तु यह सब होने से क्या हो सकता है भेद अवश्य है। बोअर युद्ध देखिये वीर बोअरों ने प्राणपण से अन्त तक युद्ध किया फिर हार जाने पर भी एक साथ शस्त्र रख कर जो उन लोगों ने एकता का परिचय दिया उनकी क़दर सच्ची स्वदेश-भक्त वृटिशजाति क्यों न करें। इधर भारत के पुराने इतिहास को छोड़ वर्तमान आन्दोलन पर दृष्टिपात कीजिये एक ओर National Congress करके हम लोग सरकार से कुछ मांगना चाहते हैं

दूसरी ओर Anti-Congress मौजूद है। एक ओर स्वदेशी आन्दोलन करके जिसमें भारतवासी मात्र का समान लाभ है अपने में "स्वावलम्बन और जातीयता" लाना चाहते हैं। लेकिन मूर्खता से वहुसंख्यक मुसलमान इसके विरुद्ध हैं और हिन्दुओं पर इस लिये अत्याचार करना चाहते हैं जिसमें "स्वदेशी" बन्द हो। कितने दनादन लायल बन रहे हैं। भला जिनके राज-नीति मार्गमें इतना भेद है वे कैसे एक फुटपाथ पर चल सकते हैं और कैसे बराबरी का दावा करते हैं? लायल बनने वाले यहां के राजा महाराजा आदि को जानना चाहिये कि सच्चे स्वदेश-भक्त अंगरेज़ लोग सच्ची स्वदेश-भक्तिही से खुश होने वाले हैं न कि खुशामद से।

यहां के बहुत से शिक्षित महाशयों का मत है कि भिन्न२ धर्म रहने से इस देश में जातीयता या प्रजाशक्ति का होना अत्यन्त कठिन है किन्तु अन्यदेशों के उदाहरण से यह बात बेजड़ सिद्ध होती है। जैसे फ्रांस और जर्मन आदि देशों में रहने वाले यहूदी या ईसाई दोनोंका समान अधिकार है इससे सिद्ध है कि जातीयता के लिये एक धर्म की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी शिक्षा और अभ्यास की है। अब शिक्षित और योग्य हिन्दुस्तानियों की संख्या यहां कम नहीं है। किन्तु अभ्यास की कसर है और इसी कसर मिटाने के लिये ही ईश्वरेच्छा से किसी महान् शुभघड़ी में वर्तमान राजनीति चर्चा आरम्भ हुई है। जैसे एक छोटा, निर्बल, सुकुमार बालक कसरत करते २ बज्र शरीर पहलवान बन जाता है। ऐसे ही यद्यपि आज हम लोग महा शक्तिहीन हैं सभी बातों में हत मनोरथ हैं किन्तु राज-नैतिक अभ्यास करते२ बिखरी हुई शक्तियों को इकट्ठा कर विघ्न बाधाओं को दूर कर अवश्य जातीयता शक्ति प्राप्त करेंगे। यह पौधा है जिसके पास कायर लोग फटकते भी नहीं और यही आन्दोलन का पौधा स्वदेशभक्त वीर गणों के सर्वस्वरूपी जल से सिंच कर "जातीय महा वृक्ष" हो कर एक दिन "स्वराज्य" फल अवश्य उत्पन्न करेगा, जिस फल को खाकर और जिसकी छाया में बिश्राम कर बहुत दिनों से दुःखित, दलित, क्लेशित भारतवासी शान्ति, पावैंगे।

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

बेनी प्रसाद शुक्ल

सिक्ख धर्म का साधारण इतिहास ।

गोविन्द सिंह के दो बेगुनाह बच्चों का बलिदान ।

सम्वत् १६६० में पहाड़ी राजपूत राजे और लाहौर तथा सरहिन्द के सूबेदारों ने मिलकर आनन्दपुर पर चढ़ाई की जहां सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द जी रहते थे । इस चढ़ाई पर इतना ज़ोर दिया गया कि किले के भीतर खाने पीने की जिन्सों का जाना बिलकुल बन्द कर दिया गया। इस कारण आनन्दपुर की फौज़ के सिपाही बिलकुल बेदिल हो गये । गोविन्द सिंह जी को इस समय इन दो बातों के सिवाय और कुछ न सूझता था कि या तो मैदान में अपनी दुर्बल फौज़ लेकर इतने बड़े लश-कर का सामना करें, जो उनकी छोटी सी फौज़ से २० गुना अधिक थी या अपने को शत्रुओं की दया पर छोड़ दें । पहली बात के अनुसार चलना जानबूझ अपने साथियों को कतल करना है । दूसरी बात इससे भी अधिक भय पैदा करने वाली है और अप्रतिष्ठा का कारण है। उन्हों ने इन दो बातों में किसी पर अपनी सम्मति न प्रगट की । इतने में शत्रु की सेना का एक प्रतिनिधि आया और संदेसा लाया जिसका आशय यह था कि आप बहुत जल्द किला खाली कर दें तो आप और आप के साथियों के जान और माल की रक्षा रहैगी और जहां चाहिये वहां चले जाइये ।

गोविन्द सिंह जी फौज़ के इस सन्देसे का विश्वास तो न किया किन्तु ऊपर कही दोनों बातों का बचाव इसमें देख पड़ा इस लिये इसे उन्होंने स्वीकार कर लिया । अपनी सेना को आज्ञा दिया कि कल प्रातः काल किला खाली करने को सब लोग उद्यत रहैं । दूसरे दिन भोर ही

आप अपनी माता दोनों स्त्रियां चारो पुत्र और समग्र सेना समेत किले के बाहर निकले। जब तक ये सब लोग किले के पास रहे शत्रुओं की सेना अपनी जगह से न हिली। जब सब लोग इतनी दूर चले गये कि वहां से लौट किले में चले जाना असम्भव था तब शत्रु की सेना ने उन पर धावा कर दिया। यह देख गोविन्द सिंह जी के साथी सब घबड़ा गये और मिल के लड़ने के बदले चारो ओर भागने लगे। सामने उनके सतलज नदी थी और पीछे शत्रुओं की सेना। बहुत से जो नदी में कूद पैरकर पार जाने का साहस न कर सके शत्रु के तलवार के शिकार हुये और जो नदी में कूद पड़े उनमें से बहुतेरे डूब गये बहुत ही थोड़े थे जो किसी न किसी भांति प्राण बचा भागे। इस घबड़ाहट में गोविन्द सिंह जी और उनके कुटुम्बी अलग हो गये दोनों स्त्रियां थोड़े से सिक्खों के साथ एक ओर चल पड़ी और देहली पहुंच गई। उनकी माता और दोनों पुत्र फतहसिंह और ज़ोरावर सिंह घर के रसोइये ब्राह्मण के साथ एक ओर हो लिये जब कि गोविन्दसिंह जी दो बड़े पुत्र और थोड़े से शिष्यों सहित रोपड़ को रवाना हुये।

यह ब्राह्मण जो माई गुजरी के साथ था गोविन्द सिंह जी के घर में बहुत दिनों से नौकर था और विश्वास पात्र समझा जाता था। इसने माई जी से कहा आप अपने पुत्र सहित हमारे गांव में चलिये वह गांव हिन्दुओं का है और रास्ते से अलग है इस्से आप शत्रुओं के उपद्रव से बची रहैंगी। माई जी ने इसे स्वीकार कर लिया और रात होते होते गांव में पहुंच उस ब्राह्मण के घर जा उतरीं। इनके पास अशर्फियों का एक डिब्बा था और गहनों का एक थैला था। दोनों को उसी कोठरी में जहां उतरी थीं रख दिया थके मांदे तो थे ही सब के सब सो गये। ब्राह्मण ने जब उन सबों को सोते पाया तो थैला और डिब्बा दोनों को छिपा दिया और फिर बाहर खड़ा हो चोर२ ऊंचे स्वर से चिल्लाने लगा। माई जी इस शब्द के सुनते ही चौक उठीं थैला और डिब्बा न पाय उस ब्राह्मण पर उन्हें शक्क हुआ उसे बुलाकर कहा हमारा थैला और डिब्बा लाओ। इस पर वह मक्कार कहने लगा तुम हमको चोरी लगाती हो

तुम सब लोग बादशाह के बागी हो हमने अपनी जान जोखिम में छोड़ तुम्हें शरण दिया उसका यह प्रति फल तुम हमको दे रही हो। अब मैं धोखे में न आऊंगा और तुमको यवनों को सौपूंगा। माई जी उसकी इस धमकी से डर गईं और कहने लगीं हमारा यह मतलब न था कि तुम चोर हो पर यह कि यदि तुमने रखवाली के लिये हमारी वस्तु रख दी हैं तो ले आओ सो तुमने यदि नहीं रक्खी तो अस्तु—हमारे दिन ही ऐसे हैं राह का खर्च था सो भी गया अब न जानिये किस प्रकार कर्तार हमारा निर्वाह करे और कब इस बिपत्ति से छुटकारा पावें। यह सुन मक्कार ब्राह्मण चुप हो रहा परन्तु मन में ठान लिया कि अब इन्हें अपने घर में न रहने दें। इस इरादे से वह भोर को उठा और पास के गांव में जहां के मुखिया बड़े पक्षपाती थे उन्हें खबर दी कि गुरू गोविन्द सिंह की मा और उनके दो लड़के मेरे घर में हैं। वे दोनों पक्षपाती उस कृतघ्नी के साथ हो लिये और उसके घर पहुंच उन निर्दोषियों को गिरिफ़ार कर लिया और नाज़िम सरहिन्द के पास भेज दिया।

उस समय सरहिन्द की गद्दी पर जेदखां नाम का एक मनुष्य था यह और नाज़िम लाहोर दोनों गुरू गोविन्द सिंह जी से बहुत चिढ़े थे इस लिये कि इन दोनों को गोविन्द सिंह ने पहले बहुत तंग कर रक्खा था। दोनों हर समय बदला लेने का मौका ढूंढ रहे थे। लालच मक्कारी और बेरहमी से भरे हुये थे। सफ़दरजंग ज़ाबिता खां गुलाम क़ादिर ऐसे लोगों के साथी ये दोनों थे जो मुगलिया सलतनत के नष्ट हो जाने के बानी भुवानी हुये।

नाज़िम सरहिन्द को जब यह ख़बर मिली कि गुरू गोविन्द सिंह जी की मा और उनके दो पुत्र पकड़ गये हैं तो उसने एक दम उन्हें अपने दरबार में तलब किया और आज्ञा दी कि सब लोग क़ैदख़ाने में पहुंचा दिये जांय जहां उन पर सख़ पहरा रहे। सारा दिन और रात उसने विचार किया कि उनको क्या हुक्म देना चाहिये। दया का उसके स्वभाव में कहीं लेश भी न था और गुरू गोविन्द सिंह से बदला चुकाने की हर दम उसके जी में बसी हुई थी। इस मतलब को पूरा करने की

उसे दो बात सूझी कि इन निरापराधियों का काम तलवार के द्वारा पूरा किया जाय या दोनों मुसल्मान कर के छोड़ दिये जांय। दूसरे दिन सबेरे दोनों लड़कों को अपने दरबार में बुलाया। ये दोनों पहिले २४ घंटों से कुछ खाया पिया न था और थके भी थे इस से उनका मुख कुम्हलाया हुआ था किन्तु इस पर नाज़िम को तनिक दया न आई। डांट कर बोला तुम्हारा बाप खुदा और बादशाह दोनों का बागी है। जैसा उसका काम है उस से यही वाजिब जान पड़ता है कि उसकी जड़ दुनियां से उखाड़ दी जाय। चाहिये कि तुम तुरंत कतल कर दिये जाओ पर तुम्हारी उमर अभी छोटी है इस से हमें यह ख्याल होता है कि तुम छोड़ दिये जाओ इस शर्त पर कि तुम खुशी से पाक दीन इसलाम क़ुबूल कर लो। यह तुम्हारी खुश किस्मती है कि तुम लशकर इसलाम के हाथ आकर खुदा के दरगाह में पहुंच गये नहीं तो तुम अपने बाप के साथ रहते तो ज़रूर काफ़िर और बागियों की सी तालीम पाते और दोनों जहान में दुखी होते। ये दोनों लड़के जो हिन्दू शिक्षा में पले थे और जिन्हों ने उसी अवस्था में गुरू तेगबहादुर जी और गुरू गोविन्द सिंह जी का उपदेश ग्रहण कर लिया था उन पर नाज़िम की उन बातों का बिल्कुल असर न हुआ। नाज़िम ने सोच रक्खा था कि मौत का नाम सुनते ही उनको ऐसा डर समायगा कि उन्हें दीन इसलाम की ओर खींच लाने में वह कामयाब होगा बल्कि मौत के डरावने चेहरे के सन्मुख दीन इसलाम की गोद और बादशाह का आश्रय उनके लिये अनमोल वस्तु होगी। किन्तु दोनो भाई नाज़िम की बातों को चुपचाप सुनते रहे और समाप्त होने पर भी कुछ न बोले तब वह क्रोध कर बोला—क्या लड़कों तुम्हें अपनी जान प्यारी नहीं है जो इसलाम की गोद में नहीं आना चाहते? या बहरे हो जो हमारा कहना नहीं सुन सके? खूब समझे रहो दीन इसलाम के कबूल कर लेनेही से तुम्हारी जान बच सक्ती है। यदि स्वीकार हो तो हम अभी जमा मसजिद में चल कर रसमीयात अदा कर देंगे। नहीं तो एक घंटे में तुम्हारा काम तमाम कर दिया जायगा।

यह सुन दोनों बच्चों का मुख पीला पड़ जाने के बदले सुर्ख़ हो गया दोनों एक साथ बोलने लगे। पर बड़े ने छोटे को मना कर दिया और बोला कि हम महात्मा नानिक जी के बंश में उत्पन्न हैं जो सत्य धर्म के अवतार थे। गुरु तेगबहादुर जी के जिन्होने धर्म के निमित्त अपने को बलिदान कर दिया पोते हैं और गोविन्द सिंह जी के जिन्होने अपना सर्वस्व धर्म पर न्योछावर कर रक्खा है पुत्र हैं। धिक्कार यदि हम अपनी कमज़ोरी से ऐसे महात्माओं के यश में बट्टा लगावें और ऐसे पवित्र कुल की हतक करें। बाह ! गुरु कृपा करें कि हम पतित होने के पहिले ही मर जावें अधर्म की पैरवी करने के बिना ही इस संसार को छोड़ जावें। हम बच्चे अवश्य हैं परन्तु भक्त प्रह्लाद अपनी परीक्षा के समय हम से भी छोटे थे। सो हमारा उत्तर यही है कि हम सत्य को छोड़ असत्य को ग्रहण न करेंगे और श्रेष्ठ धर्म को छोड़ तुम्हारे मन्द मत को स्वीकार न करेंगे चाहो हमारी जान चली जाय अब जो तुम्हारी इच्छा हो सो करो हमे कुछ डर नही है !

बच्चों की ये बातें सुन नाज़िम चकित हो गया और क्रोध से दांत पीसने लगा। उसको यह विश्वास न था कि लड़के अपने धर्म की पैरवी में इतना हठ करेंगे और जीवन से इतना निडर होंगे। परन्तु उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि बागी के ये लड़के अपना मत न छोड़ेंगे तो उनकी जान लेली जायगी। इस मतलब से उसने दो पठान नौ जवानों को जो उस्के नौकरों में से थे और जिनके बाप को गोविन्दसिंह जी ने लड़ाई मे मारा था बुलाकर कहा मै तुम को बाप के खून का बदला देता हूं और इन लड़कों को तुम्हें सौंपता हूं इस लिये कि तुम शरा के हुक्म की तामील अपने ख़ंजर से करो—

इन दोनों बहादुरों ने उत्तर दिया कि यद्यपि हम बाप का बदला चुकाने को तैयार हैं किन्तु आप को मालूम होगा कि हमारे बाप को गोविन्दसिंह ने लड़ाई मे मारा था उस्के बदले मे इन दीन बच्चों को मारना हमारी समझ मे बुद्धिमानी नही बल्कि निर्दयता और बुज़दिली है। इस लिये हमारे बाप का ख़याल छोड़ आप शरा की

पाबन्दी कीजिये। इन बातों को सुन नाज़िम और भी आगबबूला हो गया तुरन्त हुक्म दिया उन्हें शहर की फसील में चुनवा दो—यह हौलनाक हुक्म सुन कर भी दोनो मे से किसी के मुख पर डर के चिह्न न प्रगट हुये और चुप चाप जल्लाद के साथ हो लिये—नाज़िम के महल से दोसौ गज़ पर शहर की फसील दो गज लंबी चौड़ी थी। दोनो भाई एक दूसरे से एक गज़ की दूरी पर खड़े किये गये कठोर हृदय नाज़िम भी आ पहुंचा जिस्में अपनी संग दिली और बे रहमी को आंखों से देखै—दीवार इन दीन कच्चों के चारो ओर चुनी जाने लगी जब घुटनों तक आगई तो नाज़िम ने उन से कहा कमबख़्तो अब भी अपनी ना समझी पर पछताय दीन इसलाम कबूल करलो—एक ओर अमीरी और दीन इसलाम का बिहिश्त और दूसरी ओर मौत और लानत है—इस पर इन दोनों ने उत्तर दिया—ऐ पापी तुम ऐसे दुष्टों के नीच मत मे मिलने से मौत अच्छी है--चुनाई का काम जो नाज़िम के कहने से बन्द कर दिया गया था फिर प्रारंभ कर दिया गया--जब कमर तक दीवार पहुंची तो नाज़िम एक बार और बोला बेसमझ बच्चो अब भी समय है जान बचालो इस समय छोटा लड़का बेहोश हो चुका और जवाब देने मे असमर्थ था पर बड़ा अभी होश मे था भाई की ओर देख उसका जी भर आया धीमी आवाज़ से नाज़िम की ओर देख कर बोला—पापी अपने काम को पूरा होने दे--ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है कि तुम्हारे पाप से तुम्हारा राज्य नष्ट हो हमे मौत से डर नही है पर तुम्हारे भी आराम और सुख का अन्त है इसका बहुत बुरा बदला तुम से लिया जायगा—ये बातें सुन नाज़िम हंस दिया पर दिल उसका धड़क रहा था देर तक वहां न ठहर सका सिरतक चुन देने का आखिरी हुक्म दे महलों मे लौट आया--देखते देखते दीवार दोनो के सिर तक पहुंच बन्द कर दी गई—माई गुंजरी को इसका समाचार दोपहर को मिला और सुनते ही प्राण त्याग दिये। ऐसा सच्चा जोश हो तब देश का उद्धार हो सक्ता है कोरे लेकचर या कोरे लेख से कुछ होना नही है।

बीर बन्धु।

"बीर बन्धु" है कौन देश मे कौन बुद्धि बल शाली हैं
यदि बिचार देखो भाई तो, आर्य पुरुष बंगाली हैं॥
कौन स्वदेशी सेवक सच्चे कौन सुदृढ़ प्रण पालक हैं।
बंधु जनो! यह कहना होगा, बंग देश के बालक हैं॥
देश भक्त हैं यही लोग अरु, इनका यश जग छायेगा।
अल्प दिनों में इनके ही, कर्तब का फल दिखलाएगा॥
अधिक लोग इस "भारत" मे तो, बात मिलाने वाले हैं।
देश भक्ति की मधु पीकर, कुछ यही हुए मतवाले हैं॥
आत्म, स्वार्थ, का त्याग यही जन कैसा ठीक दिखाते हैं।
सरल चित्त से देखो तो ये मानों हमे सिखाते हैं॥
जो सुकुमार बालकों पर भी निर्दय दया न लाते हैं।
इन दुष्कर्मों से स्वजाति का परिचय जो दिखलाते हैं॥
ऐसे प्रबल हाकिमो का भी सहलेते हैं बज्र कुठार
हंसते हुए चले जाते हैं आज देश हित कारागार॥
प्यारे महाराष्ट्र भाई एक इनके तुम्हीं सहायक हो।
आर्य पुरुष साहसी हृदय अरु भारत के सुखदायक हो॥
बंधु गणों! हम अधिक बंदना आज तुम्हारी करते हैं।
तुम लोगों के ही कर्तब को देख धैर्य हिय धरते हैं॥
आर्य गणों! इस्मे जगदीश्वर तुमलोगों की करे सहाय।
बढ़े तुम्हारी शक्ति अधिकतर भारत में धन धर्म दिखाय।
हा! पंजाब देश बासी गण तुम कुछ नहीं लजाते हो।
देश भक्त जन सहें दुःख तुम राज भक्ति दिखलाते हो॥
थोड़े दिन इस जग मे रहना जो कुछ भी कर जाओ गे।
पुनर्जन्म लेकर निश्चयही उस्का प्रतिफल पाओ गे॥
युक्त प्रान्त वालों को देखो कैसे सुख से सोते हैं।
ज़रा ध्यान भी नहीं देश का व्यर्थ जिन्दगी खोते हैं॥

टसको मसको देखो भालो कुछ तो मुंहसे बोलोगे।
अच्छा भला यही बतलादो कबतक आंखे खोलोगे॥

दासता।

भूमि के सम्पूर्ण देशों मे कभी जो एक था।
हा! वो 'भारत' घर गुलामों का कहा जाने लगा॥
थी जगद्विख्यात जिस्की वीरता, कारीगरी।
धर्म तत्परता, सुजनता, एकता, सौदागरी॥
और विद्या का भरा आगार था जिस देश मे।
हा! वही सहता अनादर 'दासता' के भेख मे॥
वीरवर जयमल्ल, पुत्त, प्रताप, पृथ्वीराज से।
मान गौरव के बढ़ावन हार थे जिस देश के॥
प्राण रहते जिन्हों ने छोड़ी नही "स्वाधीनता"।
हुए रिपु भी मुग्ध जिनकी देख बल शालीनता॥
'दासता' सुनते ही जिनके क्रोध की सीमा न थी।
आज उनके वंशधर हा! दास बन बैठें सभी॥
इस तरह कितने बली इस भूमि ने पैदा किये।
मातहित जिन प्राण जगहित सुयश तज सुरपद लिये॥
हाय! भारत आज यह तेरी दशा क्या हो गई।
भूमि मे विख्यात महिमा है कहां सब खो गई॥
देशके प्यारे जनों अबभी पड़े क्यों सोते हो।
'दासता' को मानकर सुख व्यर्थ दिन क्यों खोते हो॥
भाईयो यह देश गारत है इसीकाही किया।
देश से "स्वाधीनता" को है इसी ने हरलिया॥
है इसीनेही नसाया धर्म हिन्दुस्तान का।
करदिया हमको निरा ज्यों पूतला वे जानका॥
बोलने लिखने तलक की अब मनाही हो गई।
देश की सत्कीर्ति सब इस्की बदौलत धो गई॥

है किया चौपट इसी ने सब हमारे कारोबार।
अब मंगाती भीख हमसे है फिराकर द्वार द्वार॥
लोभ दिखला कर फसाया देश को है किस्तरह।
जाल में स्वच्छन्द पक्षी आन फंसता जिस्तरह॥
हे विभो! भारत को पहले की तरह भरपूर कर।
शीघ्रही सर्वस्व हारिणि "दासता" को दूरकर॥

माधव शुक्ल।

इस वर्ष अकाल क्यों हुआ?

ईश्वर का जब बड़ा कोप होता है तब अकाल और मरी प्रजा में फैलती है। ५० वर्ष पहिले और अब को मिलाओ तो सस्ती का समय भी अकाल मालूम होगा। किन्तु सहते सहते सह गये तो अब रुपये का १२ सेर गेहूं सस्ती का समय मान लिया गया है। मनसून इस साल बड़ी देर के आया और बहुत जल्द लौट गया। अन्न का संग्रह देश में रहा होता सब का सब रेली ब्रादर्स के कट्टे न लगता, बिलाइत न ढो गया होता, तो संभव था कुछ मँहगी होती इतना अकाल न पड़ता कि ८ सेर ७ सेर का गेहूं ५ सेर ४ सेर का चावल बिक रहा है लोग भूखों मर रहे हैं। एक जून भी पेट भर नहीं खाते पर कौन कहे हमारे सामयिक शासन कर्ता ओं की शासन प्रणाली ही कुछ ऐसी है कि वे बिलायत के लोगों की हानि नहीं सह सक्ते हैं। उन के हर तरह के आराम और सुख चैन Luxury में फर्क न पड़े हम चाहे जैसे अपना दिन काटें। छोटे से छोटे हाकिम और उनकी मेमसाहबा नौवाब तथा शाही बेगमों का कान काटे हुये हैं। राजा और प्रजा का रिश्ता एक ओर रहे उतनी भी हमदर्दी उनके कामों से नही प्रगट होती जितनी मनुष्य को मनुष्य के साथ होनी चाहिये। कई लाख मनुष्य प्लेग में मरते ही हैं अब इस अकाल मे भी सही। पर अकाल पीड़ितों की मृत्यु प्लेग से अधिक भयंकर है "कष्टात्कष्टतरं क्षुधा"। जो हमारे जान माल की रक्षा का बीड़ा उठाये हुये हैं वेही अब "फ्रीटेड" स्वछन्द बाणिज्य की पालिसी को कायम रख हमे क्षुधा पीड़ित

कर रहे हैं और सस्ती में भी हर एक चीज़ों का भाव फ्रीट्रेड के कारण अकाल का सा किये हुये हैं तब यह अकाल तो दैवी कोप माना जाता है। पर यह दैवी कोप हम पर क्यों है ? हम से कौन सा पाप बनता है ? देश निर्धन हो गया तो दरिद्रता ही एक पाप है जो गुलामी के भाव को साथ लिये हमारे सिर पर चढ़ी नाच रही है। गुलामी से छुटने का यत्न करैं तो दरिद्रता अपने ताण्डव नृत्य की गति के घमण्ड में भरी ऐसी गहरी ठोकर जमाती है कि हक्का बक्का हो छट्ठी का दूध याद आने लगता है होश गुम हो जाते हैं। अस्तु राजकीय कोप तो था ही जिधर ज़रा भी उभड़ने का मन करते हैं उधर ही नये रिज़ोल्यूशन और कड़े से कड़े कानूनों की ऐसी कील ठोक दी जाती हैं कि दास्य भाव के पिंजड़े में बंद पड़े सड़ते रहै तो अब दैवी कोप भी सही। सहन शील को सब सहते जाना ही बड़ी तपस्या है और हम तो तपस्वी ऋषियों के बंश धर हैं। तब कुल परम्परा गत धर्म आना ही हमारी शोभा है तथास्तु।

सतत शोकाश्रु संचार ।

न जानिये हत भागिनी हिन्दी के कैसे कुदिन आ लगे हैं कि जो इसके लिये कटिबद्ध हो सनद्ध हो जाता है उसी को मौत निगोड़ी नई फूलीहुई कली के समान खसोट लेती है। अधिक तर यह वर्ष तो इस दुर्घटना के लिये न जानिये कैसा मनहूस आया कि इसमे हमारे कई एक सुलेखक उस महा पथ के बटोही बने जिसमे प्रस्थान कर फिर आज तक कोई न लौटा। जिनके निमित्त हमे सतत शोकाश्रु संचार से आश्वासन के लिये अवकाश ही नही मिलता। दुर्दैव घाव पर घाव बराबर देता जा रहा है। सबके पहिले नागरी सेवकों के अग्रगण्य काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक सुग्रहीत नाम धेय बाबू राधा कृष्ण जी की गोलोक धामकी प्राप्ति हुई। उनके शोकान्धकार में हम लोग पड़े२टटोल रहेथे कि सहसा माधव प्रसाद मिश्र के स्वर्ग बास का समाचार हिन्दी पर वज्र पात सा आटूटा उक्त मिश्र जी ने हिंदी के साथ जैसी सहानुभूति दरसाई वह किसी से छिपी नही समाचार पत्र इन की बहुत कुछ लीला गाचुके हैं

अपने स्थिर अध्यवसाय मे ये इस समय के चाणक्य थे। चाणक्य के बहुत से गुण इनमे पाये गये अस्तु। इस शोक का मार्जन नहीं हुआ था कि मध्य प्रदेश को उजागर करने वाले पं० अनन्त राम पाण्डेय हिन्दी रसिकों को अपने विछोह से खिन्न करते चलवसे, उक्त पाण्डेय को बहुत कम लोग जानते होंगे किन्तु हिन्दी के लिये उनकी सरगरमी इनके सरस लेख से बिदित है। प्रदीप की पुरानी फाइलों में इन के बहुत से लेख मुद्रित हो चुके हैं उनके पढ़ने से इनके सुलेखक होने का पता मिलता है। पाण्डेय जी चुपचाप काम करने वाले थे विना किसी निज के स्वार्थ के इन्होने हिन्दी के साथ सहानुभूति दरसाया। अन्त में बा० बालमुकुन्द गुप्त भारत मित्र की उन्नति के एक मात्र आधार अपने वियोग से हिन्दी रसिकों को निराश कर हम सबों को शोकाश्रु पूरित कर गये। हमारे दीर्घ जीवन मे सतत शोकाश्रु संचारही लिख दिया गया है क्या ? हा धिक्।

परिवर्तन।

संसार के जितने काम हैं सब किसी न किसी प्राकृतिक नियमों के सिद्धान्तों पर और उन सिद्धान्तों को प्रगट कर दरसाने के लिये होते हैं। आज इस बात के विचार करने का जी चाहता है कि राज का परिवर्तन किस नियम पर होता है और उन नियमों के उदाहरण क्या हैं।

न्याय दृष्टि से देखा जाय तो मालूम होगा कि प्रत्येक मनुष्य को उसके गुण कर्म के अनुसार इतनी स्वच्छन्दता अवश्य मिलनी चाहिये कि वह आप अपने को सम्हाले रहे। किसी को इसमे कोई अधिकार नहीं है कि वह दूसरे की आज़ादी छीन कर आप उस आज़ादी का फ़ाइदा उठावे। न यही किसी को अधिकार है कि वह दूसरे को अपनी राय के मुताबिक काम करने की बेजां कोशिश करे। प्रत्येक मनुष्य को इतनी स्वतंत्रा अवश्य होनी चाहिये कि वह किसी धर्म या मज़हब का पाबन्द हो या न हो चाहे जिस समाज का पोषक हो या चाहे जिस राज नैतिक सिद्धान्त का पालन करे। इतनी रुकावट अवश्य होनी चाहिये कि उसके ऐसा करने से किसी व्यक्ति या समाज को व्यर्थ हानि न पहुंचे इसी नियम के

अनुसार हर एक जाति समाज या कौम को स्वतंत्रा मिलनी चाहिये। किसी कौम को अधिकार नहीं है कि वह दूसरी कौम को अपनी राय से चलावे या उसपर ज़बर दस्ती करे। ऐसा करना प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है और जब कि किसी प्राकृतिक नियम का उल्लंघन किया जाता है तो ऐसा करने वाले को उसका बुरा नतीजा भुगतना पड़ता है क्योंकि ये नियम ऐसे कठोर और परिवर्तन विमुख हैं कि उन के पालन करने ही में भलाई है और उल्लंघन करने वाले से ये बिना बदला लिये रहते भी नहीं। इस लिये कि ये नियम सर्वथा पक्ष-पात रहित हैं इसी से संसार में उनकी प्रतिष्ठा और मान्य है। बल्कि यों कहना चाहिये कि संसार इन्हीं नियमों की बदौलत चल रहा है। यावत् विद्या और शास्त्र सबों का यही उद्देश्य है कि हम इन नियमों को जानें और उन पर चल मनुष्य मात्र लाभ उठावें। तो निश्चय हुआ कि परिवर्तन या हल चल तभी होते हैं जब उन नियमों का उल्लंघन किया जाता है। इन नियमों के अनुसार जो स्वतंत्रा प्राप्त हुई वह चाहे धर्म संबन्धी हो चाहे व्यवहार या व्यवसाय की हो या राज नैतिक हो अथवा किसी दूसरे प्रकार की हो जब उसके अनुसार चलने का लाभ उठाने में रोकावट डाली जायगी तब हल चल का होना ज़रूरी बात हैं।

धर्म सम्बन्ध में आज़ादी न होने के हल चल हिन्दुस्तान से बढ़ कर कहां हुये होंगे। मुसलमानों ने बहुतेरा इस आज़ादी को छीन लेना चाहा किन्तु उसका बुरा परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा। हज़ारों हिन्दुओं की जान इस आज़ादी छीनने के लिये लेली गई और औरंगज़ेब ने तो इस ज़बरदस्ती का अन्त कर डाला था पीछे को यही मुसल्मानोके अधः पात का कारण हुई। अन्त को धर्म संबन्धी इन हलचलों का परिणाम यही हुआ कि भारत वर्ष में आज हर एक मनुष्य को अधिकार है कि वह चाहे जिस धर्म का पालन करे यूरप में भी न जानिये कितनों की जान इस धार्मिक स्वतंत्रता के लिये लेली गई। समाज या व्यवहार में स्वतंत्रता का भी यही हाल है ब्राह्मण लोग सामाजिक स्वतंत्रता को रोक आप सबों के ऊपर हुये। परिणाम में वे खुद गिर गये और उनके पाप से समाज भी गिर गई।

इस लिये कि इस मूर्ख समाज ने ब्राह्मण को ऐसी ज़बरदस्ती करने दिया और अन्त को इस में भी आज़ादगी के लिये हलचल हुआ। गुरू नानिक इस हलचल के मुखिया बने पीछे स्वामी दयानन्द तथा राजा राय-मोहन सरीखे दो एक महापुरुषों ने इसे करी डाला। व्यवसाय में भी हलचल होते हैं और उन्हें Strike हरताल कहते हैं। जब कि व्यवसाय के अगुआ ज़ियादह हिस्सा फ़ाइदे का आप हज़म करने लगते हैं और ग़रीब हीन दीन मज़दूरे तथा मेहनत करने वालों की कम अक़ली का फ़ाइदा वे आप उठाते हैं तो निश्चय है कि बिना हड़ताल हुये रहैगा नहीं। परिणाम में कारखाने टूट जाते हैं और कारखाने के मालिकों को बेवाजिब फ़ाइदे से ज़ियादह नुकसान सहना पड़ता है।

राजनैतिक हलचल भी स्वतंत्रता ही के लिये होते हैं जब एक क़ौम दूसरी क़ौम का स्वाभाविक राजनैतिक हक़्क़ छीन लेती है या देश में एक दल के लोग झूंठे अगुआ बन दूसरे दल पर अत्याचार करने लगते हैं तो इस दशा में हलचल आरंभ हो जाता है और स्वतंत्रता के लिये लोग प्राण तक देने को उद्यत हो जाते हैं। इतिहासों के देखने से पता लगता है कि कोई भी शासन कर्ता शासितों का बधकर बिना उस का बध हुये बचा नहीं। सैकड़ों स्वार्थान्ध झूठे अगुआ कतल करडाले गये इस लिये कि उन्हों ने भी प्रजा का खून किया था। जब २ न्याय का उल्लंघन कर ज़ोर के साथ मनुष्यों पर अत्याचार किया जाता है और लोग राजनैतिक हक़्क़ों के लाभ उठाने से रहित किये जाते हैं तब २ हल चल या राज का परिवर्तन होता है। मनुष्यमात्र को प्राकृतिक नियम को जानने और उनके अनुसार चलने की बुद्धि दी गई है। इन हलचलों से लाभ होते हैं। गरीबों पर अत्याचार रोकने को यही एक मात्र उपाय है। सताने वाले के जी में भय पैदा करने का यही यत्न है। इतिहासों में पाया जाता है कि जिस कौम में अधिक हलचल हुआ है वह आजदिन आज़ाद क़ौमों मे सब से ऊंची गिनी जाती है। इंगलैंड आदि स्वतंत्र देश इसी के बदौलत आज गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। अत्याचारी क़ौमों को उजाड़ देने का यही अच्छा उपाय है। आरंभ इन हलचलों का अवश्य

भयंकर है किन्तु परिणाम इस का अमृत फल के चखने के समान है। हमें चाहिये जहां तक हो सके हलचल होने से रोकें और यह तभी रुक सक्ता है जब सब लोग न्याय के मार्ग पर चलने को उद्यत रहैं। बेकन ने जो अंगरेजों में एक दार्शनिक हुआ है कहा है कि "यदि रोकना चाहते हो तो इन हलचलों के मूल को काट डालो क्यों कि यदि चिनगारी रहेगी तो आग अवश्य भड़क उठैगी" हम सब लोग उसी को रोका चाहते हैं किन्तु सरकार हम लोगों का चित्त दुखाती हुई उसे उभाड़ती है। सरकार की ओर से इस के दबाने का जो यत्न किया जाता है वह मानो आग में घी छोड़ने के समान होता है। सरकार को उचित है वह अपने पूजनीय दार्शिनिक बेकन के बताये मार्ग पर चले और न्याय के प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने वाले ऐंग्लो इंडियन पत्रों को रोके कि वे मनमानी यद्वा तद्वा लिख हम लोगों का जी न दुखाया करें। सच पूछो तो "सेडिशन" राजविद्रोह पायोनियर तथा टाइम्स ऐसे पत्रों में भरा रहता है जिनके लेख के एक २ शब्द में बहुधा ज़हर टपका करता है हम लोग नाहक बदनाम हैं कि नेटिव एडिटर सेडिशन फैलाते हैं। निश्चय मानिये ये प्राकृतिक नियम ऐसे टेढ़े हैं कि वे उनको उपेक्षा और निरादर करने वाले से बिना बदला चुकाये नहीं रहते। हमारे छोटे लाट श्रीमान् हुवेट साहिब की इच्छा कुछ ऐसी ही मालूम होती है कि हम अपना शासन ऐसे क्रम का करें जिसमें उन प्राकृतिक नियमों का पालन हो। यदि हमारा अनुमान ठीक है तो उक्त श्रीमान् को धन्यवाद है। सुनते हैं लाट साहब आइरिश जाति के हैं इसी से उनके शासन में कड़ाई नहीं पाई जाती। अस्तु अन्त में यही कहना पड़ता है कि परिवर्तन ऊपर कहे हुये प्रकृति के नियम पर होते हैं और संसार में न्याय और स्वतंत्रता किस तरह कायम है उसके ये परिवर्तन उदाहरण हैं।

मदन मोहन शुक्ल

संमिलित कुटुम्ब Joint family।

यहां लोग कुनबा भर एक साथ रहना बहुत अच्छा समझते हैं इसका कारण यही मन में आता है कि कुनबा भर एक साथ मिलकर रहने

से परस्पर की सहानुभूति बनी रहती है। यदि कुनवे का एक मनुष्य परलोक गामी होगया तो उसके लड़कों को परिवार के और लोग अपने निज के लड़कों के समान पालते पोसते हैं तथा उनके पढ़ाने लिखाने का सब खरच अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं। जब देश में धन भर पूर रहा दरिद्रता ने अपना पांव नहीं पसारा था, परस्पर की प्रीति और सुख प्यार में कहीं से त्रुटि न थी, न लोग तब इतने सुख के लोलुप थे; परिश्रमी और साहसी होते थे; उस समय संमिलित कुटुम्ब अवश्य मेव गृहस्थाश्रम की शोभा थी। किन्तु अब सभी बात इसके विपरीत देखी जाती है यहां तक की भाई भाई को नहीं सुहाता जेठानी भावज को नहीं चाहती न भावज जेठानी को, घर के एक२ आदमी रात दिन यही सोचा करते हैं कि कब जुदा हो सुख से रहैं। यदि कहा जाय कि यह अविद्या और मूर्खता के कारण से है सो भी नहीं इस लिये कि अच्छे विद्वानों के यहां भी यही हाल देखा और सुना जाता है। स्त्रियों का मूर्ख रहना भी इसका एक हेतु माना गया है किन्तु विचार कर देखो तो स्त्रियां कितना भी पढ़ी लिखी हों पर जो उनका स्वभाव है वह नहीं बदल सकता। कुनवे में दूसरे को अच्छे गहने या कपड़े पहने देख आप भी वैसाही गहने और कपड़ों के लिए कहैंगी और न मिला तो मन ही मन कुढ़ती रहैंगी और जैसे होगा पति को कुनवेवालों से अलग कर देंगी। पति जो परिश्रमी और पढ़ा लिखा हुआ तो उदर निर्बाह अच्छी तरह कर सकेगा नहीं तो मेहनत मज़दूरी कर दो चार आने पैसे भी सुबह से शाम तक मे लाना कठिन हो जाता है। यदि कहो विलाइत के लोग एक दूसरे से अलग रह कर भी आपस में प्रेम रखते हैं सो इस लिये कि उन लोगों में यह नियम चलपड़ा है कि लड़का कमाने खाने लायक हो गया तो अपनी पसन्द से जहां चाहेगा वहां अपना ब्याह करेगा बाप मा को कोई अधिकार नहीं कि दखल दें। न उनमें विवाह इत्यादि संस्कार ऐसे हैं जिन्में कुनबे के सब लोगों के इकट्ठे होने की आवश्यकता है। सिवा इसके वे खुद परिश्रमी होते हैं एक दूसरे की कमाई पर निर्भर नहीं रहते। हम लोगों के सुस्त और अनुद्यमी होने का संमिलित कुटुम्ब भी एक कारण है। यह तभी शोभा

देता है जब कुनबे के सब लोग पढ़े लिखे और परिश्रमी हों; एक दूसरे की सहायता करते रहें; दूसरों की कमाई पर निर्भर न रहें बरन अपने बाहुबल से इस असार संसार को पार करने का उद्योग करें; और जो सर्वथा अशक्त और धन हीन हों उनकी सहायता कर उन्हें अपने बराबर का कर दें।

केशवानन्द चौबे–रायपुर–सी० पी०

हम अपने आप अपने पैरों पर कैसे खड़े हों।

सब के पहिले यह सोचना उचित है कि बिना बकबक के और बिना भांत २ का रिज़ोल्यूशन पास किये हम कहां तक और कितना कर सकते हैं। जब हमें उस काम में अपनी शक्ति और अपनी पहुंच का पूरा निश्चय होगया तब तत्काल उस काम को आरंभ कर दें क्योंकि कर्तव्य का निश्चय हो जाने के उपरान्त उस काम में ढिलाई या देर करना व्यर्थ को समय नष्ट करना है। कहा भी है। "क्षिप्रमक्रियमाणस्य कालः पिवति तद्रसम्" । जिससे देश की दुर्गति और दरिद्रता दूर हो उस पर ज़ोर देना हमारा पहिला काम है। Self reliance आत्म-निर्भर देश की खोई हुई कारीगरी तथा व्यौपार के पुनरुज्जीवन का बड़ा भारी सहारा है। ऐसा करने वाला केवल एक आदमी समस्त देश भर के लिये उदाहरण बन सकता है। इटली देश में मेज़ीनी और गेरी वाल्डी एकही थे जो इटली भर के लिये देश भक्ति तथा मुल्की जोश पैदा कर देने के नमूने हुये। संसार भरमें उनके नाम प्रातस्मरणीय और पुण्य श्लोक कहे गये हैं। इतिहास पढ़ने वाले तथा जो पत्रों को सदा पढ़ा करते हैं ऐसे कौन होंगे जो इन देश भक्त महापुरुषों का नाम न जानते हों। हमारे यहां लाला लाजपतराय तथा तिलक महोदय और विपिन पाल प्रातः स्मरणीय हैं। आर्कराइट जिन्होंने पहले पहल इंगलैंड में कपड़ा बनने की मिल निकाली तथा जेम्सवाट जिन्होंने भाफ की ताकत ईजाद की एक ही आदमी थे पर तमाम दुनिया को उनके ईजाद से फ़ाइदा पहुंच रहा है। अपने पावों पर खड़े होने का दूसरा उपाय विदेश की बनी चीज़ों को काम में न लाने का प्रण है। देश का देश इस

भांत प्रण कर ले तो देश से दरिद्रता का रङ्ग फीका पड़ जाय और धन यहां का बाहर न जाने से लोग न केवल मालदार हो जायं बल्कि मुल्की जोश की ताकत Political strength उनमें आजाय। भारत के उद्धार का इस समय दोही उपाय है Industry and political strength शिल्प की उन्नति और राजनैतिक पटुता। हमें यह लिखते खेद होता है कि हमारे उन्नतेच्छुक नरम या गरम चाहे जिस दल के हों राजनैतिक पटुता के लिये तन मन से यत्न कर रहे हैं पर शिल्प और वाणिज्य Industry and trade की उन्नति के लिये तनिक ध्यान नहीं देते। देश में शिल्प और वाणिज्य के सुरक्षित रहनेही से हम स्वराज पा सकते हैं। सच पूंछो तो भारत का उद्धार मिल के मालिकों की मिल और किसानों के खेत पर जितना निर्भर है उतना लेक्चरारों की लेक्चर हाल तथा सम्पादकों की लेखनी पर नहीं। लेक्चर और लेख Ideal केवल ज़बानी जमा खर्च हैं मिलके मालिक और खेतिहर करके देखा देने वाले हैं। उन्ही की पूरी तरक्की पैरों पर खड़ा होना है।

पतिव्रता का एक दृष्टान्त।

आज मैं एक नई पुस्तक पढ़ रही थी उसमें पतिप्राणा महाराणी कलावती का वृत्तान्त पढ़ मुझे पश्चात्ताप हुआ कि जिस भारत भूमि में ऐसी २ ललना ललाम हो चुकी हैं जिन की कीर्ति आज लौं लोग गाते हैं उसी भूमि में अब ऐसी स्त्रियां हैं कि वे यह समझती ही नहीं कि कीर्ति बढ़ाना किसे कहते हैं। हे भारत वर्षीय भगिनियो! आप लोगों से मेरी यही विनती है कि आप अपना पुराना गौरव प्राप्त करने के लिये सयत्न हों।

कर्णसिंह राजपुताने के किसी प्रान्त के राजा थे कलावती उनकी रानी थी जिस समय अलाउद्दीन लूट मार करता हुआ कर्णसिंह के राज्य की सीमा से निकला तो सब राजपूत इकट्ठे हो कर्णसिंह को अगुआ कर लड़ने को उद्यत हुये-देर तक लड़ाई होती रही दोनों ओर के

बड़े २ बीर योधा काम आये राजपूतों की सेना बहुत कम थी तौ भी कर्णसिंह ने वीरता से मुसल्मानों के छक्के छुड़ा दिये। ज़हर की बुझाई एक ऐसी तीर कर्णसिंह के लगी कि वह मूर्छित हो घोड़े से नीचे गिर गये। कर्णसिंह को घोड़े पर न देख सेना सब तितिर बितिर हो गई। मुसल्मान इस घात में हुये कि जख़मी राजा को किसी तरह पकड़ लावैं किन्तु उसकी पतिब्रता रानी कलावती भी कर्णसिंह के साथ रण भूमि में आई थी उसने जल्द अपने पति को डोली में रख-संग्राम में सिपाहियों को युद्ध के लिये उत्साह दिलाते खुद लड़ने लगी। कई मुसलमान डोली की ओर झुके रानी ने तलवार हाथ मे ले सबों को मार गिराया। सांझ तक बराबर ऐसे ही लड़ती रही। सन्ध्या समय जब लड़ाई बन्द हो गई तो अलाउद्दीन की फ़ौज राजपूतों के भय से आगे बढ़ी और राजपूतों ने अपनी राजधानी में आय दम लिया।

कर्णसिंह के शरीर से तीर निकाला गया और वह बड़े पीड़ित थे। वैद्य जो इलाज के लिये बुलाये गये सबों ने कहा तीर विष से भरा था राजा के बचने की कोई उपाय नहीं हो सक्ती! हां यदि कोई किसी तरह राजा के विष को चूसले तो यह बच जा सकते हैं किन्तु जो इस विष को चूसेगा वह निश्चय मर जायगा। कर्णसिंह को यह स्वीकार नहीं था कि कोई पुरुष उनके लिये अपने प्राण दे। रात को जब राजा सो रहे थे कलावती ने उनको दवा सुंघाय बेसुध कर दिया और आप उनके घाव का विष चूसने लगी। थोड़े ही देर में सब विष चूस कर फेंक दिया। राजा तो बच गया पर भोर को दो तीन घड़ी दिन चढ़ने के उपरान्त कलावती की दशा बिगड़ने लगी जब देखा कि समय समीप आगया तो बोली मैं आप की दासी और प्रजा हूं मेरे ऐसे सहस्त्रों आप पर निछावर हैं। मुझे यह स्वीकार न था कि मेरे जीते जी मेरे प्राणबल्लभ इस संसार से कूंच कर जायं इस लिये मैंने आप के विष को चूस लिया। अब अपना चरण मुझे दीजिये कि मैं आप के चरणों का आश्रय लिये हुये इस असार संसार से बिदा हूं। पति का चरण अपने मस्तक पर धरे यह पतिव्रता सुरधाम सिधार गई। अब इस समय इस तरह की पतिप्राणा ललनाओं

का अभाव है इसी से भारत इस आरत दशा को पहुंच गया है। बहिनों भारत के उद्धार के अनेक प्रयत्नों में एक यह भी है कि यहां कलावती सरीखी स्त्रियां उपज खड़ी हों जो कलावती ऐसी पतिप्राणा ललनाओं का पूर्ण कला से अनुकरण न कर सकें तो कुछ अंश में तो उनकी समानता अपने में लावें ।

एक अबला ।

प्राप्त पुस्तक ।

सुधासिन्धु ।

यह मासिक पुस्तक वैद्यक शास्त्र सम्बन्धी बातों के लिये बड़ी उपयोगी है । यद्यपि इस तरह की और कई एक मासिक पत्रिकायें निकलती हैं किन्तु यह हमे सब से उत्तम और प्रतिष्ठित जंची । ३ अंक इसके निकल चुके हैं । संपादक वैद्यनाथ शर्मा, प्रयाग । वार्षिक मूल्य २) है ।

बल्लभकुल दंभ दर्पण ।

मिस्टर बलाकेट कृत—इसमें वल्लभ कुल के दंभ की अच्छी ज़ीट उड़ाई गई है । जैसा उनके चरित्र का दर्पण इसमें है यदि यह सब सच है तो नाम लेते घिन होती है तब उन पर श्रद्धा रखना और उनके सम्प्रदाय के शिष्य होना तो दूर रहा । यह भी समय की महिमा है कि जो रास्ता दिखाने वाले हैं वेही इस लक्षण के हो गये । मूल्य ।=)

नये किस्म का अर्क ।

बाद बड़ी जांफ़िशानी तालाश और हज़ारों पित्ते मारी के यह एक बड़ाही अजीबो ग़रीब अर्क तैयार किया गया है। अफलातू अरस्तू सुक़रात सरीखे हकीमों न्यूटन हमिलटन मिल आदि आक़िलों के दिमाग में भी न सूझी होगी कहां तक कहें बड़े २ फिलासोफरों की फिलासफी के इत्र का मजमुआ इस्मे रखदिया गया है! इस अर्क के तैयार करने मे मैंने तमाम तिब्बका हीर खींच लिया है। इस्के पीने से अस्सी बर्ष की बुढ़िया काबुली घुड़िया सी कुलाचें भरने लगती है। साठ वर्ष का बुड्ढा भी सोलह

वर्ष का जवान गभरू बन पुराना ऊंट सा बलबलाता फिरता है। कैसाही उदार और सख़ावत का दम भरता हो इसके सेवन से कंजूस मक्खी चूस बन बैठता है। "मरजैहौं तोहि न भजैहौं" महा मंत्रका उपासक बन जाता है। बहुत पढ़ा लिखा हो खानदानी हो किन्तु लोगों में प्रतिष्ठा कम हो इस्के लेने से हज़ारों आदमी पैलगी करने लगते हैं। बे रोज़गार बैठाहो नौकरी न लगती हो तमाम सरकारी आफिस और रेलवे के दफतरों तक की खाक़ छान आयाहो इस्के पीतेही फौरन डिटेक्टिव पुलिस की जगह मिल सक्ती है। कोई कैसही देश भक्त तमाम देशोन्नति के लिये हफनाता हो बलन्द हौसिले से वन्दे मातरम् चिल्लाता फिरता हो इसका एक डोज़ लेतेही ख़ासा लायल हो जल्द राय बहादुरी के ख़िताब का हक़दार बन जायगा। कितना ही जाहिल जट्ट हो एक हर्फ लिखने का शऊर नहो हम दावेके साथ कह सक्ते हैं इस्की एक शीशी ढाल लेने से औव्वल दरजे का लिक्खाड़ हो जायगा किसी पत्र का संपादक बन जिसपर जो चाहे आंय बांय शांय लिख मारेगा। ब्राह्मन हो तो इस्के प्रताप से फूला फला भैंसासा हो अपने लंठ यजमानो में महा पण्डित बन जायगा। व्यासगद्दी पर बैठ फूटी ढोल की सी अवाज़ से सप्त स्वर अलापता हुआ ललना जन बल्लभ बन जायगा। यह कुबेर को धन हीन; ईमान दार को दिवालिया, काले कोइलासे रंग वाले को गौरांग ज़हीन को कुन्द, गोरे कर्मचारियों के पाद दलित को उनका चरण सेवी, अमीर को फकीर फकीर को हकीर बना सक्ता है। इस्की अधिक प्रशंसा अपने मुहमियां मिट्ठू होना है। हज़ारों लाखों प्रशंसा पत्र हमारी पगड़ी और अबा के हर कोनों में लटका करते हैं। शीशी अब बहुत थोड़ी रह गई हैं जिसे मंगाना हो दोपैसे का टिकट चिपका फौरन दरख़ास्त भेज दे नही तो पीछे हाथ मल २ पछताना पड़ेगा दाम एक खुराक का दफा १२४ पता नादिहन्द मुफ्त खोरोंका कूचा

व्याङ्करप्ट स्ट्रीट

L.

REGD. No. A. 308.

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र ।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जिल्द २९ | नवम्बर १९०७ | संख्या ११

विषय सूची ।

पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १।॥) समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

-:॥ श्रीः ॥:-

जिल्द २९ संं० ११ | प्रयाग | नवम्बर सन् १९०७ ई०

भारत का भावी क्या होगा ?

जब मनुष्य के क्षणिक जीवन में एक पल भर की कोई नहीं बता सक्ता कि अभी क्या है क्षण भर के उपरान्त क्या होने वाला है तब इतने दीर्घकाल का जिसमें शताब्दियों का बीत जाना कोई बड़ी बात नही है कौन कह सक्ता है। परन्तु जैसी देश की वर्तमान बुरी दशा है और जैसी दुर्गति यहां के लोग सह रहे हैं उससे अनुमान किया जाता है कि बहुत दिनों तक हमारी यही दुरवस्था न रहेगी। यातो सब भांत हीन दीन हो और भी नीचे गिर हमारी आर्यजाति का मूलोच्छेद हो जायगा या कि, देर आये, दुरुस्त आये वाली कहावत पर येही हिन्दू सर्वमान्य और सर्व श्रेष्ठ हो सभ्यातिसभ्य जाति के अगुआ बन जांयगे। खोये हुये गौरव को पुनः प्राप्तकर अपने नवाभ्युत्थान में परोसी चीन और जापान ऐसे उत्साही और पुरजोश देशों को अपना सहकारी कर लेंगे। उस समय इस गिरे भारत के भाग्य की सीमा न रहेगी। पर इस भविष्य वाणी के पूरा उतरने को कितना कालातिपात होगा सो साधारण मनुष्य की कौन कहे महापुरुष त्रिकालज्ञदर्शी योगी जनों की ध्यानावस्था के भी परे है। प्रजा की उर्वरा मानसी वृत्ति में जैसा इस समय स्वदेशी का बीज बोया गया है जो कुछ २ अंकुरित भी हो चला है और अब बहिष्कार

वारिद् के अमृत जल से ज्यों २ सिचता जायगा त्यों २ फबकेगा। अनेक मिल और देशी कारखानों की जैसी २ खाद इसमें पड़ती जायगी तैसा २ बढ़ेगा अन्त को यह महावृक्ष इतना बड़ा होगा कि समस्त देश का देश इसकी छांह में विश्राम पावेगा। जो अमृत फल इसमें फलैगा वह आवाल वृद्ध बनिता सबों को जीवन दान के समान होगा। जो लोग इस समय बे रोज़गारी के रोग से रुग्ण और पीड़ित दशा में पड़े आर्तनाद करते हुये चिल्ला रहे हैं वे इस वृक्ष के फलों के रस से आप्यायित चंगे हो उठैंगे और हर्ष निर्भर हो भारत माता की जैजै कार करेंगे। हमारा धन बाहर जाने से बच और सुरक्षित रह देश की धन धान्य संपत्ति को सौगुना कर दिखावेगा। उस समय "धान्यं धनं पशु बहु पुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः" यह आशिष प्रार्थना सार्थक और सफल होगी। पर समझे रहो यह सब सहज में न हो जायगा। इसके पूरा करने में अनेक विघ्न आ पड़ेंगे; तुम हर तरह पर हतोत्साह किये जाओगे; बड़ी २ डर दिखाई जायगी, कितने कायर कापुरुष भयभीत हो अगम्य स्थान में जा लुकैंगे। कितने लोग बनावटी राजभक्ति दिखलाते देशोद्धार महापादप के काटने को कुठार बन बैठैंगे। कोई कोना अंतरा न बचैगा जहां स्वजाति और स्वदेश के कोढ़ डिटेकटिब ताक में न रहैंगे। ज़रा भी छिद्र पाय भीतर पैठ हमें सत्यानाश में मिलाने से न चूकैंगे "छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशंकः" भले कामों में अनेक अड़चन और विघ्न होते ही हैं। "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" तो क्या विघ्नों के भय से हमें अपने दृढ़ निश्चय से हट जाना चाहिये? ऐसा करना तो कायरों का काम है। तुम उन आर्यों के सन्तान हो जो सब क्लेश सह जिस बात के करने को उन्हों ने ठान लिया अथवा जिसके लिये वे दृढ़प्रतिज्ञ या दृढ़निश्चय हो गये उसे करी डाला। हिन्दुस्तान के इतिहास में हम्मीर सरीखे दृढ़ प्रतिज्ञों के अनेक दृष्टान्त पाये जाते हैं।

आत्मशासन या स्वराज तुम्हारा अन्तिम लक्ष्य है। आत्मनिर्भर अपने पैरों पर खड़े होना इसकी पहली सीढ़ी है। स्वदेशी की उन्नति आत्मनिर्भर से जैसा जल्द हो सक्ती है वैसा दूसरे पर भरोसा रखने से

नहीं। तब हम अपने पैरों पर खड़े होने के लिये क्यों कटिबद्ध न हों? तुमको आगे बढ़ने के लिये यही सब से पहली बात है। अंगरेज़ी राज्य के स्वास्थ्य ने इस गुण को हम से सर्वथा छीन लिया। कोई दूसरी जाति होती तो इस स्वास्थ्य और अमनचैन को अमृत फल मान इसका भर पूर स्वाद चखती पर हम अत्याचारी मुसलमान बादशाहों के अत्याचार से इतना ऊब गये थे कि इस अमनचैन को गनीमत समझ खूब ही टांग पसार सोते रहे। बृटिश शासन के अटल रीति पर यहां सुस्थिर होने का भी तो यही कारण हुआ। यह क्या मालूम था कि अभी का अमनचैन पीछे कुछ और ही गुल खिलावेगा। रोटी दिखाय ढेला फेंकने की भांत अमनचैन में पड़ हम अपनी रोज़ की रोटी भी खो बैठेंगे। अस्तु हमारे सामयिक शासन कर्ता न केवल शासन के काम में कुशल हैं अपिच वणिक् वृत्ति भी अच्छी तरह जानते हैं। उसी वणिक् व्यापार को काम में लाय हमारी इस अटूट नींद का भरपूर फ़ायदा उठाते रहे और तै कर लिया था कि ये काहे को कभी जागैंगे जहां तक बने अपने स्वार्थ साधन से न चूको। जैसा कोई दूध मुहे बालक को फुसलाता है वैसा ही जब ये बहुत रोवैं गावैं तब एक आध टुकड़ा फेंक दिया करो। किन्तु भूल से हो या अपने निज स्वार्थ की दृष्टि से नेत्रांजन की भांति एक बार एक ऐसा सुरमा हमारी आंख में लीप दिया गया था कि उसके असर से धीरे २ हमारी नींद टूटने लगी। सहसा चौंक पड़े आंख खोला तो इस सौ वर्ष में और २ मुल्कों के मुकाबिले हमने अपने से ज़मीन और आसमान का अन्तर पाया। इस समय भूमण्डल की कोई जाति नहीं है जो आगे न बढ़ रही हो। अफरीका तथा अनेक द्वीप द्वीपान्तर की असभ्य से असभ्य जाति भी सभ्यता की दौड़ में सरपट भाग रही हैं और हम लोग गुलामी की जंजीर से जकड़े हुये दीन हीन मन मलीन पस्त हिम्मत सयाने से हो रहे हैं। संसार की जितनी सभ्य जाति सबों के पीछे हैं। चतुर शासकों के भांत भांत के कानून और नये २ रिज़ोल्यूशन के जाल में ऐसे फसे हुये थे कि किसी तरह बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं पाते थे। किन्तु धन्यवाद है कर्तुं मकर्तुं मन्यथा

कर्तुं समर्थ उस बड़े पोलिटिशन की अद्भुत पालिसी को जिसने स्वदेशी और बहिष्कार ऐसा सुझा दिया कि चतुर सयाने भी किंकर्तव्यता मूढ़ हो रहे हैं। सब चतुराई काम में लाते हैं पर जैसा चाहिये वैसा उनकी कोई युक्ति यथोचित कारगर नहीं होती, और एक छोर से दूसरे तक पढ़ अपढ़ सब एक स्वर से इसकी तान अलापते देखाई देते हैं।

अपनी भलाई और अपनी तरक्की कौन न चाहता होगा खास कर ऐसे समय में जब राजा के वर्ग वाले और प्रजाके वर्ग वालों में बराबर का होड़ Competition चल रहा है। राजा के वर्गवाले यही चाहते हैं कि जहां तक हो हम प्रजा का हक्क दबा सुर्ख रुई हासिल करें और शासन के काम में जो मुखिया और प्रधान हैं उनकी दृष्टि में बड़े खैर खाह और कार गुज़ार ठहर जल्द२ तरक्की पाते रहैं। तब प्रजा के वर्गवाले यह सोच कि प्रजा का हक्क न जाने पावे हमारे सामने परसी हुई थाली से जो छीना चला जा रहा है बस नहीं चलता कि रोकैं और अपना निज का भोजन न लैजाने दें केवल रोते गाते और पछताते हैं। वही "सेडिशन,, राजविद्रोह कहाजाता है। केवल कहाजाता हो सो नहीं वरन दिव्य दृष्टि से देखा जा रहा है कि किस तरह इसे विद्रोह फैलाने का अपराधी कर दें। सच पूछो तो हम किस बूते पर विद्रोह फैलाने का साहस, कर सकते हैं जब हमे अपने निज का हक्क पाना दुशवार है। इस कहने की बदौलत हमलोग बड़ी२ दुर्गति सह रहे हैं फिर भी अपनी आदतें नहीं छोड़ते सो इस लिये कि कह डालने से व्यथा कुछ घट जाती है। जैसा बरसात में जब तलाव भर गया हो तब एक ओर का बांध तोड़ कुछ जल उसमें का निकाल देनाही उस ताल की रक्षा का उपाय है। "पूरोत्पीडे तड़ागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया" इसी को ऐंगलो इण्डियन पत्र कहते हैं "ये नहीं जानते उनके लिये क्या और किसमें भलाई है" तात्पर्य यह कि हम इतने क्षुद्र और कम अक़िल हैं कि केवल अपना ही फ़ायदा सोच रहे हैं गेहूं के साथ बथुआ सीचने वाली पालिसी को सर्वथा नहीं समझते। इसी से हम कहते हैं भारत का भावी क्या होगा।

न्याय और शान्ति।

न्याय और शान्ति इन दोनों का ऐसा घनिष्ठ संबन्ध है कि शान्ति सदैव न्याय के आधार पर रहती है, अन्याय का लेश भी शान्ति में बड़ी बाधा छोड़ देता है। अशान्ति बहुधा छोटे दरजे के लोग और मध्यम श्रेणी वालों में पहले प्रगट होती है। प्रारंभ ही से उसके मिटाने की जल्द फ़िकिर न की गई तो धीरे २ अशान्ति फैलती हुई संपूर्ण देशभर में छा जाती है। तब इसका निर्मूल करना बहुत कठिन हो जाता है। देश के एक ओर और एक समूह से उसे हटाओ तो दूसरी ओर और दूसरे दल में विस्तार पाती है। हमने ऊपर कहा है कि अशान्ति पहले मध्यम श्रेणी और छोटे लोगों में फैलती है सो इस लिये कि बड़े लोगों में बहुधा अन्याय का असर कम पहुंचता है। दूसरे यह कि जब बड़े लोग स्वयं छोटों के लिये अन्याय का रूप बन रहे हैं तब बहुधा उन्हें इस बात की निर्ख़ ही नहीं रहती कि न्याय या अन्याय क्या है। उनकी समझ में तो जो वे करते हैं सब न्याय और युक्ति युक्त है। उनकी राय में छोटे लोग इसी लिये हुई हैं कि उन पर न्याय अन्याय का कुछ ख्याल न कर निज के सुख और अराम में कसर न रक्खी जाय। हमारे कर्मचारी भी बहुधा इन्हीं बड़े और समृद्धि शालियों का अधिक ध्यान रखते हैं और समझते हैं कि इन बड़ोंही का रुख-देख हम अपना सब प्रबन्ध और मुल्की इन्तिज़ाम करते रहें बस अशान्ति रुकी रहेगी पर यह हमारे कर्म चारियों की भूल है। उन्हें चाहिये कि मध्यम श्रेणी वालों का मन ले इन्तिज़ाम करें। सच तो यह है कि ये बीच के दरजे वाले इन बड़ों से इन दिनों बहुत ही चिढ़े हुये हैं इसी से जहां तहां जब तब देश में अशान्ति फैल जाती है। समृद्धशाली बड़ों की अपेक्षा इन बीच वालों का दल सब ठौर अधिक रहता है। गवर्नमेंट के कर्मचारी यही समझते हैं कि मुल्की इन्तिज़ाम में इन बड़ों की राय "पबलिक ओपीनीयन" सर्वसाधारण का ऐकमत्य है पर वस्तुतः ऐसा नहीं है। बहुधा इन बड़ों की राय से सर्वसाधारण की राय में बड़ा अन्तर रहता है इस लिये कि इन

बड़ों का उद्देश्य जितना कर्मचारियों के खुश रखने का रहता है उतना सर्व साधारण के हित का नहीं। जैसा इस समय शासन का चक्र चल रहा है उसके अनुसार जिसमें राजकर्मचारी का हित है उसमें राजा का नहीं है। जैसा कहा है "नरपति हित कर्ता द्वेष्यतां याति लोके जनपद हितकारी त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः" तब शान्ति फैलने की सुगम उपाय मध्यम श्रेणी वालों को प्रसन्न रखना है। जब तक उनके साथ न्याय का वर्ताव न होगा तब तक अशान्ति भी नहीं मिट सकती। बंगाल आदि कई प्रान्तों में जो इस समय अशान्ति फैल रही है और प्रजा वर्ग प्रसन्न नहीं है सो इसी से कि मध्यम श्रेणी वालों का वहां बड़ा तिरस्कार होता है। हम प्रत्येक प्रान्तीय गवर्नमेंट से प्रार्थना करते हैं विशेष कर अपने लाट श्रीमान् हुयेट साहब से कि वे अपने २ अधिकृत प्रान्तों में यदि पूरी तरह शान्ति रखना चाहें तो इन बीच के दरजे वालों की भी सलाह मुलकी इन्तिजामों में लिया करें। मसल है "न सांप मरा न लाठी टूटी" बहुधा अशान्ति पैदा करने वाले यही लोग होते हैं इस लिये कि सर्वथा हानि उन्हीं की इन प्रचलित प्रबन्धों में देखी जाती है। तब जो इन के अगुआ भी प्रबन्ध कारिणी कमेटियों में शरीक़ कर लिये जांय तो आशा है अशान्ति पैदा करने वाली बातों का अंकुर ही न जमे और न्याय भी भरपूर हो। अनेक तरह के अत्याचारों के होते भी हम मुसलमान शासन कर्ताओं से क्यों सन्तुष्ट रहे? इसी लिये कि अब के समान मुल्की इन्तिज़ाम के प्रबन्ध कर्ता हाकिमों को निरी हुकूमत की बू नहीं समाई थी। एक मज़हब को छोड़ और सब मे वे हमें अपने बराबर का समझते थे इसी से कभी कभी को उनका अन्याय भी हमें गवारा था और सब सहलेते थे। अब तो हां हुज़ूर वाला न्याय चाहो वास्तव में न्याय संगत हो पर सन्तोष न दे अशान्ति का हेतु होता है। हां हुज़ूर वालों का ऐसा करना भी उचित मालूम होता है। इस लिये कि उनका कर्मचारियों का किसी न किसी बात से इतना घनिष्ट संपर्क है कि गवर्नमेंट की निगाह में इन कर्मचारियों की सुर्ख़ रूई के लिये हमारे रईसों को उनके मन की करना ही पड़ता है। मध्यम श्रेणीवालों का

गवर्नमेंट तथा कर्मचारियों से कोई लगाव नहीं रहता तब वे खुशामद क्यों करने लगे वरन जो शुद्ध न्याय और प्रजा के हित की बात है वही वे चाहेंगे और हो जाने से सब लोग सन्तुष्ट रह देश में शान्ति को स्थान देंगे।

गवर्नमेंट से सविनय प्रार्थना की एक दूसरी बात और भी है कि पायोनियर सरीखे ऐंगलो इण्डियन पत्रों का तदारुक किया जाय क्यों कि इन पत्रों के कडुये लेख अशान्ति को और अधिक फैलाते हैं। न इन के लेख में न्याय को अवकाश दिया जाता है। जो कुछ हमारी बुराई है उसे ये सदा ढूंढ़ा करते हैं जिसमें सर्कार हमारी कुछ भलाई किया चाहता है उसकी शुरू ही से जड़ काटते हैं और हमारे लिये बिष उगलने से नहीं रुकते। हम लोग जो लिखते हैं सो इस इच्छा से कि जहां पर अन्याय है और सर्कार का ध्यान उस ओर नहीं है उस ओर ध्यान दे उसे मिटाने का यत्न किया जाय। पर उसका मिटाना या संशोधन दूर रहा यह अलबत्ता देखा जाता है कि यह बड़ा साहसी है इसको रोको कि ऐसा न लिखा करे। ऐंगलो इण्डियन पत्र हम लोगों को चाहे जैसी कड़ी से कड़ी बात लिख डालें जिससे हम लोगों में अशान्ति फैलने का डर है उसकी सर्वथा उपेक्षा कर दी जाती है। हम लोग देशी पत्रों पर अलबत्ता विशेष कड़ाई रहती है इसी से हमारी प्रार्थना है कि सर्कार जैसा हमारी ख़बर लिया करती है वैसा ही इन की ख़बर भी लीजाय ऐसा होने से अशान्ति की जड़ कटी रहैगी।

वृद्ध (भारत) और दिवाली।

एक वृद्ध जंगल में रह कर अपना समय बिताता था।
सूरत से वह महा दुखी औ उदासीन दिखलाता था॥
निर्बल कृशित भूख से व्याकुल इस प्रकार था उसका तन।
पागल सा प्रतीत होता था निर्धन होने के कारन॥
कुछ संकेत अंगुलियों से वह पड़ा भूमि पर करता था।
कभी कभी कुछ बातें कह कर दुख से आहें भरता था॥
उसकी दशा देख कर चुपके एक वृक्ष के नीचे जा।

काम लगा कर मैं उसकी दुख भरी बात को सुनता था ॥
कहीं रोशनी ज्वलित अग्नि की चहुं दिस जंगल में छाई।
जिसको देख वृद्ध के मन में याद दिवाली की आई ॥
यद्यपि विकल रूप था उसका पर वह देख हुआ कुछ शान्त।
कहने लगा सोच कर फिर वो कुछ अपना पिछला वृतान्त ॥
अहा ! दिवाली जब आती थी जग जगमग हो जाता था।
रंग रंगीले बूटों से घर सज्जित स्वच्छ दिखता था ॥
ऊंचे नीचेघर महलों पर जहं दीपक लहराते थे।
मानो देवगणों को आने का मारग बतलाते थे ॥
सब जन मिल कर अति उछाह से लक्ष्मी पूजन करते थे ॥
उस कौतुक को देख हमारे जनित कष्ट सब हरते थे ॥
करते बंद व्यापारी लेखा करके विगत वर्ष का कार।
होता था प्रारंभ नया फिर इस दिन से उनका व्यापार ॥
बालक युवा वृद्ध सबही का मुख प्रफुल्ल दिखलाता था।
महा तुच्छ से तुच्छ जीव सुख से त्यवहार बिताता था ॥
दुनिया की समस्त सम्पति से भरा पुरा था मेरा घर।
ऐसा नहीं किसी का भी था इस धरती तल के ऊपर ॥
कुछ दिन से क्या जानैं किस ने ऐसा टोना डाला है।
जिसने धीरे धीरे मेरा तो सर्व नाश कर डाला है ॥
बुधि मेरे सन्तानों की जो तब से पलटा खाई है।
तजि व्यवसाय दासता करना दिल में यही समाई है ॥
परदेशिन संग खेल जुआ अपनी सब सम्पति खो बैठे।
मेरी बची बचाई को भी दे उनको कर धो बैठे ॥
ढो कर वे ले गये देश निज ये बैठे पछताते हैं।
बने आलसी मूर्ख अपौरुष अपना समय गवांते हैं ॥
नित नित पड़त अकाल देश में कितने जन मर जाते हैं।
कितने ग्रसित प्लेग से हो कर फिर उठने नहिं पाते हैं ॥

यह सब दशा देख कर उनकी महादुखी मैं होता हूं।
    इसी शोक में विह्वल रहता रात दिवस नहिं सोता हूं॥
गिरी दशा का चित्र हमारी कोई खींच कर दिखलावे।
    मेरी ओर से हित की बातें स्वच्छ हृदय से समझावे॥
प्यारे पुत्र! देख कर मेरी ओर मूर्खता त्याग करो।
    जुवा खेलना द्वेष ईर्षा छोड़ बन्धु अनुराग करो॥
विद्या पढ़ो पढ़ाओ सीखो सब मिल उद्यम करो व्यपार।
    अपना धन मत दो विदेश को करो "स्वदेशी" वस्तु प्रचार॥

माधव शुक्ल—प्रयाग

(कष्ट)

रे! कष्ट तोहि नहि और ठौर,
    भारत गर्] लागत दौर दौर।
यह भूमि भई तोहिं अस पियारि,
    रम रह्यो सकल सुध बुध बिसारि॥१॥
पहले छलयुत दृढ़ प्रीत कीन्ह,
    पुनि धीरे धीरे स्वबश कीन्ह।
अब घर घर डारिन पात पात,
    तजि,अंत बसब तोहि नहिं सोहात॥२॥
बानर जिमि गहि शावक बिलारि,
    अति प्रेम करत निज हिय बिचारि।
नहि छाड़त जबलौ मर न जात,
    सोई लच्छन तुमरो दिखात॥३॥
जबसे निज दल युत बसे आय,
    श्री नष्ट भई अति बढ्यो ताप।
जन प्रेम एकता गई दूर,
    निसदिन रोवत यह हिय बिसूर॥४॥
परतहिं तुम्हरी पग देस हाय,
    बनबैठो भारत शुष्क काय।

धन, अन्न, पुरुष, विद्या, बिहीन,
हूँ गयो दीन अरु पराधीन ॥ ५ ॥
कहुं प्लेगरूप कहुं गरु अकाल,
कहुं राजनीति में पांव डाल।
यह बिधि कलपावत आर्य बंश,
रे निठुर! तोहि नहि दया अंश ॥ ६ ॥
हम बिनवत तोहिसन बारबार,
जिन कर दुखियन ऊपर प्रहार।
हूँ रहे बिपति फंसि जे अधीर,
का लाभ तिनहिं पुनि दिये पीर ॥ ७ ॥
मम भारत को सीधो सुभाव,
अब याको तजि कहुं अंत जाव।
यह प्रीति न तुव संग करन जोग,
तासे चाहत अब तव बियोग ॥ ८ ॥
इङ्गलैंड जर्मनी आदि देश,
तिनमे न करत कस तुम प्रवेश।
याही के हित का जनम तोर,
हूँ गयो कुटिल कुत्सित कठोर ॥ ९ ॥
बहु बिनती कर कर गए हार,
तजि भारत गवनहु सिन्धु पार।
यहि में भल तुमरो अरु हमार,
नतु अवस बढ़ैगो हिय बिकार ॥ १० ॥
बस, अंत कहव हम एक बात,
तुमरी करतब नहि सह्यो जात।
अबहूं अपने जिय समुझ लेहु
कहुं, जाहु; आपनी राह लेहु ॥ १ ॥

माधव शुक्ल—प्रयाग

जातीय कर्तव्य और उसके साधन।

इस नये जोश पर जितना ही ध्यान दो उतना ही इसकी उत्पत्ति; बढ़ता हुआ इस का प्रचार और अन्तिम परिणाम इसका क्या होगा; इस सब के बारे में नये २ ख्यालात मन में उठते हैं। प्रकृति के नियमानुसार समस्त जन समूह कई एक कौम में बांट दिये गये हैं। जन समूह की उन्नति और सभ्यता का इतिहास पढ़ मालूम होता है कि हर एक कौम इस नये जोश की उन्नति और सभ्यता के प्रचार में सहायक है। इतना ही नहीं बल्कि हर एक कौम का यह फ़र्ज़ है कि आम लोगों को आगे बढ़ाने में जहां तक अक़िल चलै मदद दे। यह मदद चाहे जिस बात की हो; धर्म सम्बन्ध में हो, व्यवसाय या रोज़गार में हो, राजनीति या मुल्की मामिलों में हो, अथवा जन समूह की सभ्यता बढ़ाने के लिये हो, सब में एक सी सहायता देनी चाहिये। जो कौम अपने इस कर्तव्य पालन से हटती है वह दुनिया की और कौमों से नीची समझी जाती है। हर एक कौमों के इतिहास की ओर ध्यान दिया जाय तो जो कौम गिर गई है उसके गिरने का कारण यही मालूम देता है कि जब वह अपने जातीय कर्तव्य पालन कर चुकती है फिर उसमें बल पौरुष नहीं रहता कि मनुष्य जाति की सभ्यता और उन्नति में हिस्सा ले सके तब वह गिर जाती है। पुरानी कौमों में रोम और ग्रीस आदि इसी कर्तव्य पालन न करने के कारण गिर गईं यहां तक कि अब उनका नाम तक सब लोग नहीं जानते। जो कौम गिर गई वह तभी उठ सक्ती है जब वह फिर मनुष्य जाति की सभ्यता के बढ़ाने की (Slrugle) लड़ाई में हिस्सा लेने की कोशिस करे। यदि वह इस लड़ाई में शरीक नहीं है तो उसको संसार में कायम रहने का कोई हक नहीं है बरन धीरे २ समस्त जाति की जाति निर्मूल हो जाती है। अमेरिका के (Red Indians) आदि पुरानी जाति इसके उदाहरण हैं। हिन्दुस्तान में आर्य भी एक पुरानी गिरी कौमों में से हैं प्राचीन समय से जन समूह की सभ्यता बढ़ाने में यह आर्य्य जाति बड़ी सहायक हुई है जिस ने अपना कर्तव्य बहुत प्रशंसा पूर्वक किया है। संसार में कोई ऐसा

धर्म नहीं है जिस में हिन्दू जाति के सिद्धान्त न पाये जांय। रोम और ग्रीस देश की प्राचीन जातियों की भांति यदि आर्य जाति भी मिट गई होती तो मानो कर्तव्य परायण मनुष्य की मृत्यु के भांत इसकी दशा होती। किन्तु ऐसा न हुआ इस से बोध होता है कि यह पुरुष के पौरुषेय गुण (Humanity) के बढ़ाने में भाग ले। क्योंकि यदि यह उस में भाग न लेगी तो धीरे २ यह जाति निर्मूल हो जायगी पर इसका निर्मूल होना असंभव है। देखा जाता है कि आज इस गिरी दशा में भी इस में दिमागी ताकत मौजूद है जिस से यह संसार की सभ्य से सभ्य जाति का भी मुक़ाबिला कर सक्ती है। आज तक ऐसा नहीं देखा गया कि आर्य सन्तान प्रतिद्वन्द्वता में किसी से हेठे निकले हों। इस समय देश में नये जोश की यही पुकार है कि संसार की सभ्यता बढ़ाने में हमें भी भाग मिले। हम को अपने कौमी फ़र्ज़ (Duty) अदा करने दो। इसको यह मालूम हो गया है कि मैं अपना फ़र्ज़ न अदा करूंगा तो संसार की समस्त जाति के सामने नीचा देखना पड़ेगा ईश्वर के आगे कृतघ्नी होना होगा और अन्त को धीरे २ हमारी संपूर्ण जाति अस्त हो जायगी।

इस जोश का पूरा रूप यही है। इसको केवल राजनैतिक जोश कहना इसके पूरे स्वरूप को न पहिचानना है वरन नया राजनैतिक जोश इस का एक अंग है। यह अलबत्ता कह सक्ते हैं कि यही इसका मुख्य अंग है। संसार में उन्नति का मुख्य कारण अवकाश या मौक़ा है जिस जाति के एक २ व्यक्ति को पूरा अवसर अपनी प्रतिभा (Geneus) को पूरी तरह पर प्रगट (Develope) होने को नहीं मिलता वह जाति कभी उन्नति नहीं कर सक्ती। इस समय हमारा राजनैतिक शासन इस प्रकार हो रहा है कि हमारी संपूर्ण मानसिक और शारीरिक शक्तियां गिरती जाती हैं। इसी से यह नया जोश पहले राजनैतिक शासन को ठीक करने की ओर बहुत प्रबलता के साथ झुक रहा है। जगन्नियन्ता ईश्वर भी इसे न चाहता होगा कि एक जाति या कौम दूसरी कौम को अपना जातीय कर्तव्य पूरा करने से रोके। ऐसी कौम ईश्वर और संसार के आगे पाप

भागी होती है और परिणाम में बहुत बड़ी हानि सहती है ।

इस जन समूह की बुनियाद या मूलभित्ति National duty कौमीफ़र्ज़ है इसी बुनियाद पर यह नया जोश चलाया जाता है। पुराने जोश की लड़ाई National right कौमी हक्क पाने के लिए थी किन्तु वह "नेशनल राइट" की पुकार हमारी जाति को आगे न बढ़ा सकी इस लिये कि पहली सीढ़ी अपना फ़र्ज़ अदा करना है तब दूसरी सीढ़ी हक्क़ के दावा करने की है । नये जोश के अगुआ आज अपने देशवासियों को पुकार २ कह रहे है कि अपने जातीय कर्तव्य का पालन करो उसके लिए अवकाश पाने की फिकिर करो नहीं तो नष्ट हो जाओगे। तिलक महोदय जो इस नई जाग्रति के प्रधान हैं अपने गणेश उत्सव में कहा है "इस बुरी दशा से तो नष्ट हो जाना ही उत्तम है" जान पड़ता है उक्त महोदय ने इसीं जातीय कर्तव्यता के खयाल से ही ऐसा कहा है। भारत का उद्धार इस जातीय कर्तव्यता ही पर निर्भर है। जिन अगुआओं Leaders के चित्त में इसकी चोट लग गई है वे इस जातीय कर्तव्य को खूब फैला रहे हैं। किन्तु जब तक देश के सब लोग इस चोट को न मालूम करेंगे तब तक कार्य सिद्धि में विलम्ब है। इस नये जोश की उन्नति के तीन मार्ग हैं।सब के पहले अपने कर्तव्य पालन में जागृति है फिर अपने देशी भाइयों को समझाना कि यदि अपने कौमी फ़र्ज़ से चूकोगे तो तुम्हारी दशा कदापि ठीक नहीं होगी बरन तुम को नष्ट हो जाना होगा। देखा जाता है जहां तहां लोग इस पुकार पर ध्यान दे रहे हैं देश के जिस हिस्से में इसकी पुकार की गई वहां लोगों ने धोखा नहीं दिया। खेद है हमारे शासक इस पुकार के दवाने का यत्न कर रहे हैं। यह बात भी सिद्ध और निश्चित है कि कर्तव्य परायणता की पुकार को कोई रोक नहीं सकता किन्तु जो लोग इसे फैला रहे हों उन्हें अपने सिद्धान्त में दृढ़ होना अति आवश्यक है। उनको यह विश्वास रखना उचित है कि जिन में ठीक २ कार्य परायणता है उनकी सदैव विजय होती है। यह भी उन्हें निश्चय रखना चाहिये कि बिना जागृति पैदा किये कोई जाति आगे को कदम नहीं बढ़ा सकती उनकी दृढ़ता उन

कठिनाइयें से अधिक रहना चाहिये जिन कठिनाइयें को उन्हें पार करना है। इसी दृढ़ता के रहने से हमारे बहुतेरे भाई जागृति से डर रहे हैं और खुल के नहीं काम किया चाहते। वे इस कर्तव्य पालन की लड़ाई छोड़ अपना हक़ पाने वाली सहज लड़ाई में शामिल हैं। इस जागृति का दूसरा नाम नया जोश है हमको अपने काम में सफलता प्राप्त करने का यही उत्तम मार्ग है। दूसरा रास्ता सफलता का अपने ख़यालों को काम में लाने का है। ख़याल को कार्य में परिणत करने वाली अवस्था को Arising उत्थान कहते हैं। परन्तु इस अवस्था में भी एक बात की आवश्यकता है वह Self s crifice आत्मत्याग है क्योंकि बिना आत्मत्याग के जो कठिनाइयां हमारे मार्ग में आपड़ेंगी वह दूर न होंगी। देश हितैषियें के अग्रणी इटली देश के मेज़नी का वाक्य है। विघ्न या बुराइयें का मुक़ाबिला ही करने से सफलता होती है न कि जान बचा कर छिप रहने से" हम लोगों को इस के लिए धन और जीवन दोनों को विसर्जन करना पड़ेगा। जिन्होंने इन दोनों के त्याग का दृढ़ संकल्प कर लिया है वे ही Martyre देश हित की लड़ाई में शहीद गिने जाते हैं। जब संपूर्ण जाति की जाति इस तरह का शहीद होने को कमर कस ले तब उद्धार हो सकता है और इस भांत दृढ़ संकल्प वाली क़ौम को ऊपरा उठनेसे कोई रोक भी नहीं सकता। जातीय कर्तव्य में विश्वास Faith काम Action और आत्मत्याग Sacrifice इन्हीं तीनों की आवश्यकता है। नया जोश इन्हीं तीनों के बल से सफलता पाने का यत्न कर रहा है यही भाव Awake arise and stop not till the goal is reached "जागो उठो और जब तक कृत कार्य न हो यत्न करते रहो" में भरा है।

मदन मोहन शुक्ल।

मित्र का मन्तव्य।

प्रिय महाशय!

अब इस बात की पुष्टि में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रह गई है

कि "हिन्दी भाषा और देव नागरी अक्षर" को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा और राजलिपि बनाना चाहिए। यह बात अब प्रायः सर्वमान्य हो गई है। तभी तो "देव नागर" जैसे पत्रों का शुभ जन्म हुआ और खूब प्रचार हो रहा है। हिन्दी भाषा के अच्छे मासिक पत्रों का अभाव अब बहुत अनुभव होने लगा है।

इस बात को भी अब प्रायः सब कोई मानने लगे हैं कि अंगरेज़ी वा अन्य भाषा मात्र का बोध होना ही विद्वत्ता की निशानी है। ज्ञान विज्ञान और पदार्थ वेत्ता होना ही चाहे किसी भाषा के द्वारा क्यों न हो विद्वानता है। तब यदि एम० ए० आदि के बराबर की तालीम हमें हिन्दी भाषा में मिल सके और हमारी हिन्दी भाषा इतनी संपन्न बना ली जावे कि उन सब ज्ञान, विज्ञान आदि की बातों को अपने शब्दों में अच्छी तरह हमको समझा सके तो बिना अंगरेज़ी आदि विदेशी भाषामें माथा पच्ची कियेही हम "मास्टर अफ आर्टस और सायंस वेत्ता युवक की लियाकत को क्या न प्राप्त कर सकें?

इस के वास्ते हम अंगरेज़ी आदि विदेशी भाषाओं के बिद्वानों से हाथ जोड़ बिनती करते हैं कि हम मूक प्रायः लोगों पर दया करके अपनी पढ़ी पढ़ाई पुस्तकों के अनुवाद हमें हिन्दी में कर देवें। किसी कवि ने कहा है। दानोपभोग हीनेन धनेन धनिनो यदि। इत्यादि दान और उपभोग से रहित यदि आप धनी हैं तो हम निर्धन लोग भी आप से कुछ कम नहीं हैं क्योंकि न आप ही धन का दान और भोग कर सकते हैं और न हमारे ही लिलार में वह बदा है! आप अपनी उपार्जित विद्या का यदि दान न करें तो वह निःसंदेह निरर्थक है क्योंकि यही एक बात आप के हाथ में है उपभोग तो उसका आप के माथे में बिधिनानें हिन्दुस्तान में जन्म देने के कारण लिखा ही नहीं विद्वत्ता जन्य सभी सुख भोग के द्वार आप के लिये बिलकुल बन्द हैं।

तब यदि आप विद्वान् हो कर अपनी उपार्जित विद्या का दान भी हम लोगों के लिये हमारी बोली में लिख कर न करें तो हम क्या कहें?

आप यदि अंगरेज़ी भाषा में अच्छे २ मेगज़ीन और देश विदेशों की चर्चायें सभ्यता, जातीयता, विज्ञान, नीति आदि की चर्चायें और प्रबन्ध नित्त नवीन पढ़ते रहते हैं और हम हिन्दी बोलने समझने वाले अपने छोटे मोटे भाई बंधुओं को उस से वंचित किये हैं तो आप एक प्रकार भगवान की व्यवस्था में हमारे लोगों के ऋणी रहते हैं। आप इस बात को मानते भी हैं तभी तो हम देखते हैं कि आप के मध्य में हिन्दी भाषा को उन्नत करने की आजकल अधिक रुचि प्रवृत्त हुई है। हिन्दी भाषा में अच्छे मेगज़ीन की सचमुच बड़ी भारी ज़रूरत है। वैसे मासिक मेगज़ीनों की जैसे कि आज कल माडर्न रिव्यू, हिन्दुस्थान रिव्यू, इन्डियन रिव्यू आदि निकलते हैं। हम बड़े बिनीति भाव से अपने पूज्य पंडितवर बालकृष्ण भट्ट जी से निवेदन करते हैं कि यदि वे कृपा कर अपने 'हिन्दी प्रदीप' पत्र को इन्हीं रिव्यूज़ की भांति का एक सम्पन्न पत्र बनाने की चेष्टा करें तो यह अभाव बहुत कुछ दूर हो सकता है। हमे यह भी आशा है कि हमारे अंगरेज़ी के विद्वान् महाशय गण कम से कम इन रिव्यूज़ में से अनुवाद देने की कृपा तो अवश्य में वही कर सकेंगे और इसी प्रकार के इसी लाइन पर किये हुए हिन्दी लेखों में अपनी निज ओरिजिनालिटी भी ऐसी मनोहर हो सकेगी कि जो हिन्दी भाषा को वास्तविक अलंकृत करने में बड़ा भारी भाग लेगी।

हिन्दी प्रदीप यदि कम से कम अपने आकार में दूना अर्थात् पचास पृष्ठों का हो जावे और लेख आदि प्रबंध रिव्यूज़ केसे कर दिये जावें तो हमारा अभाव बहुत कुछ मिट सकता है।

क्या हमारे सांप्रतिक सम्पादक महाशय गण इस विषय पर कुछ सम्मति प्रदान करेंगे? और श्रीमान् भट्ट जी भी कृपया पहिले अपनी अनुमति प्रकाशित करके हमको वाधित करेंगे॥?

निवेदक—गदाधर सिंह,

प्रयाग।

—

नयी सृष्टि।

। नयादेह ।

आशाएं सब नाश हुईं और नूतन भय में भरमाया।
अन्तकाल पाया आयुष का मृत्यु रूप सन्मुख आया॥
गत अरु वर्तमान देख कर आंखें भर भर आती हैं।
अन्त-यातना कौतुक करतीं, और शरीर कँपाती हैं॥
"अनुतापित तनु शुद्ध हुआ और हुए बिलीन पाप सब सारे।
"परिचित हुआ ईश का तू अब डरता है क्यों भय-मारे।
"मन तेरा अब शुद्धरूप है मर्त्यजनों को मत दे रे।
"अर्पण कर उसके चरणों में वही तुझे तारेगा रे!"
हँसा गुप्तध्वनि यह सुनकर मैं, हँसकर रोया फेर हँसा।
नया देह पाकर मैं फिर भी नयी सृष्टि में आन धँसा॥

लक्ष्मीधर वाजपेयी।

आर्यसमाज की भीरुता।

सद्धर्म प्रचारक में यह पढ़ हमें खेद हुआ कि लाला लाजपतराय को राय दी गई है कि तुम जो वैदिकधर्म में आया चाहो तो राजनैतिक आन्दोलन (Political agitation) की निस्सरता में न पड़ो। हा धिक् हम जो आर्यसमाज पर श्रद्धा रखते थे सो इसी लिये कि इसकी बुनियाद राजनैतिक है। इसके प्रवर्तक ने सर्वथा राजनैतिक बुनियाद पर इसे स्थापित किया था नहीं तो यह हिन्दू धर्म को जड़ पेड़ से उखाड़ रही है किस प्रयोजन की है। इतना ही इसमें भलाई है कि इसके मेम्बरों को धर्म के साथ राजनैतिक जोश भी पैदा होता है। जब इसके मुखिया लोग राजकीय विषयों में हस्तक्षेप से इतना डरते हैं तब हिन्दू धर्म के और २ संप्रदाय प्रवर्तकों से इसमें क्या अन्तर रहा? हानि अलबत्ता है कि जो लोग धर्म की एक बंधी हुई शृंखला पर चल रहे हैं उनके मन में कुतर्क पैदा हो जाता है। वैदिक धर्म सार्वभौमिक भी तभी होगा जब इसमें पालिटिक्स का संपर्क रहेगा नहीं तो आर्यसमाज का किया कुछ

न होगा। हमको तो तभी से अश्रद्धा और क्रोध है जब से आर्यसमाज उक्त लाला जी की गिरफ़ारी के समय दुम दबाय अलग हो गई। हमे विश्वास नहीं है कि लाला जी समाज की इस सलाह को स्वीकार करलेंगे यदि मंजूर कर किया तो वे भी लोगों की नज़र से गिर जांयगे। किन्तु पंजाब ऐसे प्रान्त में जाकर लाला जी की बुद्धि जो कर्तव्य परायणता पर अटल रही तो उनको बहुत ही बहुत धन्यबाद है।

एक मित्र की कविता।

आज है सुदिन सुमंगल को घरघर,
सुनत आनन्द धुन बजत बधाई है।
एकसनएकमिल होत हैं प्रसन्न मन,
अरिहू ने मिलन को भुजा बढ़ाई है॥
आजकी घड़ी बड़ी है सुमंगल मूल,
मानो दिवाली दस दिनमें लौट आई है।
एहोमित्र! चित्तसे ईश्वर को धन्यकहो,
भारत की लाजपत खोई फेरि आई है॥ १॥
कृपण ज्यों राखत हैं प्राण से पियारो धन,
पतिव्रता नारी ज्यों सेवत निजपति को।
अहि जिमि प्राण जाय तौहूं नहीं त्यागै मणि,
रातको बटोही नहीं छाड़त सुपथ को॥
कामी जिमि नारिन की चिन्ता में मगन रहत,
ज्ञानी ज्यों लगाएरहत ज्ञान मे सुमत को।
मित्र 'कृष्ण' ताही भांति हृदय से जबलौं जियो,
प्रानहूते प्यारे कर राखो लाजपत को॥ २॥
एरीमात आजघर भोर ही से होत कहा,
काहे को चौक पूर वेदी खंचाई है।
काहे की पूजा और कौनसो तेवहार आज,
काहे की खुशी चित तेरे मे छाई है॥
कौन घर आवेगो किनकी तू जोवे बाट,
काके हित द्वारन पै बाजत बधाई है।

एहो तात! आज भारत के जागे भाग,
लाजपत गई फेरि "भारत"की आई है ॥ ३ ॥
आज अजीत फिरे निज देस,
दिनेस की भांति भई उंजियारी ।
बंचक जोति मलीन हुई,
खद्योत गृहान की राह संभारी ॥
नाम अजीत लियो जग जीत,
सुभारत की पत फेरि उबारी ।
भारत से बिलुरै न कभू,
जबलौ चिर भारत गंग मैं बारी ॥ ४ ॥

गुन आगरी नागरी ।

गुण की पूंजी ऐसी प्रबल होती है कि मनो राख के नीचे आग की चिनगारी सी छिपाये नहीं छिपती । उर्दू भूतिन ने नागरी की मिठास और लालित्य आदि सोहावने मनभावने गुनो के दबाने को कितना ही सिर धुनां और उर्दू के भक्तों ने भी इसे सब ओर से निर्मूल करदेने में किसी ओर से कोर कसर न छोड़ रक्खा ; नागरी को राजद्वार में न पैठने दिया; घरैलू लिखा पढ़ी बोलचाल खत किताबत में इसे न ठहरने दिया ; मित्रगोष्ठी और सभ्य समाज में तो यह सदा निकासी ही रही ; बरन ऐसा निरादर इसका किया गया कि केवल ग्रामीण और दे कहानियों में टहरने का अवसर इसे मिला । पर लुभाने वाले लोकोत्तर गुणों ने इसका पीछा न छोड़ा । सूर तुलसी बिहारी भूखन गिरधर आदि कवियों की मुहर छाप ऐसी भारी थी कि इसका गौरव बढ़ता ही गया ।

ज़ौक ज़फर सौदा आतश नासिख आदि शायर हांथ मल मल पछताते रहे माधुर्यलालित्यादि इसके उत्तम गुण उर्दू में न आये और उर्दू ललचाती ही रहगई कि मैं बड़े २ नौवाबों के घर में पली उनके महलों की नाज़नीन पर इस गवारिन के मुक़ाबिले हीनही रही और इसके समान चित्तको खींचने वाली क्यों न हुई । अस्तु नाम के हिन्दू